CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

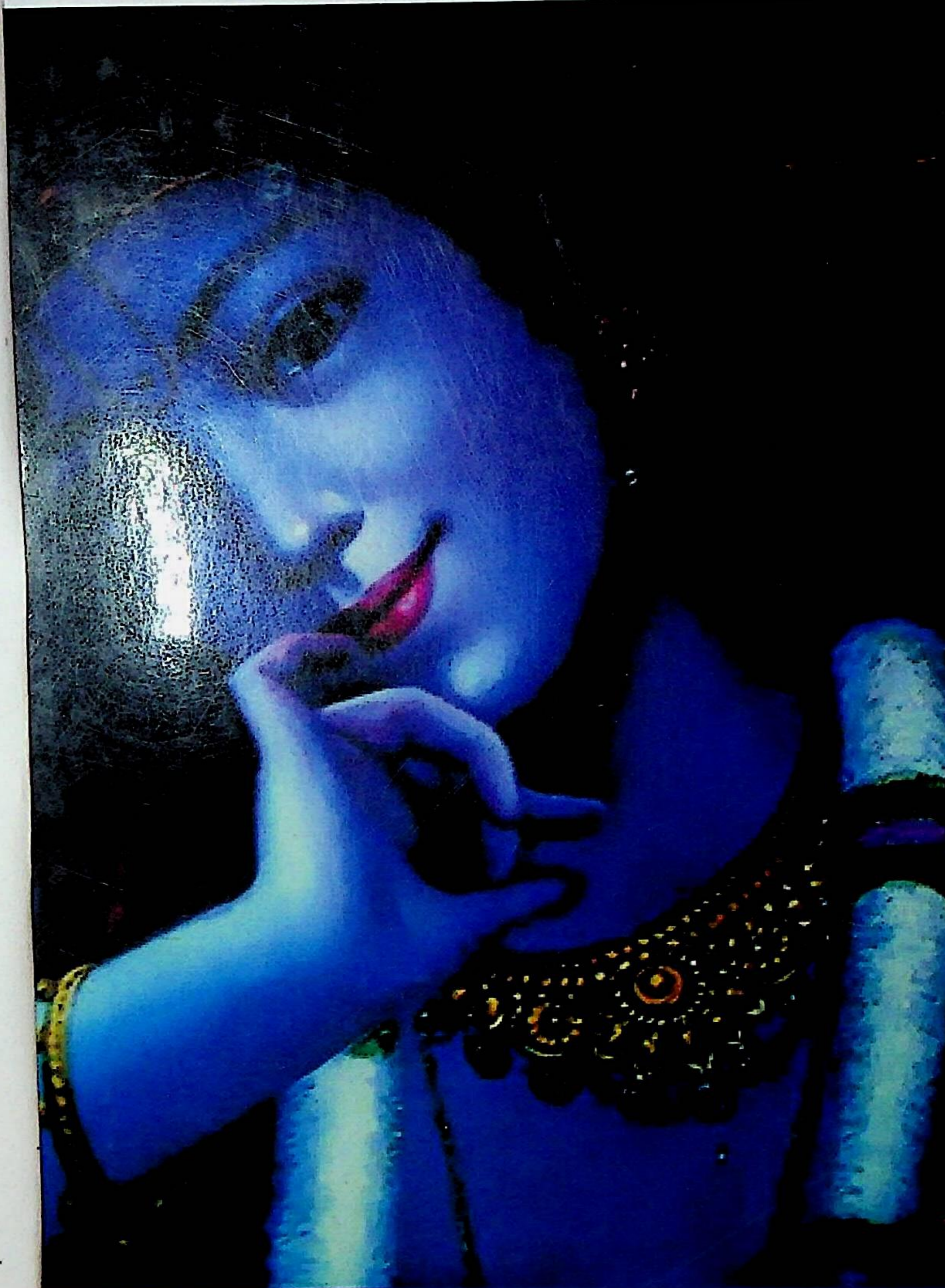

रुश्री वेदप्रकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।।

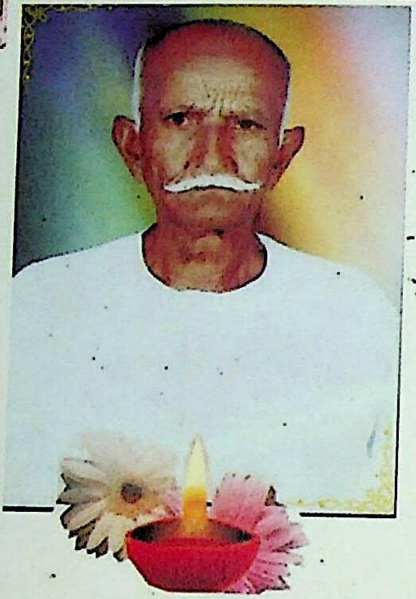

।। श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।।

डॉ. जे.आर. मिश्र जी ने अपने **परमपूज्य पिताजी स्व. पंडित हरिकिशोर मिश्र जी** की पावन स्मृति में इस महान ग्रन्थ का मुद्रण व्यय श्रद्धापूर्वक वहन किया है।

डॉ. जे.आर. मिश्र, प्रिंसिपल,
सेण्ट जेवियर्स स्कूल, बिल्थरा रोड,
बलिया, उ.प्र. – 221715
मो0 : 9415829101

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

गुरुश्री वेदप्रकाश

रास संकीर्तन प्रकाशन

रास संकीर्तन प्रकाशन

www.shripremvrindavan.com

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक : **रास संकीर्तन प्रकाशन**
श्री मुरली मनोहर रास मन्दिर
प्रेम वृन्दावन, सलेमपुर, देवरिया, उ.प्र., भारत
दूरभाष : 0-8182863116, 9455044888, 7398522123
ई-मेल : rassankirtan@gmail.com

संस्करण : 2015

कम्पोजिंग : राजमन यादव, गोरखपुर
मोबाइल नं. : 09935757724
ई-मेल : rajmanyadav01@gmail.com

आवरण : दीपक पाण्डेय, गोरखपुर

मुद्रक : यश प्रिन्टोग्राफिक्स
C-37, सेक्टर – 58, नोएडा, उ.प्र.
फोन : 0120-4248465

© प्रकाशकाधीन

Prabhu Teri Aankhon Me

by : Guru Shri Vedprakash

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी भी अंश को इलेक्ट्रानिक, मेकेनिक, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व लेखक की अनुमति अनिवार्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेदन

स ईक्षत। (ऐतरेयोपनिषद 1-1-1, 1-3-11)
तदैक्षत। (छान्दोग्योपनिषद 6-2-3)

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः (मुण्डकोपनिषद 1-1-9)
उस सर्वज्ञ सर्वविद्य ज्ञानमय परमेश्वर ने देखा।

उसी परम की दृष्टि उसी परम की आँख के दृष्टिपथ में यह महान काव्य ग्रन्थ रचा गया। एक अनुपम, अद्‌भुत भावदशा–लोकोत्तर अनुभूति का विलक्षणतम चैतन्य बोध इस काव्य ग्रन्थ में अवतरित है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखायाः – कहते हैं वेद। एक डाल पर दो पंछी संग संग रहते हैं – गाते हैं गुरुश्री एक गीत में। वह परम और यह–जीव परम. व्योम और उसके परे का निवासी वह परम और इस मृण्मय जगत का तुच्छ जीव दोनों अनादि से लेकर अनन्त काल तक सदा साथ हैं।

कैसा अद्‌भुत है यह सब। उस परमेश्वर के सदा पास हैं हम, मगर कितना दूर। अब यह सामर्थ्य तो गुरुश्री जैसे महापुरुष की ही है कि वे उस परम का साक्षात्कार ही नहीं करते, परम दिव्य चेतना की भाव दशा में उस नील सुन्दर देव को उसकी आँखों की राह अपनी आँखों में उसके अवतरण की परम महिमामयी भगवत् लीला में पार्षद होने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। उन दो जोड़ी आँखों के बीच कौन सा अलौकिक व्यापार घटित होता है, उसी का निदर्शन है यह दिव्य काव्य ग्रन्थ।

एक अलौकिक महिमामयी रचना – मेरे जैसे अत्यल्पज्ञ इसका मूल्यांकन कहाँ कर सकेंगे। गुरुश्री के चरणों में बैठकर ऐसे ग्रन्थों के अवलोकन और इनकी प्रस्तुति का सौभाग्य हमें मिल रहा है। हम तो इसी को जीवन की कृतार्थता समझते हैं। उनसे सुनकर उन्हीं को दोहराने वाला तोता भी बन सकें हम तो हमारी परमोपलब्धि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तक 'वृन्दावन के नाथ साँवरे', 'श्री प्रेम वृन्दावन', 'जय श्रीराधे' 'भागवत गीत', 'प्रीति गीत', 'ब्रज रस', 'रस निर्झर', 'मधुबन महके' और 'यमुना की नाव' जैसे बहुत से काव्य ग्रन्थ आ चुके हैं। 'सहस्राब्दि विश्व उद्धार रास संकीर्त्तन महायज्ञ' जो एक हजार वर्षों के संकल्प के साथ 31 दिसम्बर, 1999 से प्रारम्भ हुआ, उसका अभीष्ट ही है सारे जगत को भगवत् प्रीति रंस में निमज्जित कर देना। इस निमज्जन–स्नान में जगत का प्रेममय सर्वसुखमय पुनर्जन्म छिपा है। उस परम का अवतरण वास्तव में प्रेमावतरण है, लोकव्यापी प्रेमसिद्धि ही विश्व के उद्धार का मार्ग प्रशस्त करेगी – ऐसी निष्ठा है गुरुश्री की।

श्रीराधारंग और मुद्रक श्री आलोक जी सतत् तत्पर रहते हैं। उनके एकनिष्ठ और अनथक श्रम ने ही इस महान काव्य ग्रन्थ के प्रकाशन को सम्भव बनाया है। प्रभु की आँखें उनपर भी पड़ेंगी ही। गुरुश्री आँखों में हैं प्रभु के और वे गुरुश्री के सदा समीप।

ऊर्जामूर्त्ति शम्भू दयाल
प्रबन्ध प्रमुख

सहस्राब्दि विश्व उद्धार
रास संकीर्तन महायज्ञ
श्रीं मुरली मनोहर रास मन्दिर
प्रेम वृन्दावन, सलेमपुर, देवरिया
उत्तर प्रदेश, भारत
email : rassankirtan@gmail.com
website : shripremvrindavan.com

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

अनुक्रमणिका

क्रम	पृष्ठ
1. रात का घोड़ा जहाँ आकर रुका	1-2
2. समझने लगा हूँ	3-5
3. कहाँ हो तुम	6-9
4. आँखों के सामने	10-12
5. कितने दूर	13-16
6. पूरते हो तुम मुझे	17-19
7. क्या देखूँ तेरी आँखों को	20-22
8. क्या देखूँ मैं संसार	23-26
9. कैसा कसैला मटियाला बादल	27-27
10. कहाँ छुपने लगे तुम	28-29
11. कैसे सहेजती हैं ये	30-31
12. पानी पर लहर लहर तैरती	32-33
13. पल पल	34-35
14. आँखों की बात	36-37
15. कौन सा रंग है तुम्हारा	38-39
16. मेरे करीब आ बैठीं	40-43
17. कैसे कैसे रंग	44-44

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

18. रोशनी की तरह 45-47

19. थमे थमे से 48-49

20. आज हवा टेढ़ी है 50-51

21. तुम्हारी आँखों की छांह में बैठकर 52-54

22. कौन खेल सके 55-56

23. तुम्हारी ये पानीदार आँखें 57-59

24. बोलती हैं तुम्हारी आँखें 60-61

25. तुम जानो 62-63

26. क्या बोलती हैं ये 64-66

27. तुम उगोगे 67-68

28. आज स्वच्छ है सब 69-70

29. जैसे दरवाजा बन्द हो गया हो 71-71

30. सब मौन 72-72

31. कैसे तो तुम 73-75

32. द्वार हैं तुम्हारी आँखें 76-77

33. कहते हैं सयाने 78-80

34. ये तुम्हारी आँखें 81-85

35. तुमने शायद पूरी कर ली महायात्रा 86-89

36. यह लीला क्या है 90-91

37. जब घूमता है दृष्टि पथ 92-96

38. सारी लीला तो आँखों की है 97-98

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

39. आँखों की यह दुर्बलता ही है संसार 99-100
40. जमीन पहले भी मुझे खींचती थी 101-102
41. लेलो सब मेरा 103-105
42. आये मुझमें 106-109
43. ओ लुटेरे! 110-113
44. झोंके की तरह अन्दर आये 114-117
45. घोर लो मुझे 118-118
46. नील नील 119-119
47. प्रियतम! 120-121
48. कैसे 122-123
49. भर्त्ता! 124-125
50. आज घास जल से भरने दो 126-127
51. जैसे कुछ हुआ ही न हो 128-129
52. ऐसे खोये खोये से तुम 130-131
53. विश्वाधार 132-132
54. समग्र में व्याप्त मौन आज 133-134
55. तुमसे हटाकर 135-136
56. चाहो तो उठा लो 137-137
57. मेरी आँखों में 138-138
58. सारा हलन चलन सतह पर 139-139
59. और अचानक रुक गया 140-141

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

60. मेरी आँखों की राह होकर 142-143
61. कौन सी लीला है प्रभु 144-146
62. तुम ऐसे उतरते 147-150
63. एक बार फिर जन्मे तुम ओ अज! 151-152
64. ये कहाँ ले आये तुम 153-155
65. अहा तुम 156-158
66. क्या छुपा रहे हो 159-159
67. निगल लिया मुझे 160-160
68. उगे तुम फिर 161-162
69. ऊर्ध्वमूलम् 163-163
70. कब तक ठहरोगे 164-164
71. खूब छिपे हो उजाले के पीछे 165-166
72. श्रम से प्रयास से 167-168
73. ओ यात्री निशा के! 169-169
74. तो कहो न 170-172
75. तुम और तुम्हारी आँखें 173-174
76. रिक्त कर दिया मुझे 175-175
77. खुल ही गयी बात आखिर 176-178
78. अब मुझमें रहो बस हाँ 179-181
79. बीज हूँ मैं 182-184
80. जरा सी छूती है पृथ्वी 185-185

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८१. हमने रचा क्या यह संसार	१८६-१८६
८२. यह होना	१८७-१८७
८३. शरीर में सबसे कम प्राकृत	१८८-१९०
८४. कैसा यह खेल सत्त्व की परम ऊर्जा का	१९१-१९३
८५. रास तो अतिथि है रात का	१९४-१९५
८६. संबोधि का झरोखा है आँख	१९६-१९७
८७. जहाँ है आँख वहीं है सब	१९८-२०१
८८. तुम हो मूल	२०२-२०३
८९. प्रभात का स्वर्णिम ज्योतिष्मान वायुमण्डल	२०४-२०५
९०. आखिर तुम आये	२०६-२०९
९१. सदा मिलित	२१०-२११
९२. कितनी घाटियाँ	२१२-२१३
९३. क्या करेगा यह महाप्रवाह	२१४-२१४
९४. मुक्ति नहीं है	२१५-२१६
९५. ऊर्जा का महाज्वर	२१७-२१८
९६. नाम तुझे प्रणाम	२१९-२२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Radha - Krishna

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात का घोड़ा जहाँ जाकर रुका

रात का घोड़ा जहाँ जाकर रुका
वहाँ होनी थी भोर की झील
यह न सोचना कि
वह घोड़ा स्याह था
स्याह कहने से कहाँ जाहिर होता है उसका रंग
कैसे कहें उसका रंग
कि कहाँ एक रंग था उसका
कहीं मटमैला था–कहीं भूरा–कहीं धुँआ–सा
कभी हल्का–कभी गाढ़ा–कभी छितराया
घोड़ा जहाँ बैठा था
शुरू में
कहाँ थी अब वहाँ उसकी उपस्थिति
बेखयाल, बेध्यान और उड़ी–उड़ी
जहाँ चिहुँका था घोड़ा
कैसे बचती परिन्दों की वह फड़फड़ाहट
अचानक
कभी कभार ही सही
दायें बायें घूमी थी उसकी आंखें
हवाओं में धंसी उनकी किर्ची अब कैसे रहनी थी
किसने पोती थी कालिख
उसके माथे पर टंगी रंगीन फुंदकियों पर
किरनें तो कबकी जा चुकी थीं
बाहर तो नहीं था कोई भी
सन्नाटा भी तो दुबक चुका था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने घोंसले में
कबकी ऊँघ चुकी थी–तन्हाई
कोई न बचा था
कुछ भी न बचा था
तो फिर कैसे बचना था
कुछ नहीं को भी
मगर एहसास तो था कुछ कुछ
कुछ कुछ का
यह एहसास ही तो था
घोड़े की पीठपर जीन बन कसा
कसकता था
पेट के नीचे गहरे अंदर की तरफ
अदीखा खुनियाया रगड़ता था
मर्म में कील धंसा चुभता था
रह रह उचकता
अंधेरे घने गोफों मे फँसा
हिनहिना भी कहां पाता था
फांस थी जो अन्दर थी
दरकन थी जो गहरे थी
अनदिखे खिंचाव पर
कभी कभी गोल गोल घूमते
जैसे लड़खड़ा जाता था वह
रात का घोड़ा जहाँ जाकर रुका
वहाँ होनी थी भोर की झील

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझने लगा हूँ

समझने लगा हूँ
कुछ
क्यों पीछा करती हैं
तुम्हारी आँखें
ये उघरी कानों तक फैली
दीर्घ नौका सी आँखें
समझता था
मींजना चाहती हैं ये
माड़ना चाहती हैं ये
चीभना चाहती हैं ये
मुझे
झिंझोड़ देना चाहती हैं ये
मरोड़ देना चाहती हैं ये
भंभोड़ देना चाहती हैं ये
मुझे
मोड़ देना चाहती हैं ये
फोड़ देना चाहती हैं ये
तोड़ देना चाहती हैं ये
मुझे
मगर अब समझने लगा हूँ
कुछ
कुछ कुछ
बैठ इनके अंक में
करती हैं ये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलती हैं ये
हाथ हैं थामने के लिये
बॉह हैं घेरने के लिये
छूती हैं
सूंघती हैं
सुनती हैं
सब करती हैं ये
आंख कान नाक ही नहीं
हथियार हैं ये
औंजार हैं ये
विस्तार हैं ये
तुम्हारी
खींचती हैं ये
खींचती जाती हैं
तानती हैं ये
तानती जाती हैं
खोलती हैं ये
खोलती जाती हैं
मुझे
हिलाती हैं
घुलाती हैं
गलाती हैं
रगड़ती हैं घिसती हैं पीसती हैं
पसारती हैं फैलाती हैं बहाती हैं
जीती हैं
पीती हैं
मानती हैं
छानती हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेजती हैं
सहेजती हैं
दरारती हैं
अरारती हैं
खींचकर ले लेती हैं
भींचकर दे देती हैं
लेती हैं देने के लिये
देती है देने के लिये
बस इन्हें
देना ही देना है
देते ही रहना है
देते ही जाना है
देना ही सुख इनका
देना ही स्वार्थ इनका
देना ही स्वत्व है इनका
देना –महादान तक
देना–परम दान तक
देना–आत्मदान तक
देना चाहते हो तुम मुझे
अपना सर्व
अपना सर्वस्व
अपना स्व
अपना आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ हो तुम

कहाँ हो तुम
दूर दिखते हो
तुम या तुम्हारी आँखें
खामोश दो बड़ी आँखें
मुझे निहारती
जाने क्या कहती
या निरखती
मुझे पुकार क्यों नहीं लेते
बुला क्यों नहीं लेते
शायद मैं लायक नहीं तुम्हारे
हां लायक तो नहीं ही तुम्हारे
फिर तुम ऐसे देखते क्यों हो
मुझे बना क्यों नहीं लेते
ढाल क्यों नहीं लेते
अपने लिये
दूर जीवन दीप तुम्हारी आँखें
ये ही तो जिलाये हैं मुझे
जगाये हैं मुझे
जलाये हैं मुझे
थामे हैं मुझे ये आँखें
तुम नहीं दिखते
बस दिखती हैं ये आँखें
बहुत दूर नहीं
बहुत साफ नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिखती हैं मुझे
मुझे देखती दो आँखें
मुझे अगोरती
समस्त अन्तरिक्षों के एकान्त में
मैं और ये दो आँखें
तुम्हारी आँखें
क्या है यह देखना
तुम्हारा और मेरा
तुम देखते हो मुझे
और मैं देखता हूँ
मुझे देखते तुझे –
कौन है पहले
देखना–मेरा या तुम्हारा
तुम्हें जब देखा
तुम देख रहे थे
– मुझे
तुम्हें देखना तो मैंने बहुत बाद
जन्मों बाद सीखा
मगर जब देखा तुम्हें
मुझे देखते देखा
तुम्हें देखूँ
समझ पड़ती है यह बात
मगर तुम क्या देखते हो
क्या है मुझमें
तुम्हें देखते मैं
गल जाता हूँ – पिघल जाता हूँ
एकदम खाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने आप से
मगर तुम्हारी इन दो आँखों से
आँखों से मिल
मैं भर जाता हूँ
तुमसे पूरम्पूर
भर जाता है यह
समस्त अन्तरिक्षों का एकान्त
तुमसे
मेरे खोने के बाद
तेरे होने के बाद
तेरे होने से
मेरे खोने से
खोकर भी न खोने से –
खो तो मैं गया
खोकर ही देखा
तेरे सर्वरूप
सर्वभरित एकान्त को –
मगर मैं खोया कहाँ
खोया तो देखा किसने
तुम्हें भरते
मुझमें–सबमें
जो भरा वह थे तुम
जिसमें भरा वह था मैं
और जिसने देखा
यह सब
वह कौन था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम या मैं
मैं ही तो था
मैं भी तो था
तुम्हारे साथ
तुम्हारे सामने
तुम बनकर
तुम्हें देखता
मुझे देखता
तुम ढरे इन्हीं दो आँखों की राह
अपनी आँखों से
मेरी आँखों में
उतर गये – भर गये मुझमें
देख रहे थे
मुझे–मेरी राह
इसी उतरन के लिये – इसी भरन के लिये
भरकर जाना
व्याकुल था मैं इसी के लिये
जन्मों से
मगर आकुल तो थीं तुम्हारी आँखें
मेरे लिये
शायद मेरी तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँखों के सामने

आँखों के सामने
वे ही एक जोड़ी आँखें
जोहतीं सी–हेरतीं सी
मौन आँखें
कैसी आँखें
जाने कैसी आँखें
धरती की किसी किताब में भी नहीं हैं
इन आँखों की भाषा की पहचान
सयानों के सयानेपन की चोटी से भी ऊँचे
ऊपर से देखती
ज्ञान की कंचनजंघाओं की श्रृंखलाओं के ऊपर से
खामोश ताकती
वाइजों के शोर से अंटी घाटियों के आर पार
आकाश की तरह व्यापती
झांकती
अरबों–खरबों–असंख्य–अनन्त की भीड़ वाली सृष्टि के ऊपर उठती
सर्व को अतिलघु कर अस्तित्वहीन सी करती
सर्वातिशायी एकान्त सिरजती
जाने कैसी आंखें
असंख्य सूर्यों के अरुण मण्डलों के नृत्यावर्त्त से सहज लोकती
मासूम सी आँखें
कौन पहचाने कि ये आँखें
उस बांके की हैं
इनकी सर्वान्त निर्दोष निरीहता में
कौन ढूढ़ पायेगा किसी बांकपन का लेश भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षार करती सारी दुनियाओं की दुनियादारी क्या
सारी दुनियाओं को ही
अपने कटाक्ष मात्र से ही
इन आँखों को
उस छलिया का अभिज्ञान कौन दे
जिसका छल बींध देता है मन एक लक्ष कोटि गोपाङ्गनाओं का
कोटिकन्दर्पदर्पदलन तुम्हारा त्रिभुवनमोहन सौन्दर्य
कैसे तिरोहित सा हुआ छुपा है इन आंखों के पीछे
इनकी सादगी के पीछे
ऐसे जैसे तुम बन बैठे हो एक जोड़ी आंखें ही
कैसे छुप सके हो तुम इन आंखों के सरोवर में
जो डुबो सकी हैं सारी सृष्टि को अपने अतल में
सिरजकर यह अनन्तव्यापी एकान्त
कैसे समेट सकी हैं तुम्हारे उस तेज को
सहस्रों सूर्यों और चन्द्रमाओं का प्रकाश भी जहाँ हो जाता है
निस्तेज
तुम्हारा यह ऐश्वर्य
तुम्हारी माया तो नहीं है मायाधीश!
इन सीमाओं में कैसे तुम समाये हो ओ असीम!
कैसे निपट प्राकृत से झलकते हो ओ परम अप्राकृत!
कैसी लीला है तेरी ओ लीलाधर!
इन दो आँखों में उतर
कौन सी लीला की यवनिका उठानी है तुम्हें
जैसे जन्मों–जन्मों से निहार रहे हो मुझे
उस एकान्त शिला पर चुप बैठे
दाहिने मुड़के
जैसे उठा लेने को पंख सा–उड़ा लेने को भाप सा
ले लेने को मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुरा लेने को मुझे
मगर इन मासूम आँखों में
चोर कहाँ है!
वह स्पृहा–वह काम कहाँ है!
इन परम निस्पृह, निष्काम कटाक्षों में
क्या पाना है
मुझ अकिंचन को चुराकर
क्या करना है
एक मुट्टी धूल लेकर
अरे ओ परम चिद्घन
हाँ तुम चिन्मय तो करोगे
इस मृण्मय को
लेने से पहले
बटोरने से पहले
सहेजने से पहले
मगर तुम इतना सब क्यों करोगे
ओ दयामय!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कितने दूर

कितने दूर
और कितने पास
इस पल दिखते हो
बस वो सामने मुझे निहारते
और अगले पल
जैसे सृष्टि के क्षितिज के पार
मगर हर पल वही गमक, वही आस, वही प्यास
वही प्रतीक्षा तेरी आँखों की
जैसे सिमट आया हो सारा वजूद
इन आँखों में
कभी कभी तो लगे जैसे एकदम पास ही हो
मेरी सांस की जद में
चुप निरखते उदास
मुझे निरखते जैसे कल्पों के पार से
शायद अनादि से
बस निरखते
मौन
निःस्पन्द क्रियाहीन
ना–क्रियाहीन नहीं
यह निहारना–निरखना ही क्रिया है तुम्हारी
परम क्रिया
सः ऐक्षत्
उपनिषद ने कहा
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे –
वीक्ष्य–कहा श्रीरासपंचाध्यायी ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागवत ने
निरख रहो हो तुम अनादि से
और सिरज रहे हो तुम
मुझे
और सिरजोगे तुम मुझे
अनन्त तक
निरख रहे हो मुझे मेरे आरम्भ के भी पूर्व से
सिरजने के लिये
सहेजते मुझे
अपनी सन्धिनी से –
जगाते मुझे
संवित् से
रसाप्यायित करते मुझे
आह्लादिनी से
मथ रहे हो मुझे
देवासुर समुद्र मन्थन की तरह
उलीचने को मेरे अन्दर के अमृत रत्न
गूंथ रहे हो मुझे
कुम्हार की मिट्टी की तरह
गढ़ने को मेरा रस कुम्भ
चल रही है तुम्हारी मथानी
काढ़ने को मेरा प्रेम नवनीत
उकेर रही हैं तुम्हारी कूँची मुझे
सिरजने को दिव्य सौन्दर्य चित्र
तोड़ रही है तुम्हारी छेनी मुझे टुक–टुक
अनावृत्त करने को मेरे पाषाण से
मेरी देवमूर्त्ति
बस मुझे निरखते–निहारते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौन निःस्पन्द
अपलक
राग से–भाव से
इतने सघन–इतने प्रगाढ़
इतने परम
कि सब जैसे ठहर जाये
परम गति दिखे अगति सी
परम क्रिया लगे अक्रिया सी
परम भाव झलके अभाव सा
मौन सा
उदास सा
निर्वेद सा
परम कर्म अकर्म सा
प्रवृत्ति और निवृत्ति के अद्वैत सा
अनादि के आदि से
गढ़ रहे हो तुम मुझे
प्रेमागार!
बस उड़ेल रहो हो स्वयं को
मुझे
अपनी आँखों की राह
दे रहे हो – दिये जा रहे हो
स्वयं को ओ सर्वदाता!
पी रहे हो मुझे आँखों की अंजुरी से
जैसे पीता है सागर नदी को
सोख रहे हो
जैसे सोखती है हवा मलय गन्ध को
ले रहे हो मुझे
जैसे लेता है गगन प्रकाश को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जज्ब कर रहो हो मुझे
जैसे करता है संगीत नाद को
भिन रहे हो मुझ में
रस बन कर
महक रहे हो मुझमें
सुगन्ध बनकर
बज रहे हो मुझमें
निनाद की तरह
और यह सब कर रहे हो
अनकिया सा
बस अपनी दो आँखों से
ओ परम कर्त्ता!
क्यों कर रहे हो इतना
क्यों दे रहे हो इतना
सतत–अनवरत
ओ प्रेमसिन्धु!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरते हो तुम मुझे

पूरते हो तुम मुझे
इन्हीं आँखों से
प्यासे कण्ठ में जैसे उतरता है
घूँट घूँट जल
जैसे बरस–बरस जाती है वृष्टि
धान के खेतों में
पूस के आँगन में जैसे
फैल जाता है घाम
नदी में डूब रहे को
जैसे मिल जाये साँस
पूरते हो तुम मुझे
इन्हीं दो आँखों से
भरते हो तुम मुझे
ओ भर्त्ता!
जन्मों का अधूरापन
मेरे घट का यह रीतापन
अंतस् का यह खालीपन
भरते हो तुम मुझे
रग रग भिनता है मेरा
चूते हैं जैसे
हरसिंगार के फूल
गमकता है रोम रोम मेरा
भरित और संतृप्त
संतृप्त और सुगन्धपूरित
जन्म जन्म के प्यासे मेरे प्राण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले लो मुझे
सदा सर्वदा के लिये
फिर न डंसे मुझे कामना
फिर न चाँपे मुझे वांछा
न धरे फिर मुझे स्पृहा
न ग्रसे मुझे तृष्णा
न पकड़े मुझे संसार फिर
सहेज लो मुझे
थाम लो मुझे
मेरे सर्वेश्वर!
इन्हीं आँखों की राह
साध लो मुझे
तुम्हीं साधो तो मैं सधूँ
बाँध लो तुम मुझे स्वयं से
तुम्हीं बाँधो तो बधूँ
बटोर लो मुझे
जगा लो तुम मुझे
टूटे यह मूर्च्छा
उठा लो मुझे
अपने सुमिरन में
उगालो तुम मुझे
मोह की माटी से
ओ मेरे महासमुद्र!
बना लो मुझे अपनी गंगा
चलूँ संसार की घाटियों से
गिरिशिखरों के बीच से
गिरिपदों से
हहराता हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहराता हुआ
आँके–बाँके पथों से
बस तुम्हारी ओर
उठालो मुझे अपनी ओर
ओ मेरे सूर्य!
सोख लो मुझे
अपने ताप से
भाप बन उठूं तुम्हारी ओर
ऊपर और ऊपर
वायुमण्डल की सघन निचली पर्त्तों के बीच से
फिर जमा लो मुझे
कर लो संघनित
मेघ सीकरों सा
बरसने के लिये
तुम्हारी तापतपी पृथ्वी पर
प्रियतम!
संवार लो मुझमें
अपनी चाह
बनालो मुझे
अपनी कामना
अपनी वासना
उतर आऊँ मैं
बह आऊँ मैं
तुम्हारी आँखों की राह
अपना बना लो
मुझे
अपना लो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या देखूँ तेरी आँखों को

क्या देखूँ तेरी आँखों को
कैसे यकीन करूँ
ये आँखें तुम्हारी हैं
एकदम भोली
एकदम निरीह
सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान की आँखें –
सर्वेश्वर!
क्या नाम दूँ
इस निरीहता को
इस दीनता को
सुनता रहा हूँ
तुम्हारी आराधना की –
पहली शर्त है
दीनता
और हिलता रहा है मन
संशय से
प्रश्नाकुल क्षोभ से
बार–बार उंगली कोंचती रही है
बुद्धि –
आज उत्तर मिले हैं
उन सारे सवालों के
तुम्हारी आँखों में –
मैं क्या साधूँगा
दैन्य!
आज गल कर बहा है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरा कमान सा खिंचा अहं
तुम्हारी आँखों के तीर पर
यह अमाप दैन्य
यह अछोर निरीहता
नवजात शिशु सी
नन्हीं चिड़िया सी
सीमान्त के किसी गोवत्स सी
मैं हतवाक्
मंत्रबिद्ध बस निहारूँ इन्हें
और बंध जाऊँ इनके रहस्यपाश में
क्या है इस असीम निरीहता में
जो सोख लेता है मोह को तल तक
कौन सा उत्ताप है इस दीनता में
जो वाष्पीभूत कर उड़ा देता है
सारे जीवनों के अभिमान को
स्वत्व को – अहं को
तल तक
मूल तक
इतना कि बिला जाने लगा संसार
टूट जाने लगे सब बन्ध –
विमुक्त –सर्वमुक्त
अब मैं बंधा अबाध सम्मोहन में
मोहन!
तुम्हारी आँखों के –
कौन लुट न जाय
इस निरीहता, इस दैन्य, इस भोलेपन पर!
कहाँ टिके हमारा दैन्य
तुम्हारे आगे!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शायद तुम पसरे हो–फैले हो
सर्व में–सारी सृष्टि में
इसी अमाप दैन्य के कारण
दैन्य ही तो गला सकता है
पिघला सकता है
फैला सकता है–
क्या इसीलिये है दैन्य
भक्ति की मांग!
कि प्रीति तो सधे
सरूप में ही
कि हृदय तो बहे
घाटियों में ही दैन्य के
अहं के शिखरों पर नहीं
कि हृदयी ही तो हो तुम
दिल लगे दिलवाले से ही
दिलदार का दिल –
बस अब एक ही याचना तुमसे
ले लो हृदय
ओ हृदयेश्वर!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या देखूँ मैं संसार

क्या देखूँ मैं संसार
यह रूप, यह रोशनी
यह रंग, यह रस
यह स्पर्श, यह संगीत
क्या देखूं मैं फिर
ये तेज तेज चलते
कभी दौड़ते, कभी हाँफते
चढ़ते
जाने किन मटमैली चोटियों की ओर
ये कदम
अभी ज्वार की तरह
हहराता, उछलता, छलकता
झिलमिलाता, चिटखता, चमकता
कौंधता, हुमकता, झलकता
छलछलाता, फूलता, फटता, चिनकता
मचलता
और अभी
ज्वार की तरह उतरता
पसरता, समेटता, सिकुड़ता
छोड़ता
मटियाया, तलछटी
पांकभरा, झुराया, मुरझाया
सूखता
यह रूप –
क्या देखूँ और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

यह लहक–यह बहक–यह महक
यह चमक–यह दमक–यह गमक
यह हुमक, यह उफक
यह धौंस–यह धमक
यह कौंध–यह ठसक
यह कसक–यह धसक
यह प्यास–यह चषक
यह लोच– यह लचक
यह धमक–यह थमक–यह नमक
यह धड़क–यह कड़क–यह सड़क
यह लटक–यह मटक–यह झटक–यह पटक
यह पनक– यह खनक–यह झनक
यह तान–यह तनक–यह हनक
यह मान–यह भनक
क्या देखूँ
यह वह, यह यह
यह सब
यह इदम्–यह त्वम्
यह वयम्–यह अहम्
और क्या देखूँ
देखकर तुम्हें
तुम्हारी इन आँखों को
कैसे धंस गयी हैं
ये आँखें
मुझमें
मेरे आरपार
कहाँ हिलने देती हैं ये!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिधर देखूँ
घेर लेती हैं ये
गउएं चराते जैसे
हाँक ली जाती हैं
छिटकती हुई गउएं
ओ मेरे गोपाल!
कैसे बना लिया है मुझे
अपनी गऊ
अरे ओ बांके बिहारी!
कैसे तूने भुलाई अपनी बांकपन—इन आँखों की
और मेरी सीध में
ऐसे बिछा दी
अपनी ये आँखें
कैसी सीधी
कैसी सूधी
कैसे तो पैठ गयीं ये
सीधे मेरे अन्दर
मेरे आर पार
मुझे घेरते
मुझमें फैलते
मुझे बाँधते
मुझे बटोरते, मुझे सहेजते
मुझे गांथते, मुझे गंठियाते
जैसे आँधी पैठ जाये
सुरंग में
जैसे बाढ़ उतर जाये
कुएँ में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे विद्युन्माला
दरक जाये घटाटोप अंधियारी में
जैसे आरा चिरता चला आये
कुन्दे के अन्तर में
जैसे हिमनद उतर आये
नीचे उष्ण कटिबन्धी घाटी में
छा गयीं ये भोर के उजास की तरह
फैल गयीं ये फुलवारी के सुगन्ध की तरह
उतर आयीं ये शिवजटा से धरा पर उतरी भागीरथी की तरह
बिछ आयीं ये यमुना तट की रेत की तरह
सागर की तरह उफन आयीं
चन्द्रिका की तरह खिल आयीं
साँस की तरह अंटक आयीं
ये तुम्हारी आँखें
मेरे अन्दर
मेरे आर–पार
अब क्या कहूँ – कैसे कहूँ
तुम्हारी लीला को
तुम्हारी क्रीड़ा को
तुम्हारी रीति को
तुम्हारी प्रीति को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसा कसैला मटियाया बादल

कैसा कसैला मटियाया बादल
धंस आया हमारे बीच
संसार ही है यह
माटी ही है यह
हमारे बीच आ घुसा
माटी का–माटी की धरती का
गुरुत्व ही तो
खींचे है मुझे
नीचे की ओर
अधः की ओर
नीचे और नीचे–भारी और भारी
कसैला–कलछौंहा–मटमैला
युगों से–जन्मों से
छायी है यह गर्द मुझपर
झाड़ने लगे प्रिय तुम!
और मैंने कर दिया तुम्हें असफल
मैंने–मेरे मोह ने–मेरे क्षुद्र ने
तुम्हारी पवित्रता परम की
मेरी अपवित्रता अधम की
फिर भी तुमने ओ परम पावन!
मुझे हेरा
मुझे टेरा
मगर मुझ तुच्छ ने
एक बार फिर खो दिया तुम्हें
हर जन्म की तरह
असंख्य जन्मों की तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ छुपने लगे तुम

कहाँ छुपने लगे तुम
दूर–बहुत दूर होने लगे तुम
सांस जैसे अकफक
मींज रहा हो जैसे कोई
संड़सियों के बीच
हवा जैसे हो गयी भारी
पैरों में डाले जंजीर
जैसे खींच रही हो धरती
नीचे की ओर
सुख जैसे छाती पकड़ बैठ गया हो
धरती पर
तपने लगी हो जैसे रात पसीना पसीना
बैठ गया धुंआ आँखों में
तुम खोने लगे जैसे
धुन्ध में
कैसे डूबने लगीं
तुम्हारी आँखें
डबडबायी–भरी भरी
निहारती हैं अब भी मुझे
मगर
कितनी दूर से
पीछे से
पानी के पर्दे के–
जाने कैसे हुआ
संसार का – मोह का
अमर्ष का – द्वेष का – अहं का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटेपन का
एक बात पूछूँ साँवरे
उत्ताप मेरा
मेरे हृदय का
मगर
जल उमड़ा ऊपर
तुम्हारी आँखों में
प्यास मेरी है या तुम्हारी
पीर मेरी है तो हूक तेरी कैसे
सच प्रिय!
प्रेम तो तेरा है
तुम हो प्रेम शिक्षक
परछाई भी नहीं तो नहीं
मेरा प्रेम
सिखा रहे हो जन्मों से
और मैं तो अभी पैर भी न रख पाया
तेरी गली में
प्रभु, यह उदासी तेरी आँखों की
इसी नैराश्य की है क्या
मगर यह जल तुम्हारी आँखों का –
पिघले क्या इसी आँच से ?
याकि ताप है इसमें घुला
प्रीति का ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसे सहेजती हैं ये

कैसे सहेजती हैं ये
तुम्हारी आँखें
नींद में – स्वप्न में – जागरण में
बोलते बतियाते
चलते
बैठते उठते
कहते सुनते
रोते हसते
सोचते विचारते
कैसे थामे रहती हैं ये
अपनी दृष्टि में
कहाँ टिक पाता हूँ
कहाँ थम पाता हूँ
कहाँ रह पाता हूँ
कहाँ बच पाता हूँ
हिलता हूँ बार–बार
फिसलता हूँ
लुढ़कता हूँ
ढहता हूँ
बार–बार
मगर धरे रहती हैं ये
अपलक
निष्कम्प
क्या नाम दूँ
इस बेनाम को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथाह अमाप अकारण अहैतुक को
क्या ढूढ़ लिया है तुमने
इस मृद्‌खण्ड में!
समझूँ न समझूँ
मानूँ न मानूँ
चाहूँ न चाहूँ
उठाये रखती हैं ये आँखें
सीप के मोती की तरह
पंखरी पर ओस की तरह
कलौंछे क्षितिज पर प्रभात किरण की तरह
क्या सामर्थ्य है मेरी
बस लिपट सकता हूँ तुम्हारे उपानह में
कींच बन
पड़ सकता हूँ तुम्हारी आँख में
किनका बन
चढ़ सकता हूँ शीश पर
गर्द की तरह –
ढूढ़ने लगा हूँ इन आँखों में
अपनी नयी पहचान
देखना चाहता हूँ इन आँखों से
खुद को
समेट लो प्रभु अब
ले लो स्वामी अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पानी पर लहर लहर तैरती

पानी पर लहर लहर तैरती
पंखरी आँखें
हवा के ताल पर निःशब्द चूती
कनेर आँखें
दिन के अकेले घोंसले से अभी इधर अभी उधर झांकती
गौरैया शिशु आँखें
नदी जल में नीलम मोती छींटती
किरन किरन आँखें
पंख पंख खुलती
रेशम रेशम आँखें
एकान्त महावन में निर्भ्रान्त डोलती
पत्ता आँखें
विराट महापर्वत की
निभृत्त महाकन्दरा आँखें
महामहासागर की असंख्य जल पर्तों में दबी
महागहन नितल आँखें
गिरि शृंखलाओं की प्रातः सैर से लौटी
श्लथ श्रान्त आँखें
कैसे कहूँ
कैसी आँखें
पल पल
रहस्य के अनगिनत पर्त उघाड़ती
आंकाश आँखें
जाग की सोयी
सपनों की जगी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादि की भूमि से पनकी
अनन्तगन्धी आँखें
क्या कहूँ
कैसे कहूँ
कैसी आँखें
सृष्टि जल में तिरती
उजली अन्तरिक्ष आँखें
कभी फूल फूल
कभी कली कली आँखें
कभी खुली खिली आँखें
कभी बन्द सी
मिली मिली आँखें
अस्तित्व के वनान्त की
कोना आँखें
प्रेम मधु लोक की
क्षितिजान्त आँखें
महाभाव पूजन प्रसाद की
दोना आँखें
क्या कहूँ
कैसे कहूँ
कैसी
बस तुम जैसी
तुम्हारी आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पल पल

पल पल
मुझे चहुँ ओर से घेरे
मुझे थामे
ये आँखें नहीं हैं तुम्हारी
ये तुम्हारी फैली बाँहें
कहते तो हैं शास्त्र
तुम्हारी हर इन्द्रिय – हर अंग
करते हैं काम सारी इन्द्रियों का
सारे अंगों का
निहार–निरख कर
जोड़ लेते हो मुझे
स्वयं से
बाँध लेते हो मुझे
फैल जाते हो
मुझ तक–नख से शिख तक
भर जाते हो
मुझे पूरम्पूर
जुड़ना भर नहीं है यह – योग
संयुक्त हो जाना है
संयुक्त होना भर नहीं है
एकमेक हो जाना है
एकप्रांण, एकात्म
मगर यह एकमेक होना भी कहाँ है
यह तो प्रसार है तुम्हारा
मेरे अंगान्त–रोमान्त तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे अमृत भरे प्रेम कलश में
और निकल जाये कलश की वायु
तुम भरते हो ऐसे ही मुझमें
निकालकर मुझको
रह जाते हो
तुम ही तुम
निकालकर मेरा काँटा
भर जाते हो तुम मरहम बन
मैं ही हूँ दुःख
पीड़ा और अभाव
मेरा विस्थापन ही है
महाभाव और आनन्द
मेरा चरम अभाव ही
बनता है परम भाव तुम्हारा
मगर
मगर खोकर भी खोता कहाँ हूँ
होता हूँ तुम्हारा होकर
तुम होकर
क्योंकि होते हो तब
सर्वरूप तुम
और सर्व से बाहर
कहाँ हो सकूँ मैं
लेकर मुझे सर्वान्त
दे देते हो मुझे आसर्व
स्वयं को सम्पूर्ण
और यह सब कहाँ करते हो तुम
करती हैं सब
तुम्हारी आँखें
जो बस देखती हैं मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँखों की बात

आँखों की बात
आँखों–आँखों में
आँखों से –
तुम्हारी और मेरी
इन दो जोड़ी आँखों में
क्या घटता है
अबूझ रहस्यमय
कि मैं टंग जाता हूँ
आकाश सा
चढ़ जाता हूँ
आकाश सा
तन जाता हूँ
खुल जाता हूँ
प्रसर जाता हूँ
आकाश सा
उलट दिया जाता हूँ
पलट दिया जाता हूँ
उछाल दिया जाता हूँ
निकाल लिया जाता हूँ
बाँध लिया जाता हूँ
आकाश सा
जाने क्या–क्या होता है
सब कुछ होता है
आकाश सा
और जब खो जाती है ये आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृष्टि से
मैं ऐसे हो जाता हूँ
जैसे बंधे आकाश
जैसे छितरा जाये
धुरीहीन खो जाये
धुन्ध धुन्ध धुँधला जाये
आकाश
आकाश जैसे घुटे
आकाश जैसे छिने
आकाश जैसे बंधे
आकाश जैसे सिमट जाये
जैसे सुन्न हो जाये
जैसे शून्य हो जाये
आकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौन सा रंग है तुम्हारा

कौन सा रंग है तुम्हारा
तुम्हारी आँखों का
स्वप्न का रंग
बादल का रंग
नदी का रंग
आकाश का रंग
या अस्तित्व का रंग
और रेत का रंग
खुल जाता हूँ मैं
पिघल जाता हूँ मैं
फैल जाता हूँ
बह जाता हूँ
तुम्हारी इन आँखों के घेरे में
छूती हैं जैसे ही ये आँखें
और
सब जैसे पत्थर–पत्थर
किरची किरची
धूल धुँआ
ठुँका फँसा
बंधा अंटका
पड़ा धंसा
बन्द रुका
खो जाती है जब ये आँखें
जाने कहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसे
एकान्त घने जंगल में
वानस्पतिक अंधियारे में ढंके
पानी सा
सब थम जाता है
जानवरों के खुरों से रौंदे
ग्रीष्मान्त में पांक पांक तालाब सा
सब धंस फंस जाता है
जल कुम्भी से छोरों तक लदे फदे
सीवान के ताल सा सब बासी बसा जाता है
शहर के बीच पड़े कचरा पटे कुण्ड सा
सब भिनभिना जाता है
उखड़ जाता है सब
झटक जाता है
जब खो जाती हैं दृष्टि से
तुम्हारी आँखें
कौन जतन करूँ
कैसे रोकूँ इन्हें
किससे पूछूँ
कहाँ जाऊँ
कौन बताये
तुम्हारे बिना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे करीब आ बैठीं

मेरे करीब आ बैठीं
आज तुम्हारी आँखें
मुझे घेरे तुम्हारी बाँहें
संड़सियाँ स्नायुओं की
खुलती गयीं
खोती गयी अपनी गुरुत्व शक्ति
मेरे अन्दर की पृथ्वी
खुलता गया
उड़ता गया जैसे
वाष्प बनकर
मुक्त –निर्भार
कुसुम–पल्लव सा तुम्हारा स्पर्श
ज्योतिर्मय
तुम्हारी आँखों की जद में
तुम्हें उतरने दिया स्वयं में
आपादमस्तक
जैसे कोई छुए शिशु को
पावनोष्म सूज्ज्वल स्पर्श
पिया पूज़ापंचामृत की तरह
द्वैत उड़ने लगा सुगन्ध की तरह
छा गया प्रिय, तुम्हारा कैवल्य
मुझसे होकर
सारे अन्तरिक्षों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्व में
सर्वकारण कारण तुम
व्याप गये सर्वातिशायी
और अब
धीरे से ढंप गयीं
तुम्हारी आँखें
मैं कहाँ था
मैं तुम था
और तुम
अपने से होकर
अन्दर से होकर
फैल गये थे
तब
जब तुम्हारी आँखें बन्द थीं
पहली बार
जब से जाना
पहली बार
तुम अन्दर थे
और मैं तुम्हारे अन्दर था
सब कुछ
तुम्हारे अन्दर था
और फिर
और फिर तुम भी खो गये
तुम्हारा होना था
मगर तुम नहीं थे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर
खो गया सारा विश्व
तुम्हारे अद्वितीय कैवल्य में
धीरे धीरे
उगने लगी
एक नयी सृष्टि
एक नया लोक
पहले
फैला दूधिया उजास
फैला दूर क्षितिज के पर तक
एक अकेली चिड़िया
दूध सी सफेद
फिर एक दूसरी चिड़िया
श्वेत हल्की हरी– हल्की नीली सी
फिर वह भी खो गयी पहली की तरह
व्याप्त दूधिया उजास में
चमचमाते बादलों के झुण्ड
उमड़ते चढ़ते एक पर एक
दूर तक फैले पर्वतों के झुण्ड
फिर मैदान
लम्बे छितराये वृक्ष
सब श्वेताभ
दूर मन्दिरों के गोपुरम्
सब मधुर मसृण मृदुल
श्वेत श्वेताभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अप्राकृत शुभ्र
सब प्रकाशमय
साकार होते हुए भी जैसे तरल ज्योतिर्मय
पवित्रोज्ज्वल
कौन सा लोक है यह
ऐसा श्वेत
श्वेतद्वीप है क्या यह
तुम्हारा अपना लोक
सत्ता है यहाँ
मगर डंकहीन
अस्तित्व है सब
धुरीहीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसे कैसे रंग

कैसे कैसे रंग
चढ़ते उतरते तेरी आँखों में
या साफ कहो तो
ये बदलते रंग
नहीं हैं तुम्हारी आँखों के
यह रंग तो है परदे का
कुहरीले परदे का
जो फैल जाता है हमारे तुम्हारे बीच
जब तब
सदा से
सदा से रहा है यह संसार
हमारे बीच
लुभाता, तानता और डंसता
परम सुहृद की तरह
परम शत्रु की तरह
या कहो
सुहृद के भेष में शत्रु की तरह
छुपा लेता है तुम्हें अपनी ओट में
जैसे बादल का एक टुकड़ा ढंक ले सूरज को
और तुम कुछ करते भी तो नहीं
निरीहतम की तरह
सर्वशक्तिमान!
कैसा यह खेल
बार–बार कसते हो
बार–बार ढीलते हो
बार –बार उढ़ाते हो
बार बार खोलते हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोशनी की तरह

रोशनी की तरह
चुँधियाती ये तुम्हारी आँखें
चुँधियाती तो है ही
रोशनी
रोशनी मन्द भी है प्रखर भी
मद्धिम भी है, तेज भी
रोशनी बदलती है
अपने ही हिसाब से
कभी थमक जाती है
कुहरा
कभी पड़ती है
फुहार
कभी बरसती है
झमाझम
कब कैसे क्यों
कौन जाने
रोशनी कभी चुभती है
किर्चों की तरह
छरछराती है कभी
मिर्चों की तरह
तड़क उठती है कभी
बिजली बन
भड़क उठती है कभी
लहककर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

चमकती है कभी
रोशनी का क्या
मगर कैसे कहें ऐसा
आती है यह
तुम्हारी आँखों से
आँखें जो उतरती हैं
पर्वत से उतरने वाली
नदी की तरह
उगती हैं
पूरब के क्षितिज के सूरज की तरह
चढ़ती हैं
ऊपर वायुमण्डल में महासागरीय जलवाष्प की तरह
घेरती हैं
मेघों की तरह
दौड़ती हैं
जंगलों में हवा के पंख पर नाचते
पत्तों की तरह
हसती हैं
बालियों भरे
धान के खेतों की तरह
आँखें
जो धूप, हैं
पानी हैं, हवा हैं
आँखें जो
आस हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्यास हैं
तुम्हारी
आँखें
जो सच्ची हैं
सच हैं
सच्चाई हैं
अच्छी हैं
अच्छाई हैं
आँखें जो
करुण हैं, करुणा हैं
आँखें जो
भरी हैं, गहरी हैं
गहराई हैं
आँखें ये
आज अगर
लहकें तो क्या
तड़कें तो क्या
भड़कें तो क्या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थमे थमे से

थमे थमे से
भूरे बादल
हवा बन्द
और झिमिर झिमिर बरसता पानी
आँखें आज तुम्हारी
छिपी छुपी सी
शायद पानी के पर्दे के पीछे
पानी पर्दा है
या शायद ओट है
पानी शायद जीवन है
बीच में
बरसाता हुआ जान बूझकर
शायद हिकमत है
हिमाकत
या तिकड़म
अब जिया नहीं जाता
तुम्हारी आँखों की छांह के बाहर
जनम जनम पंथ निहारती रहीं ये आँखें
हम गुम
रंग–रूप–रोशनी में
दुनिया के
अनजाने
अगोरती रहीं ये
अनथक–अनहिल
तुम यह पर्दा चीर सकते थे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहे जब
मगर तुमने मान रखा
निरा अमान्य का
कैसे कर सकते हो
तुम इतना प्रेम
कैसा है तुम्हारा यह ह्रदय
अथाह समन्दर सा
सुना –
प्रेम तो पलता है समता में
कैसे साधा ओ सर्वेश्वर
इस अकिंचन को
कहाँ से सीखी यह बान ओ कारुणिक
घूरा छानने की
जो पाया मोती यहाँ
जरूर उसकी आब आयी है
तुम्हारे ह्रदय से
तुम्हारी आँखों की राह
तुम अगोरते रहे
अगोरते रहे
और एक दिन परदा हटा
झलका तुम्हारा रूप तुम्हारी आँखों की खिड़की से
और बाँध लिया तुम्हारे दृष्टि नागपाश ने
परदा अभी भी उतर आता है हमारे बीच
जन्मों पुरानी लत
मगर छंटने के लिये – हटने के लिये
इस बार भी हटेगा
हट के रहेगा यह पर्दा
पानी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज हवा टेढ़ी है

आज हवा टेढ़ी है
सरसराती नीचे
ऊपर सनसनाती है
कनपटी को छूती है
किरकिराती आँखों में
दहक दहक जाती है
झोंक फेंकती है रक्त को ऊपर
होंठों पर लहराती है स्फुलिंग की तरह
धौंकनी चलाती है साँस की
रह रह घुट जाती है
घुट घुट निकलती है फूत्कार सी
रह रह झटक देता है पृथ्वी बल
अन्तर की ऊर्ध्वता को
आज हवा गाढ़ी है
कसी कसी
नथुनों में फंसी फंसी
आज हवा तीखी है
खड़ी मुँह के आगे
गड़ी पाँव के नीचे
धंसी धंसी
गाँठ गिरह गंसी गंसी
मगर आज भी
हवा के इस पर्दे के पार
तुम्हारी वे ही बोलती आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वही ढंग बैठने का तिरछे
गदेलियों पर बल दे मेरी ओर मुँह किये
पीताम्बर झूलता सा नीचे
आँख घुमाओ भर तुम
हवा की गाँठ गिरह खुल जाये
और फिर
तुम्हारी एँड़ी के नीचे ही तो है
हवा की चर्खी
मगर
कैसे सीधी निहारती हैं ये तुम्हारी आँखें
जैसे अनजान अबोध
साफ एकदम
सच्चाई जितनी
क्या कहूँ इन आँखों को
क्या पूछूं इन आँखों से
जिनसे
जैसे सवाल गुनाह लगे
बस निरखती हैं मुझे
निरीह
निरीह और उदास
और एकदम खामोश
ध्रुवीय सागर की तरह
क्या माँगे कोई
इन आँखों से
इन याचक सी आँखों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारी आँखों की छांह में बैठकर

तुम्हारी आँखों की छाँह में बैठकर
कभी कभी सोचता हूँ
क्या निरखती हैं ये आँखें
बार बार जाँचा है
परखा है
मुझे ही तो निरखती हैं ये
बस मुझे
एकान्त मुझे
कोई परछाईं भी न दिखी इनमें
किसी अन्य की
जाने कबसे निहारती हैं ये
और लगे कल्पान्त तक निहारेंगी
अनन्त अस्तित्व में
ना कुछ मैं
क्या तलाश लिया – पा लिया
मुझमें
सोचता हूँ कभी सोचूँगा
स्वयं को निरखूँगा
तुम्हारी आँखों की रोशनी में
कौन सा मानिक छुपा है
इस माटी के ढेर में
सोचता हूँ
सोच सोचकर थक जाऊँगा
ढूँढ ढूँढकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या पाऊँगा स्वयं में
धूल के सिवा
बस प्यास के सिवा
फिर छीलूँगा
इस प्यास को
पर्त दर पर्त
इस तड़प को
कैसे चीन्ह पाऊँगा
सारी पर्तों को उधेड़ते हुए
बार–बार यह संसार ही मिलेगा
नये नये रंग में
नये नये रूप में
हर रंग के पीछे
हर रूप के पीछे
तुम ही खुलते जाओगे
जैसे जैसे छिलती जायेंगी पर्तें
संसार तो बस पर्त है
छिलका है
पर्त दर पर्त
कैसे जान पाऊँगा
ये पर्तें कभी नहीं चुकेंगी
छीलते जाओ
छीलते जाओ
चमक बढ़ेगी
बढ़ेगी पारदर्शिता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और महीन
और हल्की
और और चमकदार और चिकनी और मृदुल
मगर पर्तें चुकेंगी नहीं कभी
फिर धीरे धीरे
कौंधने लगोगे तुम
झलकने लगोगे तुम
चमकने लगोगे तुम
टिका दूँगा तुम पर
अपनी आँखें अचल
हटा सकूँ आच्छादन
सारे आवरन
गोपियों के तो छीन लिये तुमने
सारे आवरन
श्यामल !
क्या देख सकेंगी तुम्हें ये आँखें कभी
निरावरन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौन खोल सके

कौन खोल सके
तुम्हें
खोलो तुम्हीं तो खुले
सिरजा जब सारा रूप
और स्वयं से ही तो सिरजा
छींट दिया
अन्तर से निकालकर
सारे अस्तित्व में
जहाँ फेरो आँख
जिधर फेरो
रूप ही रूप
छितरा हुआ
बिखरा हुआ
मोती मोती
फूल फूल
कैसे समेटूँ इन्हें
कैसे सहेजूँ इन्हें
बटोर कर कैसे उरेहूँ तुम्हें
कैसे देख सकूँ
तुम्हें पूरा
कौन देख सके तुम्हें
तुम्हारे सिवा
किनमें समा सके यह रूप
सिवा तुम्हारी आँखों के
तो श्यामल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

कह सकूँ तुमसे
कहूँ मैं!
दे दो उधार
पलभर को
अपनी ये न्यारी आँखें
कौन उघार सके तुम्हें
सिवा तुम्हारे
स्वामी
इस बार सिरजो मुझे
अपनी ही मृदा से
(स्वामी कहाँ है कोई मृदा तुममें ?)
मेरा हाथ
मेरी आँखें
मेरी नाक
मेरा मुँह
पूरा मेरा शरीर
इस बार रचो मुझे
अपने अन्दर से
छू सकूँ मैं तुम्हें
भर सकूँ तुम्हें बाहों में
उघार सकूँ तुम्हें
पी सकूँ तुम्हें
अपनी आँखों से
दे दो प्रभु
उधार अपनी आँखें
बदले में लेलो
ले लो मुझे ही
मुझे ले लो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारी ये पानीदार आँखें

तुम्हारी ये पानीदार आँखें
पानी पानी चमकती हैं
आर पार पंख सी कोमल
मोती सी झिलिर–मिलिर
डूबती किरनों के संग
मन्थर हवा से ताल मिलाती
तली से लेकर तल तक
मोटे पानी सी डोलती हैं
हिलर हिलर
नन्हीं मछलियों के हर उछाल पर
हीरे की तरह कनी कनी
चूर छिंटा जाती हैं
अरुण की किरन शिशु जब सतह के दरवाजे खोल
घुसती है हकबकाई
तो पानी की तरह ताली बजाती हैं
जगर मगर
छप छप पानी में
गौरैया सी नहाती हैं
फुदुर फुदुर पानी की तरह
छिलबिल छिला छिला जाती हैं
तल पर गौरैया के चाल ताल पर
गदर बदर भारी मछलियों सी
फदफदाती हैं तल के बस जरा नीचे
प्यासे गाय गोरू जब मुँह डालते हैं
छुल छुल वत्सल बिहसती हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाव जब निकलती है छाती से होकर
गहरी चिर चिर जाती हैं गति के हर आवेग पर
तटों के बीच
थरथराती है बस
बंधी बंधी
थमक थमक कठुआती हैं
जाड़े के कुहरे की लिहाफ के नीचे
कौंध लपक जाती हैं कटार सी
गर्मी की दुपहरिया में
बसन्त के तट वृक्षों की गदराई छाँह में
बिछ बिछ जाती हैं प्रेमोष्म
भदवारी छतनार मेघों के अंक में
कसमसाती हैं पलकें ढांप
रंग रंगी श्यामल श्यामल
झिमिर झिमिर गले भेंटती हैं
भदवारी वर्षा बूँदों से
छिमिर छिमिर पुलकती हैं मिलन नाद में
तेज हवा के आवर्त्त में
बल खाती हैं नाग की तरह
हौंड़ेरती हैं हुँहुँआती हैं
नीली काली सुरंगों की तरह
सूरज के साथ
खिलखिलाती हैं दिन दिन
रात में सांय सांय चिहाड़ती हैं
कलछौंहा सन्नाटा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हें नीलम नीलम झलकाती हैं
उजालों में
अंधेरों में ढक्कन गिराती हैं
अमूल्य खजाने के सन्दूक की तरह
पानी के पीछे से निहारती हैं मुझे
तुम्हारी पानी आँखें
पानी की बेल पर
सूर्य फूल की तरह
चिटखती हैं तुम्हारी आँखें
उगती हैं नीलम के चन्द्रमा की तरह
पानी के आसमान में तुम्हारी आँखें
पानी की गदेली पर
बिजली के लट्टू की तरह
गनगनाती हैं तुम्हारी आँखें
तुम्हारी आँखें
आग आग धोती हैं
तुम्हारी आँखें
भींजती हैं
कुहरा कुहरा
दौड़ती हैं
नदी नदी
डूबती हैं
सागर सागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलती हैं तुम्हारी आँखें

बोलती हैं तुम्हारी आँखें
तुमसे भी ज्यादा
मेरे भेद खोलती हैं
तुम्हारी आँखें
तुम्हारे भेद
कौन जाने तुम्हारे सिवा
या वह जाने
जिससे कोई न रखो तुम
भेद
जिससे साध लो तुम
अभेद
मगर पल पल
मुझे तोलती हैं
तुम्हारी आँखें
जाने क्या कहते हो तुम
अबोले
बस बोलती हैं
तुम्हारी आँखें
आँखों आँखों में
देती हैं उलाहने
खीजती हैं बरजती हैं
कोंचती हैं टहोकती हैं
बस तुम्हीं जानो
क्या टटोलती हैं
तुम्हारी आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़ती हैं कभी
कभी थामती हैं
कभी झकझोरती हैं
हिलाती हैं डुलाती हैं
फिर पकड़े आँखों की डोर
लहर लहर
डोलती हैं
तुम्हारी आँखें
उड़ेलती हैं हिलोरती हैं
मलती हैं मथती हैं
फेंटती हैं
रसों की शीशियां खोल
उझील भाव मटकियाँ
क्या तो
घोलती हैं
तुम्हारी आँखें
नापती हैं परखती हैं
खुरचती हैं खींचती हैं
ठोंक कर कसकर
उठंग मेरे सिरहाने
मुझे मोलती हैं
तुम्हारी आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम जानो

तुम जानो
जानो तुम
जो मांगती हैं तुम्हारी आँखें
कहो तो
मांगू कुछ मैं भी उनसे
बस एक माँग मेरी
बस एक चाह मेरी
बस एक प्यास मेरी
बस एक बार रख कर
अपनी आँखें
मेरे दायें कपोल पर
देखो मुझे
बिना ढांपे अपनी आँखें
एक बार परस कर देखो मुझे
अपनी आँखों से
एक बार छुओ इनसे
बिना ढांपे
एक बार पियो मुझे
आंखों के दोनों से
एक बार देखो मुझे
जब सूंघ रहे हों मेरी त्वचा
तुम्हारे नथुने
एक बार निरखो मुझे
जब सुन रहे हों मेरी साँस
तुम्हारे कान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बार निहारो मुझे
जब तुम्हारा पीताम्बर
आ लिपटा हो मेरे कोरे अंगों से
तुम्हारे बिना जाने
चम चम चमके
सूरज की आसभरी किरनों के तले
गम गम महके
धरती का हृदय भेद तिरती गमकों से
दम दम दमके
प्यारे के रूप से
दहके प्यास के स्फुल्लिंग की तरह
चहके मधुगाँछ की पुलुंई पर आ बैठे
पंछी की तरह
रस भर भर भरे
मोती फूल झर झर झरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या बोलती हैं ये

क्या बोलती हैं ये
क्या कहती हैं तुम्हारी आँखें
क्या माँग है इनमें
क्या चाहती हैं तुम्हारी आँखें
सवाल यह भी है कि
क्यों बनाया है इन्हें
अपनी वाणी
आँखें क्यों मुखर
और वाणी क्यों मौन है
क्यों, क्यों और क्यों को क्यों
झेलता यह कौन है
चाहते हो शायद तुम
मुझे जज्ब करना
आत्मसात् करना स्वयं में
जुड़ना, जोड़ना, जीना
और फिर
भरकर मुझे स्वयं के प्रेमामृत से
आत्मवान
आत्माकार
आत्मरूप
रच लेना
गढ़ लेना मुझे
अपने ही प्रतिबिम्ब में
नहीं बिम्ब में
आत्मवत्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं
सच कहो तो
आत्मरूपाकार भी नहीं
आत्मविस्तार देना
चाहते हो तुम
आत्मप्रसार
मेरे सम्पूर्ण में लबालब
परमपूर्ण
देना चाहते हो मुझे स्वयं को
और चुकते कहाँ हो तुम
सर्वदान के – पूर्णात्मदान के बाद भी
पूर्णस्य पूर्णमादाय
बचे रहते हो तुम
सम्पूर्ण – परमपूर्ण
पूर्णमेवावशिष्यते
सम्पूर्ण स्वात्मदान
आखिरी कण तक – बूंद तक
की उदात्त उदारता ही है शायद
पूर्णावशेष का राज
पूर्णदान के बावजूद
अपने को उलीच सम्पूर्ण
ही तुम बने रह पाते हो
अक्षत, अखण्ड और पूर्ण
सर्वात्मदान ही शर्त है
सर्वसिद्धि की
शायद यही जताना चाहते हो तुम
क्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारी आँखों के पाठ में
यह शामिल है क्या
ओ शिक्षक!
शायद तुम्हारी आँखों का पाठ है
यही शिक्षा संकेत
और मुझे निहारना – निरखना
निहारते रहना–घेरे रहना
ही है दीक्षा का क्रिया मार्ग
तुम्हारी आँखों के पानी में बसा प्रेम ही
शायद तुम्हारी दीक्षा है
और सर्वस्व दान ही
तुम्हारी शिक्षा
देना ही पाना है
रिक्त होना ही भरना
हेराना ही है पहुँच जाना
खोना ही सर्वसिद्धि
और यह भी कि
जुड़ना ही है संकल्प
जोड़ना ही मार्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम उगोगे

तुम उगोगे
किसान की आँख में
जब अंखुआयेगा बीज
जुती–बनाई नरम भुरभुरी जमीन में
तुम उगोगे
जब खन्दकी खोहों वाली
कलछौंही काई काई ढालू रात का उद्भेदन कर
फूटेगी किरन लाल प्राणवती लावा सी
तुम उठोगे
जब अभी भोर में ही आँख लगी माँ का
आंचल उघार ऊँ ऊँ करता
जगेगा बच्चा
तुम उठोगे
जब भूमध्य रेखा की पीठ पर
उष्णार्द्र सघन अंधेरे वनों के ऊँचे पेड़ों के ऊपर
थामने सूरज की बाँह
उठेगा कोई किशोर वृक्ष
तुम चलोगे
जब अभी अभी माँ के उदर से भू पर गिरा गोवत्स
चलेगा लटर पटर
अभी चुई अभी चुई आँखों की छाँह में
तुम चलोगे
जब चलेगी धरती
सूरज से टूटने के बाद
राह टटोलती उसके चहुँओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़खड़ाओगे तुम
जब बूढ़े बाबा के हिलते शरीर के दाब से
थरथराती हथेलियों से दबा कोमल नन्हा कन्धा
तलमलायेगा
लड़खड़ाओगे तुम
जब मनुष्यता का पेट भरने को तत्पर गर्भवती स्त्री
अभी कटे धान का बोझा उठाये रखेगी पाँव
खेत की मेड़ पर
सुस्ताओगे तुम
जब कोई बूढ़ा ब्रह्मा
सृष्टि सिरज
ऊँघेगा कल्पान्त की साँझ
विष्णु नाभिजात कमल की नाल से पीठ लगा
सुस्ताओगे तुम
जब चक्रवाती स्वेद स्वेद रासमण्डल से लौट
यमुना पुलिन श्वेत रेत
बिछायेगी ब्रजा ना अपनी सतरंगी लटपट ओढ़नी
निहारोगे तुम
जब जब मैं सांस लूँगा
तुम्हारी आँखों के अंक में
निहारोगे तुम
जब जब में तलफूंगा
तुम्हारी प्रीति के डंक में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज स्वच्छ है सब

आज स्वच्छ है सब
अनन्त दूरियों तक फैला
सारा अन्तरिक्ष
सारे कण सूक्ष्मातिसूक्ष्म होकर
खो गये हैं
धूल के, धूम्र के, वाष्प के
धुन्ध घुल गयी है विराट अवकाश में
निर्मल प्रकाश में
उज्ज्वल हो आया है जैसे
महाशून्य
मगर मैंने तो साधा था
पूर्ण–महापूर्ण
कहां प्रगलित हो गया है
सारा भराव
धुल गयी है सम्पूर्ण
भरितता
धुन्ध सी उड़ गयी है जैसे
यह भराव है खालीपन
भरितता है रिक्तता
भराव जैसे हो गया है खाली
खालीपन भर गया है जैसे पूरम्पूर
पूर्णता है इतनी पारदर्शी
सत्ता है इतनी सूक्ष्म
पवित्रता कभी न थी इतनी प्रकाशमान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्थिव है गर्द शायद
गर्द झरे
और प्रकट हो पावन
उज्ज्वल भास्वर पावन
एकमेक हैं रहस्यमय
परमपूर्ण और परम शून्य
अनस्तित्व का अस्तित्व
या
अस्तित्व का अनस्तित्व
या
दोनों साथ साथ
अपनी पूर्णता में
पारदर्शी प्रकाशित
इसी पारदर्शी प्रकाश में
सर्वव्याप्ति के साथ
एकाकार हैं शायद
तुम्हारी आँखें
परमशान्त है आज
महासमुद्र
लहर का एक कण भी नहीं
अनन्तव्यापी
सर्वातिशायी
पूर्ण अमल
परम मौन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे दरवाजा बन्द हो गया हो

जैसे दरवाजा बन्द हो गया हो
अकेला दरवाजा
आसमान चूमती चारों दिशायें घेरती
दीवारों का
अकेला दरवाजा
जैसे काली खदान में घिरा
भूगर्भ की खोह में
बन्द हो गयी हो हवा
जैसे
पानी की मोटी पर्तों के नीचे
घुट रही हो साँस
जलते सूरज की छाँह में
जैसे पैरों के नीचे तपती हो रेत
ऐसे
ऐसे ही छुप गयी हैं
तुम्हारी आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब मौन

सब मौन
शिथिल सब ग्रन्थि ग्रन्थि
ढीले सब स्नायु स्नायु
मुक्त सारे तनाव
सत्ता की प्रत्यंचा के
रोशनी ने ओढ़ ली चादर
श्रान्त विश्राम की
सूरज की आँख लगी हो जैसे
ऐसे
तुम्हारी आँखें
पढ़ते पढ़ते ऊँघ गया हो जैसे
कोई बच्चा
जीवन की किताब
निचाट रात में
तट के लता गुल्मों के शरीर के नीचे
जैसे अलस निंदासा जल
मन्द हवा में लहराते
तारों भरे आकाश बिम्ब से पटा जैसे
महाकाय ताल
अनन्त सृष्टि के एकाकी विटप के एकान्त की छाँह में बैठ
राह तकती
तुम्हारी आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसे तो तुम

कैसे तो तुम
कैसी तुम्हारी आँखें
मैं लिथड़ता रहा पाँक में
जनम जनम
मैं भटकता रहा क्षुद्रताओं के जंगल
जनम जनम
कितने बड़े तुम
कि छू भी न पाये मुझे
मेरी क्षुद्रता में
उठा भी न पाये अपने घुटनों तक
अपनी ऊँचाई की ओर
लरजती रहीं
तरसती रहीं
तड़पती रहीं
खींच भी न पायीं मुझे
उस क्षितिज तक
मुझे जिसके पार होना था
तुम्हारी नरम साँसों की जद में
और आखिर जब लिया
अपनी पहुँच में
समा भी कहाँ पाया मैं
उनमें
हालांकि
फैलती गयीं कानों की ओर
कितनी तो छोटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारी आँखें
कैसे तो तुम
कैसी तुम्हारी आँखें
मुझे उनमें होना था
मुझे तुममें होना था
कहती रहीं तुम्हारी आँखें
आँखों आँखों में
सीपी के मोती की तरह
कली के सुगन्ध की तरह
नव प्रसूता के स्तनों के दूध की तरह
धरती के गर्भ के बीज की तरह
मुझे उनमें होना था
मुझे तुममें होना था
तुम्हारी प्यास बनकर
तुम्हारे प्राण बनकर
तुम्हारा मन बनकर
तुम्हारी आत्मा बनकर
बोलती रहीं तुम्हारी आँखें
आँखों आँखों में
मुझे तुममें होना था
मुझे उनमें होना था
रक्त में दौड़ते हुए
प्राणों में घुलते हुए
नख शिख तुम्हें रंगते हुए
अन्दर बाहर तुम्हें भिंगोते हुए
कसकती रहीं तुम्हारी आँखें
आँखों आँखों में
मुझे तुममें होना था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे उनमें ही होना था
पृथ्वी को खनते हुए
जल में उतरते हुए
अग्नि को मथते हुए
हवा को भांजते हुए और
आकाश को गुंजाते हुए
दिन और रात में
सुबह और शाम में
सोते और जागते हुए
सपनों में भागते हुए
मगर कहाँ था वहाँ मैं
काल के आदमखोर रस्तों में
भटकता जाने था कहाँ मैं
रोक तुम सके नहीं
रुक मैं सकता न था
चलना ही चलना था
जहाँ कोई रस्ता न था
वातचक्र में उड़ता
जैसे अनादि से
हाँफता घिसटता मैं
जैसे अनन्त तक
तेरी इन आँखों तक
जैसे यात्रा के अन्त तक
कन्त तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वार हैं तुम्हारी आँखें

द्वार हैं तुम्हारी आँखें
अपनी आँखों की राह ही
तुम निकलते हो
मेरे शिकार के लिये
ज्वार के तेवर से
हहराते हुए
भहराते हुए
हुमकते हुये
झमकते हुये
अप्रतिहत आवेग से
संघनित वेग से
तुम उछलते हो
चलते हो
मेरे शिकार के लिये
जीतते हुय हार के लिये
झपटते हुए मनुहार के लिये
तोड़ते हुए प्यार के लिये
जोड़ते हुए प्रहार के लिये
राधा श्याम कर मुझे
थाम थाम कर मुझे
छलते हो
मचलते हो
मेरे शिकार के लिये
पोत प्रोत कर यूँही
जोत जोत कर यूँही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओत प्रोत कर यूँही
ज्योत ज्योत कर यूँही
चूर चूर कर मुझे
थूर थूर कर मुझे
मलते हो
आग मलते हो
मेरे शिकार के लिये
ऑखों के द्वार घुसे
दावानल पार घुसे
हा हाहाकार घुसे
मेरे आरपार घुसे
मेरे लय के लिये
महाप्रलय के लिये
हलते हो
भीतर हलते हो
मेरे शिकार के लिये
मार मूर कर ऐसे
झार झूर कर ऐसे
हार हूर कर ऐसे
गार गूर कर ऐसे
गलते हो
जहर उगलते हो
मेरे शिकार के लिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहते हैं सयाने

कहते हैं सयाने
पाँच हैं तन्मात्रायें
गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द
आंखें हैं इनमें से रूप के लिये
रूपास्वाद के लिये
रंग प्रकाश के लास्य के लिये
लावण्य के हास्य के लिये –
मगर
आज जाना राज
ओ अलबेले आखेटक !
तुमने तो खिड़की खोली है मेरे अन्दर
यह राह खोली है मेरे अन्दर
कि धंस सको मेरे भीतर
उखाड़ सको सारा झाड़ झंखाड़
झाड़ सको धूल धक्कड़
रगड़ सको काई काई
गरगोज सको मुझे
भीतर भीतर
हौंड़ेर कर
फेंक सको मुझे बाहर
मेरे अन्दर से
और फिर प्रवेश कर सको
धंस सको मेरे अन्दर
उड़ेल सको अपने को
उतर सको पूरा का पूरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे बेदखल कर
दाखिल होने के लिए
चीरे ये सलोने छिद्र
फिर लगा दिया श्वेत ढक्कन
उसमें डालीं काली पुतलियाँ
शालिग्राम सी
स्वयं सी
जताने के लिये
अपना अधिकार
जैसे मोहर लगायी अपनी
यह भी कि
शुभ्र पवित्रता ही है
तुम्हारा आवास्य
फिर किया उसे तरलायित
बताने के लिये अपनी रसमयता
ओ रसराज !
आँखें मेरी
तुम्हारे लिये
अपनी आँखों से ये
जब हलो
चलो
मेरी आँखों से
गति जने न दाह
आज जाना राज
भूल मेरी
जो अनधिकार
रूप पिया इनसे
माटी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उतरने देना था मुझे
राह देनी थी तुझे
इन आँखों की राह
तुम्हारी आँखों से होकर
तुम्हें गुजरने देना था
जाने देना था गन्तव्य की ओर
मगर पूछ सकूँ मैं क्या तुम से
क्या है गन्तव्य
कहाँ जाना तुम्हें
प्रियतम तुम
स्वयं ही तो परम प्रारम्भ
परम धाम
और तुम्हीं तो हो
परम लक्ष्य–गन्तव्य
तुम्हारी आँखों से आकर
मेरी आँखों से होकर
तुम्हें तुम तक ही जो जाना था
तो जाना क्यों
ओ यात्री
यह आना क्या!
जाना क्या!
तुमसे मुझसे होकर
तुम तक यह आना क्या!
जाना क्या!
पाना क्या!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये तुम्हारी आँखें

ये तुम्हारी आँखें
लगी थीं जैसे अनादि से
मुझ पर
बसा था मैं उनमें
निहारती थीं मुझे भरी भरी
पल पल अपलक
अजाना बेपरवाह
मेरी आँखें भटकती रहीं
तुम्हारे रचे संसार के सपनों में
बिसार तुम्हें
पछाड़ तुम्हारी उन आँखों की ताब –
जनम जनम तो लग गये तुम्हें
बटोरने में मेरी आँखें
और आखिर एक दिन
आखिर एक पल
आँखें आन पड़ी
मिलीं दो जोड़ी आँखें
पहले सब जैसे बेध्यान
मगर रह रह
मिलती रहीं
जुड़ती रहीं
घुलती रहीं
धीरे धीरे
छँटती गयी
बीच की धुन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

और
और तीर सी
आ धंसीं मेरी आँखों में
तुम्हारी आँखें
आखिर
पकड़ ली गयीं
जकड़ ली गयीं
मेरी आँखें
और फिर राह बनालीं
तुम्हारी आँखों ने
मेरी आँखों से
उतरने के लिये मुझमें
खींचने के लिये मुझे
मुझसे बाहर
लगा
जन्मों का इतिहास
आज जाकर सिरे लगा
पूरी हुई कहानी मेरी
लेकिन नहीं
और भी होना था
बहुत कुछ
जाने क्या क्या
क्या क्या है तुम्हारी तिलिस्मी जेब में
कौन जानें तेरे सिवा
जुड़ने थे कई और कथानक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी कहानी में
(या मनुष्यता की कहानी में
क्योंकि यही तो असली कहानी है
हर मानव की—हर जीव की)
पहले तो तुम अपनी आँखों में थे
पूरम्पूर
पूरी ऊर्जा से भरपूर
छूटते हुए उनसे
परम आवेग से
लपकते हुए
लहकते हुए
भेदते हुए
मुझे
मेरी ओर
इकतरफा थे
आवेग और गति
मेरी ओर –
एकमेक होने के बाद
तेरी मेरी आँखों के –
ऊर्जा प्रवाह हुआ दुतरफा
जकड़ी मेरी आँखों की राह
उतरे तुम झपाक से
विद्युत की तरह
मुझे लिया और ले उड़े वापस
अब फिर आवेग और गति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों हुए इकतरफा
मगर दुहरा होकर
मेरी–तुम्हारी दोनों की दिशा थी अब
तुम्हारी ओर वापस
या कहो इकहरा
क्योंकि मैं कहाँ था
तुम्हीं थे अब
मुझ से तुम तक
बस तुम थे
मुझे जीतकर
मुझमें होकर
मुझे लेकर
मुझे पीकर
लौटते हुए
और लो
अब तुम वापस
आ गये अपने आप में
मगर फैले हुए मुझ तक
वही हैं तुम्हारी आँखें
मगर कहाँ हैं वही
अब निहारती हैं वे
मेरी ओर नहीं
पीछे की ओर
स्वंयं में
अन्दर की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रष्टा की ओर
अब हम दोनों हैं सहयात्री
दोनों की दृष्टि अब एक ही ओर
तुम्हारी ओर
उत्स की ओर
मूल की ओर
सर्वकारण की ओर
सर्वकारणकारण की ओर–
मुझे बसाया अपनी आँखों में
बसाने के लिये खुद को
मेरी आँखों में
और खुद ही आन बसे
अपनी आँखों में
मेरे साथ
ओ वासुदेव!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुमने शायद पूरी कर ली महायात्रा

तुमने शायद पूरी कर ली महायात्रा
स्वयं से स्वयं की
अब हो तुम
स्वयं में
स्वयं को पार करते हुए
भेदते हुये
स्वयं में प्रवेश करते हुए
गति करते
स्वयं से स्वयं में
अब खिंच रहा हूँ मैं
दो जोड़ी आँखों की राह
तुममें
और गहरे
और गहरे
इस कर्षण ने ही बनाया तुम्हें
कृष्ण
जो खिंचा तुम्हारी ओर
जो बढ़ा तुम्हारी ओर
बहा तुम्हारी ओर
डूब गया
तुममें
बचा कहाँ वह
बचे तुम्हीं बस
या फिर निमज्जन की क्रिया –
फिर डूबता हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सतत
अनन्त तक तुममें
कौन है मेरे सिवा!
बचा मात्र मैं
निमज्जन की गति में – त्वरा में
मोहन!
यह जो त्रिभुवनमोहन आकर्षण है तेरा
वह अलभ्यतम आभा है तुम्हारी आँखों की
तुम्हें देखती
तुममें डूबती
डूबती जाती
भेदती तुम्हारी आँखों में
तुम खींचते हो सकल सृष्टि को
इन्हीं स्वयंभेदी आँखों से
आत्ममुग्ध इन्हीं आँखों से
तुम मोहते हो मोहन!
आत्मद्रष्टा इन आँखों की सर्वाकर्षी ऊर्जा ही
है बनी तुम्हारा सम्मोहन
तुम्हारे नहीं हैं
तुम्हारा रस, तुम्हारी ऊर्जा और तुम्हारा आनन्द
तुम्हारी इन आँखों के हैं
आँखें बिखेरती हैं ऊर्जा
जीव की चार बटा पाँच ऊर्जा
आँखों की ही तो है –
चक्षुविकीर्ण ऊर्जा
यह ऊर्जा बहती है
दृष्टि पथ पर
सृष्टि की सारी ऊर्जा का दृष्टिपथ है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहिर्मुख – बाहर की ओर
केवल ओ स्रष्टा!
तुम्हारा दृष्टि पथ ही है
अन्तर्मुख – अन्दर की ओर
स्वयं की ओर
शायद इसी कारण
बाहर से भीतर की ओर
तुम्हारे ऊर्जा पथ के कारण ही शायद
तुम हो सर्वशक्तिमान!
बाहर है सर्व
भीतर हो तुम
बाहर जब गति करता है भीतर
सर्व गति करता है भीतर की ओर
तुम्हारी ओर
और सर्व के साथ
सर्व की ऊर्जा भी
सतत है यह प्रक्रिया–शाश्वत
सर्व है अनन्त
इसीलिए तुम्हारे भीतर संचित
ऊर्जा भी है अनन्त
अस्तित्व की राह है तुम्हारे भीतर की ओर ही
तुम्हारी ओर
और इसी कारण शायद
डूबा तो जा सकता है तुममें
अभेद में भेद के साथ
साधा नहीं जा सकता
कैवल्य
आत्म कैवल्य–स्वयं का एकान्त कैवल्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैवल्य पर अधिकार तो तुम्हारा ही है
ओ प्रिय!
साध्य है बस
प्रिय कैवल्य–
तुम्हारी आँखों में डूब
तुममें समा जाना
तुम्हें पा जाना
तुम्हारा होकर
तुम हो जाना
तुम होना
तुम्हारे लिये
पल पल जीना तुम्हारे लिये
सर्व त्याग तुम्हारे लिये
आत्म त्याग तुम्हारे लिये
प्रति पल ऐसे मेटना स्वयं को
तुम्हारे लिये
कि प्रति पल जीने लगो तुम
मुझमें मैं बनकर
तुम्ही उठो, तुम्ही चलो, तुम्हीं बिरमो
तुम्हीं साँस लो पल पल
मुझमें बसकर
यह सर्वार्पण
यह आत्मार्पण
ही है साधना
और सिद्धि
यही है उपासना, अर्चना और
पराभक्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह लीला क्या है

यह लीला क्या है
किसकी है यह लीला
यह संसार
शायद तुम्हारी आँखों का ही
खेल है यह सब
ऊर्जा की रचना ही है यह सब
और ऊर्जा विकीर्ण करती हैं
तुम्हारी आँखें
जब दृष्टि पथ है बहिर्मुख
ऊर्जा का विकिरण बाहर की ओर
और संसार का सृजन –
जब दृष्टिपथ है अन्तर्मुख
ऊर्जा का संचयन भीतर
और तुम्हारे स्वरूप का प्राकट्य
बाहर संसार
और भीतर हो तुम
यूँ देखो तो
एक ही है ऊर्जा
तुम्हारी आँखों की
बाहर बह संसार बने
भीतर तुम्हारा स्वत्व
देहरी तुम्हारी आँखें
भीतर और बाहर के बीच
पलकें कपाट
तो लीलाधर!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल क्या है ?
तुम्हारी आँखें ?
और सर्वेश !
बाहर तो है ही
भीतर भी है क्या
तुम्हारी लीला ?
मगर भीतर तो हो तुम
तो क्या
तुम .... ?
कोई कहे शायद
संसार सपना है
तुम्हारी आँखों का
और
तुम
अपनी आँखों का जागरण
परम जागरण
अगर यह सपना भी है
तो है बड़ा सुन्दर
तुम्हारी जागी आँखों का सपना
तुम्हारा जो है
और है
जागी आँखों का सपना
तुम हो ही परम जागरण
परम चैतन्य
तुम्हारा सपना भी तो होगा
परम जागरण का ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब घूमता है दृष्टि पथ

जब घूमता है दृष्टि पथ
तुम्हारी आँखों का
वापस लौटता
तुम्हारी ओर
मुझसे होकर
मुझे उझीलकर
बटोरकर
तुम्हारी ओर
तुममें मुझे
उड़ेलता हुआ
तुम जैसे
पूरे होते हो और और
फिर फिर
क्यों
न अचकचाओ
तुम भी तो रीते हो
तुम्हें पूरता है
मेरा प्रेम
ओ पूर्ण !
मैं भी तुम्हें भरता हूँ
जब गिरती है मेरी राग–सरिता
तुम्हारे महासागर में
जब लय करता है मेरा स्वत्व
मेरा निजत्व
मेरा मैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुममें
ओ भर्त्ता!
टूटता है मेरा अणु
होने के लिये महीयान
ओ अखण्ड!
तुम्हारे अन्तर के अन्तराल में
फूटता है मेरा अहंबीज
उगने के लिए
सतत वर्धमान
ओ विराट!
बढ़ने लगता हूँ मैं तुम्हारे साथ
फैलने लगता हूँ मैं
ओ विष्णु!
तुम्हारे साथ तवरूप होकर
व्यापने लगता हूँ
दसों दिशाओं में
ओ विभु!
ओ सर्वरूप! सर्वाकार!
तुममें घुलकर
तुमसे मिलकर
तुम्हारे साथ
धारण करने लगता हूँ सर्वरूपता
सर्वाकार होकर
ओ ब्रह्म!
किन्तु कहाँ हूँ मैं
कहाँ बचा हूँ मैं
तुममें घुलकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
प्रभु तेरी आँखों में

तुम ही बन गया हूँ
मैं अल्प
बन गया हूँ भूमा
मुझसे मुक्त होकर
मैं हूँ सर्वमुक्त
मुझमें प्रवेश कर
तेरी आँखों की रश्मियों ने
साफ कर दिये सब जाले
कोनों–अँतरों के
प्रकाश ही प्रकाश
तानकर खींचकर
पूरकर निजामृत से
तेरी आँखों की
राग रश्मियों ने
तोड़ डालीं सब गाँठें
सब बन्धन
भिद गयीं सब ग्रन्थियाँ
खुल सका हूँ आज
पहली बार
ओ निर्ग्रन्थ!
कुण्ठा तो रिक्तता है
अभाव है कुण्ठा
तुम्हारी पूर्णता ने
ऐसे भरा मुझे
गिरी मेरी कुण्ठा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओ वैकुण्ठ!
यद् वै अल्पम्
जो अल्प है
वही तो है दुःख
तुममें डूबना
सर्वरूप होना था
तुमसे भरना
सर्व से भरना था
तुम होना
भूमा को करना था
आत्मसात्
और भूमा ने सोख लिया सारा अभाव
निचोड़ ली सारी अल्पता
और मैं गिरा
महासमुद्र में आनन्द के
आनन्द जो सर्व है
भूमा है
और है परम
मगर कहाँ हूं मैं
कहाँ बचा हूँ मैं
परम में कहाँ बचे
अहं
ऐसा गारा मुझे तुमने
ऐसा दुहा मुझे तुमने
ऐसा पिया मुझे तुमने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसा रमण
ऐसा परिरम्भण
कि दुई गई भूल
मुझे समोकर
तुममें मुझे समाकर
कि मैं बना तुम
कि तुम ही तो बचे
तुम ही तुम
ओ प्रिय!
केवल तुम
प्रिय कैवल्य
किन्तु
किन्तु खोया कहाँ मैं
क्योंकि
जो तुममें घुला
मिला
लीन हुआ
तुम बना
तवरूप हुआ
वह मैं ही तो था
मैं ही तो हूँ
तुममें विसर्जित हुआ
तुममें डूबता हुआ
तुम्हारे बोध में
तुम्हारे भाव में
तुम्हारे आनन्द में
तुम्हारी बाँहों में
तुम्हारी आँखों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी लीला तो आँखों की है

सारी लीला तो आँखों की है
मेरी आँखें देखती हैं बाहर की ओर
और
तुम्हारी आँखें अन्दर की ओर
देखो तो जरा–सा ही फर्क तो है
बस देखने की दिशा का
और फर्क हो जाता है
मेरे और तुम्हारे जितना
क्या है यह
तुम्हारे प्रेम के सिवा
कि घुमा लेते हो यह दिशा
देखने लगते हो बाहर की ओर
मेरी ओर
कि तुम पकड़ सको मुझे
मेरी आँखों को
और घेरकर ला सको उन्हें वहाँ
जहाँ होना है उन्हें
जैसे तुम घेर लाते हो गोपाल!
अपनी गौरी को–श्यामा को
या किसी और गऊ को
वत्सल–प्रेमल –
महत्तम के शिखर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघुतम के गर्त्त तक
तुम यात्रा करते हो
सिर्फ मेरे लिये
ओ प्रभु!
दे सको तो दे दो वह हृदय
जो सहेज सके
तुम्हारी इस करुणा को
इस अहैतुक प्रेम को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

आँखों की यह बहिर्मुखता ही है संसार

आँखों की यह बहिर्मुखता ही है संसार
बाहर है स्थूल
बाहर है प्रकृति
बाहर है प्राकृत संसार
तुम्हारा राग तुम्हें बाहर लाता है
तुम्हारी आँखों से
मुड़ता है तुम्हारा दृष्टिपथ
बाहर मेरी ओर
राग होता जाता है सघनतर
और आँखों का अनुराग गहनतर
तुम यात्रा करते हो मेरी ओर
करीब और करीब
प्रकाश के साथ
तुम्हारा श्रीरूप भी अधिक सघन और अधिक प्रकाशमान
हमारी भाव आँखें भी निहार पाती हैं
तुम्हारा वह अप्राकृत सर्वमोहन श्रीरूप
किन्तु
जब लौटती हैं तुम्हारी आँखें
भावबोध रूप हमें समेट कर
तुम्हारी ओर वापस
और वापस होता है तुम्हारा दृष्टिपथ
अन्दर की ओर
तुम्हारा श्रीरूप बिटुरने लगता है सूक्ष्म और सूक्ष्मतर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु तेरी आँखों में

जाने लगते हो तुम गहरे और गहरे
स्वयं में अन्दर और अन्दर
मेरे साथ
और तुम्हारा श्रीविग्रह भी
जैसे दूर–दूरतर
अनुग्रह विग्रह ही है
शायद तुम्हारा श्रीविग्रह
ओ कृपामूर्त्ति!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

जमीन पहले भी मुझे खींचती थी

जमीन पहले भी मुझे खींचती थी
जैसे आज
नाभि पकड़कर
ढाह देती है
सुला देती है मुझे कींच में काँदों में
जकड़ लेती थी मुझे
नसों की बेड़ियों में
साँसों की भारी हथकड़ियों में
जैसे आज
पिये सी
डूबी डूबी आँखों
लटपटाकर उलाट देती हैं
लिथड़ देती हैं मुझे निढाल
बेजान बेमानी सी
जमीन पहले भी मुझे
झुला देती थी
गर्दन तक डुला देती थी बेहाल
जैसे आज
माटी माटी
रेत रेत
भींजी बोदी आषाढ़ की पगडंडी सी
मेड़ों पर चलते पैरों से धसकी घास सी
खींच लेती थी मेरी पाँखें
हवाओं की
चुआ देती थी मुझे आसमान की निचली परतों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बादलों की शाख से
महुआ के फूलों की तरह
राहगीरों के जूतों के नीचे पिंचने लिये
जमीन कल भी थी
और आज भी
मैं कल भी और आज भी
आज भी खिंचना है
धसकना है
लिथड़ना है
टूटना है तड़कना है
आसमानों का बोझ है
और जमीन की जकड़
मगर आज हो तुम
और तुम्हारी आँखें
तुम मुझमें
आज मैं तुम्हारा हूँ
तुम मैं
बस तुम
तुम ही तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

ले लो सब मेरा

ले लो सब मेरा
लेलो मुझे
लेलो मेरा तन
तन है अगर माटी
तोड़ो कूटो चूर–चूर कर दो मुझे
गूंथ लो जैसे चाहो
और फिर
गढ़ लो मुझे जो चाहो
घट
सजने के लिये तेरे द्वार कलश बन
सुराही
जुड़ाने के लिये तुम्हें तपन में
कोसा
होठों से लग बुझाने के लिये प्यास
या दिया
जलकर भरने के लिये रोशनी तेरे आसपास
तन है बाँस
तो सुखा लो मेरा प्राणरस आखिरी बूँद तक
काटो–छीलो–रगड़ो
फिर जला दो मेरी गाँठ–गाँठ
मिटा दो मुझे पोर–पोर
भेद दो मुझे छेद दो
फिर
फिर कभी
रस कदम्ब के नीचे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीतन में डाल तीन–तीन बल
या यमुना किनारे
बैठ सुर मेड़ पर
भरो अमृत श्वाँस मुझमें
टेरने को वंशी
तन है यदि वसन
तो लिपटने दो श्रीअंग में
स्वर्ण–मणि–माणिक
तो सजने दो आभूषणों में
चर्म तो बनकर उपानह
चरणों में लगने दो
तरल तो बनने दो जमुनजल
वायव्य तो बन पवन
बसने दो साँसों में
ले लो मुझे
जैसे भी हो
जैसा भी चाहो
मुझे स्वीकार कर लो
मुझे अंगीकार कर लो
तन है अगर अगन
तो बनने दो
श्वासोत्ताप
बनने दो निज
काम अगन
तन यदि है आकाश
तो
बना लो निज
अन्तर्आकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

कपोलों, कर्ण गुहरों, नासाछिद्रों और
सारे श्रीअंगों के भीतर का
अन्तर्आकाश
चलने दो साँसों को मुझसे होकर
तन है अगर धरती
तो बिछालो मुझे
पर्यंक की तरह
अगर अम्बर
तो ओढ़ लो मुझे
शीतऋतु के चादर की तरह
ले लो मुझे
जैसे भी हो
जैसा भी चाहो
मुझे स्वीकार कर लो
मुझे अंगीकार कर लो
गह लो थाम लो
दबा दो उठालो
बटोर लो बिछालो
फूंक लो फेंक लो
फुला लो फूल सा
घुलालो ताम्बूल सा
ओढ़ लो उघाड़ लो
खींच लो तान लो
ले लो मुझे बस
जैसे भी चाहो
मुझे स्वीकार कर लो
मुझे अंगीकार कर लो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आये मुझमें

आये मुझमें
आँखों की राह
लेने के लिये
मुझे
अपने साथ
तो लिया क्यों नहीं
ले लो सब मेरा
ले लो सब
ले लो मेरा मन
मन अगर मोम है
गला लो इसे
बहा लो
अपनी धार में
मन पत्थर है
तो थूर लो
चूर चूर
धूरा बनाकर उड़ा लो
या चूरा बना बिखेर लो
अपनी क्यारी में
अपने फूलों की जड़ों में
या अपनी राहों में
पद्मरागमणि रज के साथ
किरकिराऊँ अगर मैं
चरणों में हाथों में
आँखों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेंक दो मुझे
लेकिन कहाँ फेंक सकोगे
कुछ भी कहाँ है तुम्हारे पास
फेंका हुआ–सा
चलो डाल दो कहीं
अपने मन के किसी बियाबान में कहीं
यदि कहीं हो वह तो
(मगर कहाँ होगा वह
सब तो तुम्हारे पास है
चिन्मय
चिदानन्दमय
सब कुछ
फिर ओ सर्वेश्वर!
क्या अरज करूँ मैं तुमसे
सर्वसमर्थ!)
मन है फूल
तो सजालो
अपने पुष्पाभूषण में
कुण्डल मुकुट या कण्ठहार में
ओ वनमाली!
या लपेट लो
श्रीराधा के संग क्रीडा के
कन्दुक में
या गहने दोगे सान्निध्य
अपनी नासामणि का ?
या रहने दो मुझे वृन्त पर
तुम्हारे रस्ते में झूलते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवन की उमंग तरंगों पर
मन है अगर माहुर
तो पड़े रहने दो मुझे
महाजलालय के अतल गर्त के
निःस्पन्द विजन में
कल्पों तक
फिर कभी देवासुर संग्राम के बाद
सागर मंथन में निकलने के लिए
और तब अपने महादेव रूप में
धर लेना अपने कण्ठ में
नील नील
ओ श्याम!
और मन है यदि नवनीत
तो फिर क्या
लेना मुझे श्रीमुख में
कण्ठ में उदर में
और कपोलों पर ग्रीवा पर
श्रीवत्स पर वनमाल पर
कटिकाछनी पर
मटके में – मटके के बाहर
धरा पर
छपछप पाँवों के नीचे
आँगन की कींच में
फूटी मटकी के अन्दर बाहर
वानरों के
गोप बालों के
गालों से लगे तुम्हारे होठों और जीभ में
ब्रजा नाओं की अंधेरी कोठरियों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कई कई ओखलियों के ऊपर से
तुम्हारी बंहियों से चूते
सखाओं के ऊपर उठे खुले मुँह में
या फिर
पकड़े जाने पर
कनेठी के लिये उठी माँ की उंगलियों के नीचे
कपोल चाटती लम्बी खिंची जीभ पर
ओ रे माखनचोर !
या
या फिर
या फिर बरसों बरस
प्रातः सायं तुम्हें अधीर अगोरती
नित मही गयी मटकी में
ओ मथुरावासी भ्रमर !
और
और कुछ न हो
निरा मन ही है यदि यह
तो
तो भी तो
इसमें बस जाना
ओ मन मोहन !
क्योंकि तुम्हारा ही तो है यह
और
तुम
तुम भी इसी के तो हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओ लुटेरे!

ओ लुटेरे!
लूट लो मुझे
सम्पूर्ण सर्वांग
जब पैठ आये मुझमें
सेंध लगा आँखों से
मत छोड़ना तिनका भी–कन भी
ले लो मेरे प्राण
प्राण है वात
तो चूस लो
कर लो मुझे निर्वात
थम जायें जिसमें मेरे
सारे संवेग–सारे आवेग
खो जाये सब हलन चलन
अन्तर का
बुद्धि हो निःस्पन्द
अन्तर बाह्य सबको एकमेक करता
उतर आये मौन
परम मौन
जले जिसमें निष्कम्प
दिया तेरे ज्ञान का
प्राण है यदि रस
तो पी लेना पूरा
प्याले की आखिरी बूँद तक
करके मुझे निःस्व शुष्क
शीत की ठिठुरती भोरों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल सकूं सूखे कण्डे सा
गरमाने को तेरी नरम ठंडी हथेलियां
और मिल सकें मेरी रस बूंद
तेरे रसोदधि में
उठे एक लहर मेरी भी
तेरी उत्ताल भाव ऊर्मियों में
चमके मेरी रस बूंद
नमक कन बनकर
तेरे कपोलों पर किसी कल्पान्त में
छलके कभी कहीं
श्रीराधा का स्वागत बन
तेरी आँखों में
प्राण है मकरन्द तो
सजे जब रासमण्डल
और विनती करें सारी वनस्पतियां विधाता से
'प्रभु आने वाले सारे कल्पों में जितने भी फूल
लिखे तूने हमारी शाखों पर
खिला दे सब आज इस प्रेमोत्सव की महावेला में
स्वागत में श्याम सुन्दर के'
एक कली मेरी खिले
हिले साँवरे के
नृत्यावेगी लहरों के साथ
मिले लहराते बलखाते पीताम्बर के संग
प्राण है तरंग
तो अनंग की उमंग बनूँ
महकूँ श्याम अंग में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संग सखियों के
प्रीति के रंग में
प्राण है कुहुक तो
श्रृंगार बनूँ कोकिल कण्ठ की
कूदती मधुवन की अभिसार वीथियों में
प्राण है सुर
तो बनूँ वंशीरव
सखियों के आवाहन की
प्राण है पराग तो बिखर जाऊँ
पद्मराग मणि सा
कुन्जों में–निकुन्जों में
निभृत निकुन्जों में
पवन के रोम रोम में
वृन्दावन रज के कन कन में
प्राण है यदि तड़ित
तो चमकूँ तुम्हारे दर्शन के पल
विशाखा की आँखों में
दमकूँ चित्रा के कपोलों की लाली में
छमकूं चम्पकलता की पाजेब में
प्राण है राग तो
तो महकूँ बन वृन्दावन
है यदि अनुराग तो
बह जाऊँ यमुना बन
प्राण है वितान
तो तन जाऊँ आकाश बन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महारास नर्त्तन में
प्राण है सन्धिनी
तो बन जाऊँ ब्रजमण्डल
संवित् तो
तो देखूँ जित श्याममयी
आह्लादिनी तो
कैसे कहूँ
क्या कहूँ
कहने को बचा ही क्या ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झोंके की तरह अन्दर आये

झोंके की तरह अन्दर आये
आँखों की राह
और आँधी की तरह
खींच लिया मुझे
सर्वांग सर्वांश
तो तन की तरह
मन, प्राण की तरह
ले ही लो मेरी आत्मा
चुभता है निजत्व अब
डंक की तरह
निजता की तमक ने
तेज ने–त्वरा ने–तिग्मता ने
बनाया आत्मवान्
मगर जाना जब तुमने अपनाया
अपना बनाया
अपने में ले लिया
कितना टीसता है यह डंक
भाले की नोंक सा छेदता है
आरे सा रेतता है
छुरे सा चीरता है
आसमान में खिंचे तम्बू सा
धंसकता है
बड़ा दुःख देता है अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब विसर्जित होने दो इसे
आत्मा है यदि बाधा
हमारे तुम्हारे बीच में
तो दूर कर दो इसे
अवरोध
तो गिरने दो जर्जर मकान की तरह
परदा
तो हटने दो इसे
क्यों बचे यह
महामिलन की माधुरी में
उज्ज्वलतम विमलतम रसमयतम
ओ प्रियतम!
है मेरी पहचान
तो मिटने दो
पहचान बस तेरी रहे
मैं तो बस बनूँ तेरी पहचान
है तुम्हारा सृजन
तो संवरने दो
रूप भरने को अपना
इस प्रेम पात्रमें
अप्रतिहत
अनिरुद्ध
सतत
तुम बन निखरने दो
संवरने दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है यदि पतवार
तो अब उतरने दो
तुम्हारे रस महासागर में
यह प्रीति नौका
उछलती कूदती
हिचकोले खाती
तुम्हारी चिदानन्द लहरों में
तुम्हारे प्रेमांक में
असीम की उंगलियां थाम
अनन्त के संकेतों पर
शाश्वत की यात्रा में
अतल की छाती पर –
है अगर पंख
तो उड़ जाने दो छिटककर
क्योंकि अब मुझे तो उड़ना है
तेरे पंखों से
तल्लीन हो तेरी उड़ान में
यह तनाव
यह खिंचाव
अब थहरने दो
बिरमने दो
ठहरने दो
खुलने दो मुझे अब
अपनी बाँहों में
खिलने दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्लथ शिथिल निढाल क्लांत
मुझे अब विश्राम लेने दो
अपनी साँसों के साथ
अपने दृष्टि पथ में
अपने साथ
अपनी आँखों के साथ
उनकी रोशनी में
करुणा की – प्रीति की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घोर लो मुझे

घोर लो मुझे
यशोदा के दूध और मिश्री की तरह
कान्हा तुम्हारे लिये
मिला लो मुझे
दही में मिश्री की तरह
तुम्हारे कपोलों के श्रृंगार के लिये
नन्द बाबा संग भोजन करते अंकमें
डाल लो मुझे
मक्खन में मिश्री की तरह
दूध वाली दंतुलियों के नीचे
कुट कुट कट
चुभलाने के लिये
दबा लो मुझे जिह्वा के नीचे
श्रीराधा के श्रीमुख में पहुँच
निःस्पन्द मीठा मीठा घुलने के लिये
जब विस्फारित नैन तुम्हारा रूप पी रहे हों
या तुम्हारे मधुर बैन
बस कान्हा
मुझे मिश्री बना लो
उजली सख्त मिश्री
जो आरपार दिखे पानी की तरह
जरा जरा चुभे तुम्हारे मुँह में
जरा जरा रस दे
चिटखते हुए
घुलते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नील नील

नील नील
घन श्याम!
मिलने दो मुझे
स्वयं में
सघन घन मेघों में मिले
गुबार
मेघवर्णी
श्याम मनोहर!
मिलने दो मुझे स्वयं में
जैसे मिलने को हो
झमाझम वृष्टि में
भाप का टुकड़ा
प्रेम सिन्धु!
मिलने दो अँकवार मुझे
जैसे खुल फैल पसर मिले
आकाशी बूँद
सागर के खुले वक्ष से
लुटने के लिये
मिटने के लिये
झाँवर झाँवर
गहन मिलन रस साँवर साँवर
प्रीति गागर गागर
महासुख आगर आगर
श्याम सागर सागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रियतम!

प्रियतम!
मिला लो मुझे
स्वयं में
जैसे चन्दन मिले
पानी में
पानी पानी
साँवरे!
मिला लो मुझे
स्वयं में
प्रभात पुष्प मिले
धरती अम्बर से
लाल लाल
करुणा वरुणालय!
मिला लो मुझे
स्वयं से
जैसे बीज मिले
अन्धेरी मृदा पर्तों से
भूगर्भ में
फूटकर उगने के लिये
अंखुआ अंखुआ
गोप सुन्दर!
मिला लो मुझे स्वयं से
जैसे पर्वत शिखर मिले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षितिज से
शुभ्र श्यामल श्यामल
जैसे हहराती नदी
गिरे गिरि द्रोणियों से
फैल मिले धरती से
गिरिपद प्रान्तों में
मिला लो मुझे श्याम सुन्दर!
जैसे नील अन्तरिक्ष में मिले
धुँआं
नील नील

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसे

कैसे
कैसे देख सकती हैं आँखें
ऐसे अनजान
ऐसे निर्दोष
ऐसे मासूम
पीलेने के बाद मुझे पूरा का पूरा
हड़प लिया मुझे
जैसे तुम्हारा ही था मैं सदा से
गड़प लिया जैसे
वातचक्र तिनके को
सड़प
जैसे युगों का प्यासा ले पानी को कण्ठ में
और आँखें
जैसे कुछ हुआ ही नहीं
देखा जैसे कुछ किया ही नहीं
क्या करे गुफा जो
झोंका गुजरे या बवण्डर
जैसे लील ले समन्दर
छोटा सिक्का
अगर कुछ होता नहीं
तो दिखता कैसे है
अगर कुछ करते नहीं तुम
तो कर्त्ता कौन है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसे पूछूँ उन आँखों से
अबोधता सघन पारदर्शी शीशे की तरह
ढुंकी है जिनमें
अब कैसे पूछूँ
जिनसे कोई उत्तर नहीं आना
कि ये चुप खामोश निरभिलाष सी
क्या निहारती हैं उसे
जो है ही नहीं
क्या बचा है वहाँ
तुम्हारे सिवा
किन्तु
कर्त्ता ! कुछ करो
ले लो इस शून्य शेष को
अशेष
बस
तवबोध तवभाव बचे
यही छोड़ देना
रहने देना इतना
अवशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भर्त्ता !

भर्त्ता !
भर जाना मुझे
मन्दिर में प्रणव ध्वनि की तरह
कलश में उजली धार की तरह
बांसुरी में स्वर की तरह
रिक्त घाटी में बाढ़ की तरह
भर जाना मुझमें भर्त्ता !
नासा में श्वांस की तरह
किसान की डेहरी में धान की तरह
मिलनोत्सुख प्रेमी के मुँह में पान की तरह
बिरहिन राधा के मन में आस की तरह
भरना मुझमें भर्त्ता !
फुलवारी में भोर की ओससनी सुगन्ध की तरह
तुलसी चौरा पर सांझ जले दिये की उजास की तरह
भक्त गायक के हियरे प्यास की तरह
तेरे इस प्रीतगीत के पीरपगे छन्द की तरह
मुझे भर देना भर्त्ता !
जैसे नन्हे के लिये पकवान तलती
दादी की बूढ़ी आँखों में भर जाता है गीला धुंआ
जैसे हथेलियों पर झुके बच्चे की हल्की किलकारी से
भर जाता है पुराना कुंआ
जैसे बासन्ती उपवन का सूखा पेड़
भर जाता है ऊँचे अकेले फूल से
जैसे गाँव का छूटा घर भर जाये
अंधेरे औचक आये स्वामी के देहरी रखे दिये से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरना भर्त्ता! मुझे
जैसे पुझैया भर पाये
शिशु की पाँव लगी कींच से
जैसे समन्दर किनारे आसमान भर जाये
प्यारे के समुद्रपोत के ध्वज शिखर के दर्शन से
जैसे वृन्दावन भर जाये
गोपी के बिरह रुदन से
जैसे सूखे सावन का खेत भर जाये
भभका छोड़ती टटकी सींच से
भर्त्ता! तुम भरो मुझे
कि भर जाऊँ मैं
मुझे खोकर
कर्त्ता! कुछ करो
कि मर जाऊँ मैं
तुम्हें पाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज घास जल से भरने दो

आज घास जल से भरने दो
आज मुझे मरने दो
आज धूप छत से उतरने दो
आज मुझे मरने दो
आज हवा बिछने दो दालानों में
आज साँझ ठहरने दो आसमानों में
आज नदी नाव तक निकलने दो
आज रात भोर तक उगलने दो
आज रिस रिसकर जीवन को उगने दो
आज दिन रात यूँ ही जगने दो
आज लटकने दो आकाश की छत को
आज भटकने दो जमा हिम्मत को
आज मुझे अन्त तक बिखरने दो
आज मुझे मरने दो
आज कह दो तुम्हें ही रहना है
आज कह दो मुझे तो बहना है
आज मशाल भाल पर लिख दो
आज पाताल ज्वाल पर लिख दो
आज काटो मुझे ऊँचाई की तरफ
आज छाँटो मुझे उतराई की तरह
आज द्वार बन्द करो दीवारों से
आज पाटो मुझे अपने इश्तहारों से
आज यूँ अनन्त तक ठहरने दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज मुझे मरने दो
आज मरकर ही मैं बच पाऊँगा
तेरी आँखों में मेंहदी सा मैं रच जाऊँगा
आज मरकर तुझे मैं पा लूँगा
आज झरकर तो मैं निभा लूँगा
आज मैं तेरी राह तक लूँगा
आज शोलों पर साँस रख लूँगा
आज मैं राख राख कर लूँगा
पेड़ मैं शाख शाख जर लूँगा
अब चिता पर पाँव धरने दो
अब मुझे मरने दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे कुछ हुआ ही न हो

जैसे कुछ हुआ ही न हो
ऐसे
वृन्दावन की हरित पवन लहरियों के छोर पर
खड़े तुम
स्वर्णाभ किरणों की जगमग रचे
नीलाभ बारजे को पकड़े
घूमकर
बेआवाज जैसे अर्थहीन निहारते
गोल खुली फैली खिंची आँखों से
जैसे कुछ किया ही न हो
कभी यूँ ही जैसे
आगे पीछे हल्के हथेली बजाते
औंचक मुड़ मुड़ देख लेते
हर आवाज के साथ बेआवाज
या आवाज करते
जैसे कुछ देखा ही न हो
ऐसे कभी सर के ऊपर
कभी दायें कभी बायें से
कभी बिना ठहरे
कभी पुतलियां घुमाते गोल गोल
कभी देखते आरपार
कभी जैसे चिहुँक कर नीचे से
जैसे कुछ लगा ही न हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

ऐसे उपरले होंठ से दबा निचला थप थप
कभी होंठ करते गोल
कभी सर हिलाते से बेअर्थ
जैसे तुम न हो
हम न हों
कुछ न हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे खोये खोये से तुम

ऐसे खोये खोये से तुम
इसीलिये क्या
खोये से
चहुंओर हो तुम महकते
खुशबू से
हो मगर न हो जैसे
हो सब जगह
इसीलिये कहीं नहीं जैसे
आते हो आँखों में
मेरा भाव ही प्रकट हो जैसे
मगर आखिर कौन होता है प्रकट
मेरे भाव में
तुम्हारे सिवा
तुम्हीं तो हो
सब
सृजन के पूर्व
और बाद भी
और उसके बाद भी
तुम्हीं तो हो
सब बन के
यह सब
और यह मैं
मैं और मेरा सब
शरीर, अंग
मेरी विचारणा धारणा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

संकल्प
और कल्पना अल्पना सब
कहाँ है मेरा
कुछ भी
संकल्प कल्पना
भाव
सर्व और
उसके धारक
सब हो तुम्हीं तो
कहाँ है कुछ मेरा
मैं भी कहाँ मेरा
तुम्हारा
तुम्हारा क्या
सब तुम
इसीलिये तो
पूर्व, पश्चात् और तत्पश्चात्
सब तुम
तुम ही उतर आते हो
मेरे भाव की राह
थाम श्रद्धा की बाँह
प्रकट ज्यों मेरी चाह
यह तुम्हारा अवतरण
तुम्हारा अवदान
मैं तो तुम्हारा
बस पात्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वाधार

विश्वाधार
विश्वकारण
सर्वाधार सर्वकारण
विश्व तुमसे
सर्व तुम से
यह तो देखा तुम्हारी आँखों से
लेकिन तुम
तुम्हें भी क्या अपेक्षा है
सर्व की!
सर्व की समरसता की
सर्व के सर्वसन्तुलन के
मौन की
परम मौन की
उज्ज्वल सत्त्व के प्रकाशमय मौन की
सर्वेश्वर!
कैसे ढाँक लेता है तुम्हें
तमस् का यह
नाचीज अंधेरा
जैसे हो ही नहीं तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

समग्र में व्याप्त मौन आज

समग्र में व्याप्त मौन आज
हो उठा प्रकाशित
जैसे असंख्य सूर्यों से—चन्द्रमाओं से
अनुत्तप्त दीप्तिमान
दिखे
सर्वव्यापी प्रकाश में
ज्योतिर्मय
प्रशान्त, शीतल, कोमल
स्फुल्लिंगमय
सर्वव्याप्त
समग्ररूप
ओ विश्वरूप विश्वातीत!
फिर स्वयं को देखा
शीतल प्रकाशमय
मृदुल आभामय
त्वदीय विस्ताररूप
तुम प्रसरित स्वयं से मुझ तक
और सर्वतक
ओ सर्वमय!
फिर लपेट दिया तुमने मुझे
चित्त चक्र में
गोल गोल घूमते
भरमते मनके आवर्त्त
जागा जब
समेट लिया था तुमने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना तेज
अपने आत्मकुण्डल में
निरभ्र
प्रशान्त
सर्वातिशायी–निस्सीम
अन्धकाररूप
शीतल तमस् रूप
रूपाकार सब स्तब्ध
आज तुम्हें देखा
प्रकाश में – अन्धकार में
चिन्मय प्रकाश रूप
आनन्दमय ज्योतिरूप
परम प्रकाशित तमस्रूप
ज्योतित अन्धकाररूप
आज देखा
तुम्हारी आँखों से देखा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुमसे हटाकर

तुमसे हटाकर
आँख जब संसार पर रखी
वहाँ था
बोध
सर्वगत सर्वरूप बोध
अभेद रूप बोध
ज्योतित तरल
कोमल आभावाष्प की तरह
खुली रही आँख
और बोध जागता रहा
प्राणतेज के उत्ताप में
जागता रहा बोध
ताने रहा
खींचे रहा
जलता रहा दिया
मगर कब तक
काल सूर्य बलता ही नहीं
घूमता भी तो है
काल ने झुरा दिया प्राण रस
विश्राम चढ़ आया चेतना पर
मूर्च्छा की तरह
विश्राम बना विराम
बोध का विश्राम
जागरण का विराम
खो गया बोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्राम के वितान तले
सो गया बोध
कभी न कभी
जागरण को सोना था
बोध को खोना था
प्रभु !
इसीलिये मैंने
डाल दिये सब
बोध भी–जागरण भी
तुम्हारे चरणों में
तुम्हारी आँखों की
दृष्टि यात्रा में
अब तुम चाहो तो जागो
चाहो तो सोओ
मैं तो बस खोऊँ
तुममें
तुम्हारी आँखों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहो ते उठा लो

चाहो ते उठा लो
चाहो तो डाल दो
उपेक्षा के पंक में
चाहो तो निरख लो
रख खुली हथेली पर
चाहे तो फेंक कर
खाली कर लो हाथ
चाहो तो उगा लो
मरुवन के दूब की तरह
चाहो तो खिला लो
चाहो तो खोल लो
प्राण ग्रन्थि तक
चाहो तो डुबा लो
अन्तर सरोवर में
चाहे डूब जाने दो
संसार सागर में
चाहो तो रूप की गदेली में लोक लो
चाहो तो रस के पीताम्बर में रोक लो
चाहो तो हाथों से आँख तक उछालो
चाहो फिर पलकों में अश्रु सा छुपालो
चाहो तो हाथ धरो उत्सव की छाती पर
चाहो फिर लाड़ लड़ाओ दीपक पाँती पर
जो भी चाहो कर लो प्रियतम मतवाले
बेचो बजार याकि बाँसुरी बना ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी आँखों में

मेरी आँखों में
तुम्हें होना था
तुम्हारी आँखों में
मुझे
मगर यह कैसे हुआ
कि मेरी तुम्हारी
दोनो आँखों में
तुम ही तुम
कहीं मैं बनकर
कहीं तुम!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारा हलन चलन सतह पर

सारा हलन चलन सतह पर
सागर के
जीवन की क्रीड़ा का
मोहका द्वेष का क्षोभ का क्षरण का
कर्त्ता का क्रिया का कार्य का करण का
उद्वेग का व्रीड़ा का
भीतर गहरे
जैसे
राग नहीं द्वेष नहीं
कष्ट नहीं क्लेश नहीं
बस स्थिर सागर तल
कोई उन्मेष नहीं
मन के सीवान
कोई बॉसुरी बजाता है
लहर लहर गाता है
आँखों ही आँखों में
मधुर गुनगुनाता है
ठहर ठहर जाता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और अचानक रुक गया

और अचानक रुक गया
वह देख रहा था
मुझे
उन्हीं आँखों से
उन्हीं अनादि आँखों से
कुछ अनमना सा
खोया सा
डूबा सा
पीछे झाँकती सी आँखों से
मुंदती सी आँखों से
हवा मद्धम थी
सृष्टि का शोर थमा थमा सा
जैसे विश्व के दिनान्त पर –
साँस लेने को जैसे
मेरी ओर मुड़ा
और झुक गया
चुप रहना था उसे
हमेशा की तरह
या कुछ कहना था
अनकहा सा
झुकी झुकी सी आँख
उठी ऊपर सी
भौंहें उचकीं
हवा ठहरने को हुई
रात झरने को हुई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदय में उठी बात
भरने को हुई
गाँठ खुलने को
पात हिलने को
पर्वत की नदी
घाटी से मिलने को
धरती की नाभि में
एक कठिन मरोड़
थरथराने को
उष्ण कटिबन्धों के
गहन वनान्त
होठों खिलने को
कि
वह
अचानक
रुक गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी आँखों की राह होकर

मेरी आँखों की राह होकर
कौन सी कटार मारी है
कि अब हृदय लरजता नहीं
हृदय तल पर कैसे होते हैं
उत्ताल आन्दोलन
दावानल झपटता है
मचलता है तूफान
गरजती हैं बिजलियाँ
और उद्दाम उड़ते हैं मेघ
समन्दर हिलोरें लेता है
मगर तली पर अड़ा खड़ा है
निस्पन्द मौन
अथक शान्ति
तुम्हारी ऑखों ने
कौन सी कटार मारी है
कि अब हिलती नहीं है दृष्टि
देखती हैं आँखें
अब सीध में
पलक गिरती है पल पल
पर कोई है जो अन्दर
निहारता है अपलक
रात अब पाँव नहीं पसारती
और दिन अब होता नहीं बेध्यान
हवायें अब नहीं छोड़तीं कन्धा
और नदियाँ अब शायद ही कभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डूबती हैं घाटी में
रोशनी रहबर न रही अब
और रात अब रोती नहीं बेआवाज
सब अब सीधा सीधा है
सब अब सारा सारा
आधा है अब भी आधा
मगर पूरा पूरा दिखता है
कमाल आँखों की बीनाई का है
या उनकी तस्वीर का
कौन जाने
आँखें अब भी देखती हैं
मगर ज्यादातर आरपार
आँखें अब भी ढूढती हैं तुम्हें
रस्तों पर बार–बार
मगर पता है अब उन्हें
रस्ते में नहीं
तुम तो बसते हो आँखों के पीछे
तुम जितना हो मेरे बाहर
उससे ज्यादा हो
मेरे भीतर
मेरे पीछे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौन सी लीला है प्रभु

कौन सी लीला है प्रभु
यह तुम्हारी आँखों की
खड़े हो पार्श्व में प्रतिमा की तरह
जैसे अभी उतरेगी तुम्हारी आरती
सुन्दर सुपुष्ट अभिराम तुम्हारे अंग
कमनीय मधुर बाँकी देहयष्टि
असंख्य चन्द्रमाओं से भी कान्तिमान श्रीविग्रह
मन्द पवन लहरों में दोलित शीश का मोरछल
और चमचम पीताम्बर
हिलेंगे बस तुंम्हारे वस्त्राभूषण
खड़े रहोगे तुम निःस्पन्द मूर्त्तिवत्
ठान लिया है क्या–
जकड़ लेती हैं आंखें
पीत वसन की चन्द्राकार रेशमी लहरियाँ
आँखें तुम्हारी बनी हैं आज
लक्ष्य आँखों का
कौन से रससरवर भरे हैं
तुम्हारी आँखों के पारदर्शी आवरण के पीछे
रस सरवर या रहस्य सागर
कौन जाने
अनन्त सृष्टियों मे अकेले खड़े तुम
मेरे पार्श्व में
किस कल्प के संकल्पों में लीन हो तुम
अकम्प संकल्प
सृजन के–लीला के–रस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या करूँ मैं स्वामी
तुम लेते भी नहीं
खींचते भी नहीं
थामते भी नहीं स्कन्ध
झुकी भी कहाँ है ग्रीवा
वाम मेरी ओर
धनुष से तने
वाण अड़े
अन्तरिक्ष के समतल पर लम्ब खड़े
भू में नीलम से जड़े
तुम
तुम्हारा यह प्रतिमा अवतार
बनना है क्या इसे अर्चावतार
तो फिर
है अर्चना की अपेक्षा
अर्चना की – वन्दना की
इज्या की – नमन की
तो तुम नमन सिखाने आये ?
नाम के साथ
(धातु जो एक है नमन और नाम की)
नाम तो है नमन के लिये ही
नमन की सीख के लिये ही
नमन तो तोड़ डालता है
अहंकार के प्रस्तर
गलाता है फिर उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रवित हृदय
उठता है प्रेमोत्ताप से भाप की तरह
ऊपर
भरता है पहले कण्ठ पात्र
फिर छलकता है
आँखों की राह
बरसने के लिये
भदवारी की बरसात–
किस लीला की
रचना योजना छुपी है
इन पल पल झपकती पलकों के पीछे
न आगे चलतीं न पीछे
आगे पीछे के निरायामी सन्धि विन्दु पर
तुम्हारी अगतिमान दृष्टि
कितनी मधु सृष्टियाँ सिरजेगी
और संहारेगी कितने हृदय यूथ
कौन जाने
इन आँखों के सिवा
आँखें जो अडोल हैं
आँखें जो बस झपकती हैं
आँखें जो बस निहारती हैं
अबोध शिशु की तरह
आँखें जो आँखें हैं
तुम्हारी आँखें
या तुम!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम ऐसे उतरते

तुम ऐसे उतरते
आँखों की राह
जैसे उतरे सूरज
भोर की स्याह कन्दराओं से होकर
झपकते हुए
उजास लपकते हुए
आगे और आगे लहकते हुए
गहरे और गहरे थमकते हुए
जैसे झरे झरना
कांच सा चिनकते हुए
गोल दूधिया चमकते हुए
ऊँचे क्षितिज पर उजियारा उभरते हुए
तरल नीलम सा झरते हुए
हाहाकार घाटी में नीचे उतरते हुए
गहरे नीचे श्याम पत्थरों पर चूर चूर हीरा छिटकते हुए
बहुल विस्तृत श्वेत रस धार ऊर्ध्वाकार लटकते हुए
गिरिपद के पाषाणी अंक में पलभर शिथिल क्लान्त अंटकते हुए
संचित रस भार दाब ऊर्जा से भर लबालब
नीचे और नीचे निःशब्द सरकते हुए
मैदानी गहन वन प्रान्तों में औंचक ओझल होते हुए
तुम ऐसे उतरते
आँखों की राह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूरज के खींचे
जल चढ़े ताप के रथ पर सवार
भाप भाप हो
हवाओं में घुलमिल
पवन पंखों में झिलमिल
उत्ताप के आवेग से
सूर्य खिंचाव के संसक्त संवेग से
हवा की चादरी पर्तों को चीरता
ऊपर उठता
हुलास से उमगता फैलता
उल्लास से उफनता
पसीना पसीना
ऊँचे पथ के बर्फीले झोंकों में जुड़ाता
ठण्डाता गीला गीला
जमता हुआ
जल जल जुल जुल बोझिल झिलमिल शिथिल
नीचे ढुलता
लदफद गिरता हिलता
हवा के झकोरों में उड़ता गिरता पड़ता
नीचे लुढ़कता
टिप टिप
झर झर
झम झम
झमाझम
झर जाता है बरस जाता है धरापर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तरण अवतरण का उत्ताप शीत प्रेरित
अनुपम आलेखन
उतरते तुम ऐसे
आँखों की राह
जैसे चढ़े लावा
भूगर्भ में सम्पुष्ट शिला संस्तरों के छिद्रों दरारों में बलात् धंस
तोड़ता हुआ
फोड़ता हुआ
गलता हुआ गलाता हुआ
संतप्त पिघलता हुआ
आकुल पिघलाता हुआ
भंभोड़ता हुआ
रगड़ता हुआ दरेरता हुआ
चरेरता हुआ
फाड़ता हुआ चिग्घाड़ता हुआ
बजता हुआ गरजता हुआ
कंपाता हुआ थरथराता हुआ
प्रस्तरों को खींचता
संस्तरों को दरेचता हुआ
आग आग डंक मारता हुआ
शोला शोला छेदता हुआ भेदता हुआ
मथता हुआ मरोड़ता हुआ
ऊपर चढ़े
शिराओं में अंगारे जमाता
दहकते विवर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और प्रचण्ड उद्वेग से
गैस गुबार शिलाखण्ड और लावा
धुँआ धुँआ आग आग
फैल जाये ऊपर धरातल पर
ऐसे तुम्हारा उतरना
ऐसे चढ़ना
ऐसे तुम्हारा आना
ऐसे जाना
आँखों आँखों में
आँखों के पार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बार फिर जन्मे तुम ओ अज!

एक बार फिर जन्मे तुम ओ अज!
ओ अजन्मा!
एक बार फिर उतरे तुम ओ परमोच्च! ओ गोलोकेश्वर!
ओ अच्युत!
उतरे तुम मेरी माटी में
मेरी आँखों में – मेरे तन में
मुझमें सर्वांग सम्पूर्ण
पूर्णस्य पूर्णमादाय
तुम कहाँ कब उतरे खण्ड में ओ अखण्ड!
खण्ड खण्ड तो हो ही नहीं सकते ओ सर्वसमर्थ!
जब भी तुम उतरे
चाहे जितने में
उतरे पूरा का पूरा
पूर्णमेवावशिष्यते
समुन्द उतरा
बुन्द में
और बुन्द हो गयी समुन्द
भूमा का अवतरण अल्प में
और उत्तरण अल्प का भूमा में
तुम्हारी आँखों के अन्तर्पथ पर
सारे रसलोक – गोलोक
सारे ज्ञानद्वीप – श्वेत द्वीप
सब चू आये मोती फूलगुच्छ बन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे अंक में
कैसे सहेजूँ
तेरे अवतरण और मेरे उत्तरण का आभिन्न्य मिलन
कहाँ है वह
किस धुरी केन्द्र पर सहेजूँ अपना उत्तरण गर्व
कैसे संवारूँ
सर्वेश्वर तेरा अवतरण पर्व!
सर्वकारणकारण प्रभु प्रियतम का परमोत्सव
कैसे मनाऊँ कृष्ण तेरा यह जन्मोत्सव!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये कहाँ ले आये तुम

ये कहाँ ले आये तुम
अपनी आँखों के सुरंगी रस्तों से
पहले ताना
तान कर छोड़ दिया
धाड़–प्रत्यावर्त्तन के लिये
खींचा
खींचकर छोड़ दिया
लिथड़ने के लिये
घसीटा
घसीट कर छोड़ दिया
रक्तिम रेघारियों में कराहने के लिये
खींच तान फैला दिया
प्रसार सीमान्त तक
फिर एक झटके में चीर दिया
सीमान्त को
और मुझे फेंक दिया
अथाह अमाप शून्य के महाखड्ड में
केन्द्रहीन धुरीहीन निराधार
पहले खींची मेरी पतंग
अन्तरिक्ष की परम ऊँचाइयों में
छोड़ डालने के लिये डोरहीन
उन गहराइयों की ओर
जहाँ गुरुत्वाकर्षण बल भर था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरा नहीं थी गिरने को
जब खींचा
तब जकड़ थी
सारा मूर्धामण्डल ज्यों शरविद्ध
मगर उसमें पकड़ भी थी
मेरे अस्तित्व की
उसे देती आधार, मूल
और सुरक्षा
जकड़ जब हुई वाष्पीभूत विलीन
मैं बचा निर्मूल
मुझे उखाड़ा जड़ों से
हनहना दिया निराधार सर्व में
सर्व मुझे सोख गया
मेरे उत्स तक
मेरी इयत्ता – मेरी सत्ता – मेरी निजता के
उत्स तक
जल में डूबता जैसे सांस के लिये हाहाकार अकुलाये
ऑखों के चरम विस्फार में
मेरी प्राणभेदी चीत्कार बचा न सकी
मुझे
मैं टूटा तारा डूब गया
मैं दिये की डूबती लौ खो गया
अवकाश के अनन्त में
ऐसे कि कुछ न बचा
मैं गया पहले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो बचा उसे जो कहो
सर्व या अस्तित्व
फिर सर्व का निरसन
और अनस्तित्व का उन्मेष
फिर अस्तित्व अनस्तित्व दोनों का
निरसन और संलयन दोनों
उसमें
जिसे क्या नाम दें
अनूभूति का चरम
बोध की पराकाष्ठा
या चैतन्य का परम
शुद्ध शुभ्र
और फिर सबके अतीत और अतीत
कारणों के कारण
अकारण
कैवल्य
प्रिय! तुम्हारा कैवल्य
प्रिय कैवल्य!

❂

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहा तुम

अहा तुम
और तुम्हारी आँखें
कहाँ हैं तुम्हारी और सब इन्द्रियाँ
मैंने तो तुम्हारी आँखों को ही देखा
देखते
कहते
रोकते
टोकते
बरजते
चलते आगे बढ़ते यात्रा करते वापस लौटते
आते जाते
दिशा बदलते
राह चुनते बदलते
तो तुम्हारी आँखें ही हैं क्या सब
हाथ, पाँव, जिह्वा, वाणी, मेधा, मन और सब
देखा तुम्हें पूरा
किन्तु तुम्हारी आँखों में ही
तुम्हारी आँखों से ही
तुम्हें तो बस
देखते देखा
इन आँखों से
तुम्हारी आँखों में झरने देखे
उल्लास के – आवेश के – आवेग के – संवेग के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वादियाँ देखीं
सरकती–बहती–लहरती–छहरती–उछलती–दौड़ती
हाँफती–कूदती–झपटती–रौंदती–तोड़ती–दरेड़ती–हुंकारती–दहाड़ती–
ठहरती–लोटती–लौटती–छूटती–पतराती–छितराती–बाँटती–पसरती–डूबती
आँधियाँ देखीं
तूफान देखे
स्फुल्लिंग, अंगारे, अग्नि और दावानल देखे
धरती देखी
पसीजती हुई–वाष्पित उड़ती हुई
वायुमण्डल देखे
ऐंठते–हौंड़ेरते–मथते
बादल देखे
भाप भाप–सीकर – बूंद बूंद – पानी पानी
बादलों को भींजते देखा
जंगलों में
भटकते देखा
मनुष्यों की बस्तियों में
भर अंकवार मिलते देखा
महासागर से
महासागरों की सतह भर देखी
हिलोरती–गरजती
गहराहयाँ देखीं
अतल–मौन –नील गहन
उन महासागरों से उभरती जमीनें देखीं
पसरती द्वीपों महाद्वीपों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारी आँखों में
लोक देखे
पाताल देखे
सातों
तीनों भुवन देखे
श्वेतद्वीप गोलोक
और श्रीवृन्दावन
क्या तुम
और क्या तुम्हारी आँखें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या छुपा रहे हो

क्या छुपा रहे हो
झुकी झुकी आँखों में आज
अपना छल या अपना जादू
अपनी बेकली या अपनी शरम
अपनी झिझक या अपना अपराध
तूने जो निगल लिया मुझे समूचा
ओ श्याम नाग!
नाम भी न छोड़ा
कर लिया सारा आत्मसात्
मगर अपना छुपना क्या
छुपाना क्या
उससे जो बचा ही नहीं
हो गया जो
तवाकार तवरूप तवलीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निगल लिया मुझे

निगल लिया मुझे
आँखों की राह
झपाटे में तूफान की तरह
पी लिया मुझे
वापस विष श्वाँस की तरह
ओ श्याम नाग!
जरा सी जुम्बिश
जरा सी सिहरन
और मैं था तुम्हारे अन्दर
पूरा का पूरा
घुलकर तुम्हारी श्वाँसों में
मिलकर तुम्हारे रक्त में
लगकर तुम्हारी आत्मा में
ओ परमात्मा!
भरे कि नहीं
मुझसे ओ भर्त्ता!
यह क्रिया तुम्हारी आँखों की
बनी तुम्हारी कृतार्थता ओ कर्त्ता!
यह जो चमकती है प्रशान्त आत्मलीनता उनमें
है क्या भरितता तुम्हारी ओ भरितात्मा!
यह जो ले लिया मुझे
ऑखों से अन्तर्अंक में
बना गया क्या तुम्हें
सच
याचक ओ सर्वदाता!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उगे तुम फिर

उगे तुम फिर
ऊपर चमकीले श्वेत मेघों की तरह
नातिदूर नातिसमीप
तुम्हारे भीतर के भीतर
नील श्याम कलेवर शुभ्र कोहरे में लिपटा
फिर
श्याम शालिग्राम
उन्हीं शुभ्र विरल मेघों के पीछे
तभी तुम्हारे वाम पार्श्व के अन्तरिक्ष में
कौन विराट हिमवर्णी पक्षी उड़ा
डैनों को लहराता
सप्त लोकों और पातालों को
ओत प्रोत करते निज आभा से
सर्व में अनुस्यूत और व्याप्त
फिर
श्वेत पीताभ ज्योतिर्मय वलय
फैलते
घेरते सारी दिशाओं को
धीरे –बड़े धीरे से
सदा की तरह
किन्तु बोध के जागरण में प्रथम बार
ऊर्ध्व मण्डलों में
अभिराम सम्पीड़नों में
खुलकर बिखर गया भाप सा
अनादि तनाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुली अस्तित्व की आखिरी ग्रन्थि
परम व्योम में
ऊर्ध्व और ऊर्ध्व
सहस्रारों के सीमान्त के पार
असंख्य कोटि परमाणु विद्युत् विस्फोटों के सुशीतल महाप्रकाश में
जीवकोश के परम संलयन में
श्रीविग्रह का परम प्रसार
सीमातीत विस्तार
श्याम तेज में
मैं तुम्हारे अंक में
गलते पिघलते
घुलते मिलते
फैलते हुए वाष्पीभूत से
सूक्ष्मातिसूक्ष्म
अनन्त अन्तरिक्षों में
निर्बाध
रसमय
रासोल्लास विकास परम विलास प्रकाश
रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊर्ध्वमूलम्

ऊर्ध्वमूलम्
मूल तो तुम ही हो
मैं तुम्हारी शाखा–प्रशाखा
पत्ते, फूल और फल
लगें मुझमें
जब मूल सिंचे मेरे आत्मरस से
मेरे भावामृत से
मगर कौन दे यह बोध
तुम्हारे सिवा
इसीलिये तुम्हारी आँखों ने
खींच लिया मुझे
तुममें–मूलमें
मूल सिंचे
रस भरे उमगे बहे पर की ओर
पर जो है विस्तार
स्व का
तुम्हारा प्रभु !
तुम्हारी रस धार में
बहा मैं
और देखा तुम्हारी आँखों से
मैं तो कभी था ही नहीं
तुम ही थे
तुम्हीं तो थे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कब तक ठहरोगे

कब तक ठहरोगे
क्षितिज के पार
दूर झलमल करते हुए
तेजवान परम पावन
लिया तो मुझे
मगर एक दूरी रही बीच में
तुम से मुझ तक
एक दूरी अनन्त में प्रकाशमान
ज्योतिर्मय! तेरी ज्योति से
कहो कि क्या अर्थ इस लघु दूरी का अनन्त में
क्या उत्तर दूँ
कैसे कहूँ
दूरी तो फिर भी दूरी हुई
लम्बाई में एक विमीय
कैसे हो कि यह एक विमा भी समाहित हो
विन्दु में – विमाहीन विन्दु में
समेट लो या
सिमट आओ
एक बिन्दु में
एक पल के लिये
द्वैत मिटे सम्पूर्ण
अभेद सधे सम्पूर्ण
तुम्हारा प्रिय! तुम्हारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खूब छिपे हो उजाले के पीछे

खूब छिपे हो उजाले के पीछे
कहीं श्यामल झरोखा मिले
और मिलें तुम्हारी आँखें
जब कालिख चढ़ती है आसमानों में
गड्डमड्ड होते हैं दीवारों के किनारे
पिघलती है छत
अन्तरिक्ष की चिमनी खुलती है
और धुआँ उठता है ऊपर
रोशनी ओट लेती है अपनी परछाई की
दिये फेंकते हैं ज्योति के पार अंधकार
चाँदनी जब झलकती है चमचम
सियाही की राख झाड़ती
दिशायें गिरा देती हैं अपने वस्त्र
समय टंग जाता है जब
अपलक पलकों के पीछे
सनातन वर्तमान सा
और
और मैं जब लौटता हूँ
बाहर से
नम्य त्वरा जैसे ढेर हो अपने मूल पर
आवेगी खिंचाव से विमुक्त होकर सहसा
मूल के नीचे
अतल में उतरते
अनवरत अंधेरे में
प्रकाश जब बैठ जाता है अपने गलाव के क्षैतिज धरातल के नीचे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्तित्व की कंचनजंगाएँ जब
अश्रु अपरदित हो घिस जाती हैं इतनी समतल
कि उभारों के मोनेडनाक भी
बचते नहीं निमज्जन से
मन जब बहता है यमुना बन
और अहंकार जब बनता है
श्याम तुम्हारी गउओं–गोपों का चारण लीला स्थल गोवर्धन
हवा जब करती है
धक धक
स्तब्धता जब तानती है सन्नाटा
काल का गेहुँवन जब छोड़ता है केंचुल
प्राणों के पुलिन पर
तुम उतरते हो
आधी रात
तुम्हीं बोलो
सांसों की धकफक में
भरभराती तुम्हारी आँखों से
कोई बात हो तो कैसे
अपनी चांदनी की उजास में
इतना भर झलकते हो
कि अंजुरी में भरने को उठे हाथ
खो जायें अँधेरे में
श्याम
तुम इतना डरते हो क्यों उजाले से!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रम से प्रयास से

श्रम से प्रयास से
कहाँ मिलते हो तुम
दूर क्षितिज के छोर पर
जाने किस रहस्य धुन्ध के पर्दे में
खो जाते हो तुम
खोजने से –ढूंढने से
कहाँ मिलते हो तुम
आन मिलो–आन मिलो की व्यग्रता में
छुप जाते हो तुम
दौड़ने से – हाँफने से भी कहाॅ मिलते हो तुम
गति की त्वरा के वाष्प में
उड़ से जाते हो तुम
गिनने–बुनने से – धुनने से भी नहीं मिलते हो तुम
विभ्रम के धुएँ में विलीन हो जाते हो तुम
आस से–प्यास से भी तो नहीं ही मिलते तुम
जैसे एक शून्य में लीन हो जाते हो तुम
किसी भी कारण से –बहाने से
नहीं ही मिलते हो तुम
दूर कहीं आहट सी होती है बस
तुम्हारी पलकों के झपकने की
ये सब तो बस थका देते हैं
पस्त कर देते हैं
कर डालते हैं चूर चूर
सारी आशा
सारे हौसले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी उमंग
मोड़ कर मरोड़कर
भंभोड़कर
तोड़ डालते हैं बस
अस्त परास्त ध्वस्त
क्लान्त श्रान्त
एकदम शिथिल
डूब जाता है सब
मेरे साथ
चरम निर्वीर्यता में
परम प्रत्याहरण स्व का
निजता और अहंता जब
सिकोड़ लेती हैं सारे पंख
सदा सर्वदा को
तब मेरे खण्डहर की दरारों से
अंखुआ आते हो तुम
नवजात निहारते
डब डब निर्दोष
अब किसे राजी करें
इन आँखों को दोष देने के लिये!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओ यात्री निशा के!

ओ यात्री निशा के!
क्यों बैर है तुम्हें इतना रोशनी से
जब भी मुझे छुआ
अँधेरा था
जागती है जब रात
चन्द्रमा को गोद में लिये
सिकुड़ने लगती है हवा
केन्द्र में
डैनों के खुले हुए रेशम
जब बैठते हैं चिड़िया की पीठ पर
अंगारे जब सिमटते हैं कोयले की भीतरी चिटखनों में
और आग ओढ़ लेती है
राख की चादर
दिये की लहक वापस लौट जाती है
बत्ती के अन्दर
सिटकिनी भीतर वाली
हो जाती है बन्द
साँसों की ताब जब बैठने लगती है
पलकें पड़ जाती हैं आँखों पर
और आत्मा निढाल
तब तुम आते हो दबे पाँव
ओ चितचोर कृष्ण!
और ढांक लेते हो मेरी ठिठुरन
साँसों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो कहो न

तो कहो न
तुम खेलना चाहते हो
मुझसे
जन्मों की पीड़ा
धुल गयी धूल सी
सुधि की बारिश से
अब नहीं ताकतीं पार
तुम्हारी आँखें
अब तो खिली है धूप
लम्बी बरसात के बाद
कभी उठती हैं
कभी झुकती हैं जुम्बिश के साथ
कभी घूमती सी हैं गोल गोल
कभी चमकती हैं
कभी लरजती
कभी उमड़ती सी
ये तुम्हारी आँखें
बोलती सी हैं
तुम खेलना चाहते हो मुझसे
लहकती हैं
उझकती हैं
रह रह मुड़ती हैं
छू छूकर लौटती हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बजा देती हैं साँकल
एकान्त के अँधियारों में
और आखिर एक दिन
अवधान की दरारों घुस आती हैं अन्दर
सिहराने
थरथराने
तानने फैलने
और फिर एक दिन
धारा उलट वापस होने
मेरे साथ
थपकी से
गुदगुदी से
चिहुँक से
कुहुक से
जानता हूँ
तुम खेलना चाहते हो
मुझमें
यह भी कि
मैं तो बस
क्रीड़ा कन्दुक भर हूँ
तुम्हारी विराट क्रीड़ा भूमि का
चरणों से
कभी हाथों से
कभी कुहनी से वक्ष से कन्धे से तो कभी सिर से
और कभी पलकों के रूप से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और कभी तो हृदय के रहस्य संकेतों से
तुम मुझे उछालोगे फेंकोगे कुदाओगे डुगडुगाओगे भड़भड़ाओगे
किक करोगे कैरी करोगे धकेलोगे ठेलोगे
खेलोगे
उनके लिये
जिनके हो अपने
उनके लिये
जिनके हो सपने
और उन सबके लिये भी
जो लगते हैं तुमपर
झंपने, कपने या तपने
पता है मुझे
मुझसे मुझमें होकर
तुम खेलना चाहते हो
अपने क्रीडांगन में
अपने इस गगन में
अपने जग के इस उपवन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम और तुम्हारी आँखें

तुम और तुम्हारी आँखें
कहते तो हैं शास्त्र
अभिन्न हैं तुम और तुम्हारा श्रीविग्रह
तुम और तुम्हारे श्रीअंग
हर अंग तुम्हारा
सर्वांग समर्थ है
और हर इन्द्रिय
सर्वेन्द्रियसक्षम
दो नहीं हो तुम
और तुम्हारी आँखें
क्योंकि प्राकृत नहीं है तुम्हारी श्रीमूर्त्ति
सच्चिदानन्द रूप हैं तुम्हारे श्रीअंग
परमोज्ज्वल
परम प्रभामय
सर्वपावन प्रकाशमान
कोटि कोटि चन्द्रमाओं की द्युति से कान्तिमान
विमल शीतल रश्मिमान
मेरे निकट प्रकट हुए तुम
अपनी आँखों में सर्वप्रधान
ओ प्रेमेश्वर!
ग्यारह भागवत आसक्तियों की प्रमुख
रूपासक्ति के कारण शायद
मन्मथमन्मथ त्रिभुवनमोहन सर्वरूपवान!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंश, अंशांश, कला, आवेश, पूर्ण और परिपूर्णतम
तुम्हारे इन षडवतार रूपों में
तुम्हारे इस चाक्षुष अवतार को
क्या कहें आवेश, अंश या कोई और
इन्द्रियावतार
तुम्हारी सारी सामर्थ्य
सारे गुणों–सारी कलाओं–षडैश्वर्य से दीप्तिमान
धीरोदात्त परमकारुणिक प्रेमवान
रसराज महतो महीयान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिक्त कर दिया मुझे

रिक्त कर दिया मुझे
स्वयं में सहेजकर
मुक्त कर दिया मुझे
मुझसे यों समेटकर
राख कर दिया मुझे
साफ कर दिया मुझे
बार बार मेरे लिये
माफ कर दिया मुझे
आँख में लिया मुझे
आँख में लपेटकर
तार तार कर दिया
छार छार कर दिया
मुझको अपने आपमें
आर पार कर लिया
खुदका नाम दे दिया
मेरा नाम मेटकर
आँख में उठा लिया
साँस में बसा लिया
रोम में रमा लिया
आप सा बना लिया
अपना अंक दे दिया
मेरे अंक भेंट कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुल ही गयी बात आखिर

खुल ही गयी बात आखिर
तुम खिलना चाहते हो
मुझमें भी
सः एकाकी न रमते
अकेले रह न सके तुम
तुम्हें भी जरूरत है मेरी
एक अनथक खोज है मेरी
तेरी
तुम्हारी ओर
तुमसे मिल तवरूप होने की
पल पल हर पल
अनन्त के अन्त तक
स्वयं को मेटने की
तुम होने की
एक अनबुझ प्यास है तेरी
मेरी
पल पल हर पल
अनादि से अनन्त तक
मेरे आग्रहण की
मुझमें समाने की
रोम रोम रमने की
बसने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पोर पोर मुझमें फैलने की
ओ रसवन्त परम प्रफुल्ल!
खिलना चाहते हो तुम
एक बार फिर
मुझमें
ओ अनादि बीज!
तुम अंखुआना चाहते हो
मेरे प्राणों में
पनकना चाहते हो
मेरे मन की क्यारियों में
पसरना चाहते हो
मेरे चित्त की मेड़ों पर
धमनियों से हृदय होकर
शिराओं में फैलना चाहते हो
सींचते हुए मेरा समग्र स्नायुजाल
गँठकर मांसपेशियों में
अस्थियों में जमना चाहते हो
सबल
मेरे अन्तरंग बहिरंग
सबमें विकसकर उमगकर
खिलना चाहते हो
मेरी आँखों के चमक फूल में
मेधा के मन के
भाव के महाभाव के मधुवन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओ परमपूर्णकाम आत्माराम!
ओ सर्वेश्वर सच्चिदान्द!
रसराज जो हो तुम
तुम बार बार असंख्य बार
सिरजना चाहते हो
रूप–रस–प्रकाश का
परम कुसुमित प्रेमवृन्दावन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब मुझमें रहो बस हाँ!

अब मुझमें रहो बस हाँ!
तुम्हारे लिये होना
मतलब तुम्हारे लायक होना
कौन लियाकत मेरी तुम्हारे लायक
सिरजलो मुझे ओ जग के सिरजनहार!
अपने लायक
रगड़लो घिसलो छाँट लो
कतर लो चुन लो चिन लो
तराश लो
निकाल लो मुझसे
तुम्हारे लायक
और अब
मुझमें रहो बस हाँ!
चुप्पी तोड़ो जन्मों की
छोड़ो मौन तकना
खुद को बस
निहारती आँखों में रखना
जोड़ो जुड़े हाथ मेरे
खुले हिरदय से
टूटने दो बन्ध अब नैनों के
खुलने दो अनुबन्ध सैन बैनों के
सुनी मेरी बहुत
अब तुम भी कुछ कहो बस हाँ!
खींचकर बलात् मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँखों की सुरंग से
तोड़ फोड़ मरोड़ औंचक
रहजन के ढंग से
पर्वतोच्च तटबन्धों से बाँध रखा मेरे
आँख भर अश्रुजल को
कब तक सहेजोगे
अपने प्रेम छल को
मेरी आँखों की राह ही सही
चलो अब बहो बस हाँ!
राग रंगी गलियाँ गोलोक की
चढ़ीं फागुन रंग ओ रंगीले
रस मेघ बरसे घन
छबि छायी अनोखी ओ छबीले
नित्य वृन्दावन के साजन
मेरे मन वृन्दावन
अब सजो बस हाँ!
गाँठ जार झार छार
भेद छेद गढ़ो मुझे बांसुरी
भरो सुर राधा की
रूप मदिर रंग रस माधुरी
बजते हो ब्रज में अभी
मेरे अंग ब्रज में
अब बजो बस हाँ!
ढूढ़ता रहा जग की गलियां
जनम जनम आवारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव गाँव डगर डगर
कहाँ टिका मन बन्जारा
जोर जबर थूर थार
भजूँ अब तुझे बार बार
ये यथा मां प्रपद्यन्ते
कहते तो हो तुम
तां तथैव भजाम्यहम्
तो मुझे भी
अब भजो बस हाँ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीज हूँ मैं

बीज हूँ मैं
जड़ बेजान सा
तुम हो अंकुर
मेरे प्राकृत तन से फूटते हुए
नवल मृदुल सुकोमल
और अप्राकृत मनोहर
ऊर्ध्व लहक भरे
सृजन रस महक भरे
उल्लास चारु चहक भरे
गमकते—उमगते
अधः के बीज से चढ़ता हूँ मैं तुम्हारे भीतर
जैसे ज्वार में तलछट
और धीरे धीरे
तुम्हारे मधु में भर गाढ़ता
पोढ़ा—सख्त ठोस सा बना
तना हूँ मैं
और तुम हो
कुलिश के भीतर से हुमकती
कोमल सी टहनी
मैं कठोर
तुम्हारी शिराओं में भरता हूँ पुख्तापन
कड़ा जड़
अनथक तुम निकलते जाते हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ते जाते हो
आगे और और
सुकुमार और मधुर
टहकी चाँदनी से सुन्दर
शाखा प्रशाखा
फूटते जाते हो
पनकते जाते हो
मृदु मनोरम मधुरिम मसृण
सुन्दर सुन्दरातिसुन्दर
तुम रूप
तुम्हारी आँखों का विषय
रूपायित होते जाते हो
भीतर से बाहर
पीछे से आगे
नीचे से ऊपर
पलल्व
वल्लरी
किसलय
और कुसुम बन
प्राकृत तन में
तुम्हारे प्रेमाश्रु से
किन्तु वहाँ भी कहाँ छोड़ता हूँ मैं
तुम्हारे अंक में आश्वस्त आसीन
पराग कण बन
बनने को तत्पर पुनः बीज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
महतो महीयान
ओ मेरे चिरसखा!
क्षुद्रातिक्षुद्र
तुम्हारा अंश मैं
कैसे रहूँ
तुमसे दूर
पलता हूँ
चलता हूँ
तुम्हारे साथ
साथ साथ
चिरंतन
शाश्वत पथ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरा सी छूती है पृथ्वी

जरा सी छूती है पृथ्वी
नथुनों तक बस पहुँचती भर है गन्ध
और तुम बिला जाते हो
जरा सा भूला संसार के रिश्तों की गलियों में
तुम भुला जाते हो
एक चिन्दी पड़ी आँख पर
छुपा देती है भास्वर सूर्यमण्डल
वैसे ही
एक कन भर पड़ा आँख में
प्राकृत
और जड़ीभूत हो जाती है
आँखों की महा चैतन्य यात्रा
कितने नाजुक हो तुम
जैसे तोड़ देता है शीशा झन्न
एक ठीकरा
एक तिलिस्म की तरह
उड़ जाते हो तुम
यदि तुम ही हो उपादान
इस विश्व के
अप्राकृत भी प्राकृत भी
तो क्यों सह नहीं पाते तुम
प्राकृति एक क्षुद्र कण भी
ओ परम चैतन्य!
ओ शुद्ध चैतन्य!
ओ परमोज्ज्वल!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमने रचा क्या यह संसार

हमने रचा क्या यह संसार
या ये रिश्ते
या इन रिश्तों को रचने वाला मन
सब तो तुमने रचा ओ जगदीश्वर!
यह जग
यह जीवन
यह तन
यह मन
और यह प्यास
कभी न बुझने वाली
बुझ बुझ के लगने वाली
यह आस
साँस के बाद भी टिकने वाली
टूट टूट के भी न मिटने वाली
यह फाँस
जन्मों चली राहों की आदत वाली
माटी के बुतों की इबादत वाली
और यह विश्वास
रह रह पारा हिलने वाला
जर्जर पैबन्द न सिलने वाला
यह सब
यह सब कुछ
रचा तुमने
खुद मुझे भी
स्वयं से
फिर किस अपराध का उत्तरदायी ठहराते हो
मुझे थाम आँखों से दूर कहाँ जाते हो!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह होना

यह होना
और यह न होना
पानी की सतह की लकीर होना
और यह न होना
जैसे रात
जो दिन के अंक में
होकर भी नहीं होती
सदा बाहर
चाँदनी जैसे
नहीं होकर भी होती है
सदा अन्दर
तुम खोकर भी
सदा होते हो मेरे रोने में
मेरे होने में
मेरे रोम रोम में
मेरी पृथ्वी और व्योम में
मैं होकर भी
शायद खोया रहता हूँ तुम्हारे भीतर
तभी तो खोयी सी रहती हैं
तुम्हारी आँखें
ढूंढ़ती सी
मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरीर में सबसे कम प्राकृत

शरीर में सबसे कम प्राकृत
आँखें ही तो हैं
सबसे अधिक चिन्मय
और इसीलिये
तुमने आँखों को चुना
ओ परम चिन्मय
अनुप्रवेशन के लिये
मृण्मय में चिन्मय का सम्प्रवेश
ज्योतिर्बीज की तरह
तुम धकेलते हो
धकेलते जाते हो
फेंकते जाते हो
मेरे मृण्मय को
घेरते हुए सारा अन्तर्आकाश
भरते हुए मुझे
पूरते हुए मेरी रिक्तता
सारा उद्योग
मेटने को मेरी मृण्मयता
सम्पूर्ण
भेदना बस एक लक्ष्य
चिन्मय सिद्धि
सम्पूर्ण
पैठते जाते हो तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे भरते हुए
सम्प्रवेशन चिन्मय का
निष्कासन मृण्मय का
अन्तर और बाह्य का
भूमा और अणु का
सर्व और अहम् का
निगूढ़तम महत्तम गहनतम अन्तर्संग्राम
अनवरत अविराम
हे राम!
हे श्याम अभिराम!
जानते तो हो सर्वज्ञ परमेश्वर!
अन्तहीन है यह महासंग्राम
सर्वसमर्थ अजेय हे सर्वशक्तिमान!
तुम सदा जीतते हो
तुम सदा जीतोगे
ओ परम चैतन्य!
परम चिन्मय!
मगर एक और लक्ष्य सदा होगा आगे
चुनौती देता जीत का
अणुता हर बार सिर उठा उठ खड़ी होगी
ललकारती तुम्हें ओ भूमा!
आगे और आगे
उच्चताएं विकास की
प्रकाश की
परम के चिदाकाश की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्योतिर्मय
प्रभामय
रूपमय
आनन्दमय
मधुरसमय
मृण्मय
हर आकाश के शीर्ष पर खड़ा मिलेगा ऊँचा
ऊपर और परे
ले चलोगे मुझे तुम जितना
शायद
चिन्मय और मृण्मय के
अन्तर्संघर्षण में ही है
सिद्धि परम के जागरण की
रसामृत के आहरण की
खण्डता के क्षरण की
भूमा के वरण की
सनातन है चिन्मय
तो नश्वर नहीं मृण्मय भी
द्वन्द्व इस द्वय का चिरन्तन है
और है श्रेयस्कर
भास्वर
मनोहर
और शुभंकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैसा यह खेल सत्त्व की परम ऊर्जा का

कैसा यह खेल सत्त्व की परम ऊर्जा का
सारा तनाव जड़ता से है
तमस् से –
जीव और भगवान का
अणु और भूमा का
मेरा और तुम्हारा
तुम्हारी आँखों का
सारा संघर्षण
चरम संवेगी सम्प्रेशन तुम्हारी आँखों का
मुझमें मेरी आँखों की राह
विकट आवेग
सघनतम सम्पीड़न
गहनतम दाब
सहनबल के चरम तक
उत्कटतम तनाव
मेरे सम्पूर्ण आग्रहण का
मेरे सम्पूर्ण निष्कासन का
मृण्मय के सर्वक्षय का
चिन्मय के सर्वजय का
और
और अंततः
चरम के सीमान्त पर
परम का महाप्रस्फोट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टकराव खिंचाव तनाव और भिंचाव
आकुंचन और विकुंचन का महावेशी गुंजन
द्वैत श्रृंगों का विस्फोटी विखण्डन
महत्तम उत्पादन
गति, वेग और त्वरा का
उच्चतम वैद्युतिक आवेश
प्रतप्त अन्तर्लावा का
प्रचण्डतम उद्गार
और
झनन झन्न खनन खन्न छनन छन्न
आकाशों को विलुप्त करता स्निग्धतम उज्ज्वलतम महाप्रकाश
मेघाभ और शुभ्र ज्योत्स्ना के
मृदुल दीप्तिमण्डल में
तुम्हारी मुस्कराती आँखों की मधुर प्रभा
उज्ज्वल रस उदधि का अतिमृदु आलोड़न
और देखो
जैसे कल्पों में प्रथम बार
अन्तरिक्षों के महासंलय रंगपटल पर
तुम नाच ही तो उठे
गरजता उत्ताल प्रेम का महोदधि
तट पर नीलाभ तरगें मारतीं झपाटे पर झपाटे
पीताभ द्यौमण्डल के अंक में
सृष्टियों के प्राण रगों को झंकृत करती
रागिनी की मसृण लहरों पर
तुम नाच ही तो उठे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रासेश्वर!
उज्ज्वल रसालोक के वलय
स्फुरित रोम मण्डल
प्रस्फुटित हृद्मण्डल
मधुभासित रंगमण्डल
गोलोक उतर आया
धरा के उच्चस्थ सीमान्त पर
दिप दिप करता
अब स्वामी!
कब उतरोगे
पृथ्वी के पृष्ठ पर
ताल मिलाते यमुना की लहरों के साथ
सकल धरा तक विस्तारित करते
प्रेम वृन्दावन
कब उतरोगे हृदयेश्वर!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रास तो अतिथि है रात का

रास तो अतिथि है रात का
और तुम देवता निशा के
काम फूल खिलते हैं राका के आकाश में
फिर तुमने इसबार क्यों चुनी मेरे लिये
प्रातः की अरुण वेला!
पार के उज्ज्वल मोह रस का झरना झरता है
सोम की मसृण प्रभा में
मायाधीश के प्रेम का पावनतम मायाजाल
उमगता है रजनी की सुरमई जुन्हाई में
श्याम आलोक काम का
खिलता है चन्द्रिका के श्वेताभ पृष्ठफलक पर
फिर तुमने इस बार क्यों चुनी
अंशुमान की किरणों की सुखोष्म उजास!
इस बार देना है क्या अपना प्रेमार्घ्य
दिनमान को
या कलिके काले काल का कालापन चढ़ना है
दिन के उजले दरपन पर
या ओ साँवरे!
तुम्हारा श्यामल प्रेम घेरना चाहता है
दिवस के आकाश को भी
या फिर
झँवराने लगे दिन क्या अधिक
ओ कृष्ण तुम्हारी छाया में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा
स्वार्णिम रश्मिमान को बनाना है क्या
अपने श्यामल मोरछल का सुनहला आधार किरीट
सजे जो माथ पर प्रकाशदीप बन
कल्मष संकुल कृष्ण समय के रास आयोजन में
क्या योजना है निगूढ़
ओ महाकाल के रसराज जादूगर!
मधु रस श्रीधाम के कौन से वातायन खोलने हैं
तमोमयी रजनी के बाद
सत्त्वमय अरुण के ऊर्जायित रंगपटल पर
या ऊब गये तुम
अँधियारी रातों की कलौंछ से
अब अगर छोड़ा है
काल का स्याह पर्दा रात का
तो कोई तो आवरण रचोगे
आखिर कैसे सधेगा यह
उजाले का पर्दा दिनका
कहीं प्रभु गुणलघुता तो नहीं न खींच लाई है
तुम्हारी करुणा को
रात की कलौंछ से दिन के उजियारे तक!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संबोधि का झरोखा है आँख

संबोधि का झरोखा है आँख
तभी तो सधी है तुला की तरह दोनों ओर
आज्ञाचक्र के
त्रिकुटी के सामने
आँख ही तो साधती है
मुझे और तुम्हें
स्व और पर को
अहम् और इदम् को
आँख है प्राकृत शरीर में सर्वाधिक अप्राकृत
इसीलिये आँख है सरोवर
आँख है सागर
और आँख है दरपन
झलमलाते हो तुम जिसके आर पार
आँखों की खिड़की से कोई झाँक ले
और डूब जाये तेरे सागर में
आँख है सेतु
मेरे और तुम्हारे बीच
आँख है पर्दा पानी का
आँख वाला पानी
जो तुम्हें ढांपता कम
उघाड़ता ज्यादा है
आँख वाला पानी
जो ढले तो अर्घ्य बन जाता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारे चरणों में
आँख वाला पानी
जो चुए
तो बने मोती तेरे रूप का
और बहे
तो पारा तेरे प्यार का
और बहता ही रहे तो
यमुना
तेरे वृन्दावन के तट वाला
मिलते हैं जहाँ
तुम और मैं
मूक अपलक
निर्वाक
यमुना जल झलमली की ओट में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ है आँख वहीं है सब

जहाँ है आँख वहीं है सब
आँख वहीं नहीं होती
जहाँ आँख पड़ती है
आँख होती है वहाँ
जहाँ मन होता है
मन जब तक है संसार में
आँख बाहर है
और मन है संसार में
जन्मों से – अनादि से
इसीलिये आँखों को आदत है
बाहर की
मन है मनमोहन का
जानें वे जो जानें मनमोहन को
मनमोहन भी है मन का
जानें वे जो जाने मनमोहन के मन को
इसीलिये मोहन मोहता है मन को
एक न एक दिन
मोह का कल्मष हटने के बाद
कृष्ण है ही वह
जो आकर्षित करे
कर्षण करले मन का
और मोहन है मन का
इसीलिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक न एक दिन
निकल पाता है मोह
जड़ों में धँसे जगत का
आखिर जब लगन मन की लगती है
मनमोहन से
तो आँख होती है मोहन पर
अपनी ऊर्जा के साथ
गति के साथ
त्वरा के साथ
घुलने के लिये
मिलने के लिये
मोहन से
क्योंकि
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः
यह ऊर्जा – यह गति – यह त्वरा
ये सब भी उसी के तो हैं
सः एकाकी न रमते
दो तो बना है
रमण के लिये
दुई की लीला ही है रमण के लिये
लोकवत्तु लीलाकैवल्यम्
है तो बस मोहन ही
वासुदेवः सर्वमिति
हाँ, जाने कोई जन्मों के तप के बाद
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तप कौन सा
प्रेम का तप – गोपी का ताप
मन्मनोगतम्
जानन्ति गोपिकाः पार्थ नान्ये जानन्ति तत्त्वतः
मोहन का मन तो
जाने गोपिका ही
और गोपिका की आँख है
मोहन पर
जन्मों से बाहर की लती
जोहती है मोहन को बाहर
इसीलिये मोहन का आनन्द रास है बाहर
मगर ऊर्जा जब थकती है
लौट लेती है वापस मूल को
मूल जो अन्दर है
विश्राम के निशीथ में
दृष्टि लक्ष्य अब कैसे रहे बाहर
ऊर्जा के साथ वह भी आ सिमटता है
आँख के मूल में
अन्दर
दृष्टि लक्ष्य के साथ
मन भी है अब अन्दर
और
मन के साथ
मनमोहन भी खुशबू सा
प्रविष्ट होता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्दर
मोहन अब अन्दर है
मेरे साथ
एकाकार
द्वैत उड़ चला कपूर की तरह
खो गया मैं
खो गया सब
अब तो बस मोहन ही है
केवल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम हो मूल

तुम हो मूल
शाखा प्रशाखा पल्लव
और फूल हूँ मैं
तुमसे निकल आगे खिलने के लिए
तुम्हारा ही विस्तार
तुम्हारी ही एषणा
तुम हो सूरज
सूरजमुखी हूँ मैं
तवोन्मुख
तुम्हारी ही आभा
चमकती है मेरी पंखरी–पंखरी
तुम्हारी गति मेरी गति
तुम्हारी दिशा मेरी दिशा
मेरे सूरज!
कमलिनी भी हूँ मैं तुम्हारी
तुम्हारे प्रीति रस में पगी
खुलता है मेरा हृदय तुम्हारे स्वागत में
दल कपाट खोले
तेरा दर्शनामृत कर भीतर
बन्द हो जाता है
विदा संध्या में
तुम हो सागर
बादल हूँ मैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेरे प्रेम की आँच में पका
ऊपर चढ़ा भाप बना
उज्ज्वल गगनोत्थित रस वितान
मिलने को प्रति पल प्रस्तुत
बरसकर
पर्वत श्रृंगों से चलता
तोड़ता प्रस्तर खण्ड
भिंजाता तेरी धरती को रोम रोम
बहाता रस धार
लहकता तेरी ओर
तुम हो तुम
मैं हूँ तुम्हारा
तुम ही तुम
बस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभात का स्वर्णिम ज्योतिष्मान वायुमण्डल

प्रभात का स्वर्णिम ज्योतिष्मान वायुमण्डल
और तुम उग आये लम्बी बरसात के बाद घाम की तरह
निर्मल, पूत और चमकीले
अन्तरिक्ष को मधु निनादित झंकृत करते हुये
समग्र शास्त्रों की देशना को उलटते हुए
चन्द्रिका सज्जित यामिनी को व्यर्थ करते
दिनमान की नवोज्ज्वल आभा को उद्दीप्त करते हुए
जगर मगर सावन हरित धरा के कुछ ही ऊपर
गगन में दिपदिप प्रकाशमान
अति सूक्ष्म संगीत के तालों पर
गोल गोल क्षिप्र घूमते
पीताम्बर की पीतोज्ज्वल लहरें उठाते
मन्दस्मित की स्वर्णाभ द्युति बिखेरते
चमकीले स्वेदित ललाम कपोलों की मोहिनी जगाते
कभी जरा आगे झुक उठे जानु पर
तालबद्ध द्रुत थाप देते
लहराते थिरकते झूमते घूमते
सतरंगी आभा के गतिमान वलय सिरजते
खिल आये तुम जगमग
सुवासमय सुहासमय प्रभाषमय उल्लासमय
मधुर मदिर मसृण मनोज्ञ
विमल उज्ज्वल सुकोमल तरल
पावन मनभावन रससावन मधुवृन्दावन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी !

यह तुम्हारा आगमन आवर्त्तन मधुसर्जन नर्त्तन
यह तुम्हारा कलहास उल्लास विलास रास
क्या केवल मेरे लिये
या करना है नव काल में नव प्रवर्त्तन
सर्वरूप सर्वात्मा सर्वेश्वर
तुम क्या
सबमें ऐसे ही उगोगे
अद्वितीय अन्यतम अनन्य
सर्वसमर्थ तुम तो सबमें हो
एक साथ
अन्तर्यामी बन
प्रियतम स्वामी बन
मधुरेश्वर हे !
गोपीश्वर हे !
राधेश्वर हे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आखिर तुम आये

आखिर तुम आये
चिरविरहिनी घर
पहले उतरे अपनी आँखों की राह
मेरी आँखों से हो मेरे अन्दर
और फिर खींच लिया मुझे
पूरा
स्वयं में
आँखों की राह
सदा के लिये
जब हुआ विस्थापन पूर्ण
सर्वांग सम्यक सर्वकालिक सम्पूर्ण
एक रात चुपके से
अनायास
प्राणों ने तुम्हे पाया
अपने पास
घेरे हुए सर्वांग
दबा मैं जैसे फूलों के ढेर में
अग्रतः पृष्ठतः सर्वतः
सुकोमल सुपेशल मधुर
अंग अंग
पेशी पेशी
ऊतक ऊतक
रग रग
रोम रोम
तुमसे समाविष्ट सम्प्रवृष्ट संश्लिष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आविष्ट
आश्लिष्ट
सघन सबल समग्र
मधुर रसमय आह्लादित
उज्ज्वल निर्मल पूत अप्राकृत
चिन्मय आनन्दमय
आ भरे मुझमें आपूर्ण
सुगन्ध से
भर गये तुम
छा गये तुम
समा गये तुम
हो गये तुम
सर्वतः सम्पूर्ण
जन्मों से तने
मेरे शिखर मेरे शृंग
खिंचे
मेरे कृपाण
मेरी प्रत्यन्चा
मेरे स्वत्व के निजता के अहंता के
झरने लगे
झुराते फूलों के पराग से
उड़ने लगे
सूखे पत्तों से
छितराने लगे
कन्दरा की हवा से
तुम्हारे
सर्वाश्लेष में
मधुराश्लेष में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसाश्लेष में
कल्पों से बेचैन हहराता उछलता समुद्र
हुआ आतल शान्त
तुम्हारी छतनार गहबर रसवन्त छाँह में
हुआ जीवनों के अन्त में
परितृप्त सन्तृप्त
दे दिया तुमने स्वयं को
सम्पूर्ण
जब दे दिया स्वयं को तुम्हें
सम्पूर्ण
भर दिया तुमने
सम्पूर्ण
जब मिटा दिया स्वयं को तुझमें
सम्पूर्ण
मिलना हुआ जीवनों में प्रथम बार
सम्पूर्ण –परम
समाये ऐसे
कि छोड़ा ही नहीं मेरे लिये अवकाश
भरे ऐसे
कि खो गया मैं समग्र
प्रवेश किया ऐसा
कि बचा नहीं मैं नाममात्र
मैं गया
सर्व गया
समग्र निमज्जन
सर्वांश निमज्जन
भरित अद्वैत में
मधुराद्वैत में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसमें भरे थे तुम
तुम ही तुम
किन्तु यह अद्वैत नहीं ज्ञान का
निर्मम निष्तव बेरंग बेस्वाद
यह था ज्ञानोत्तर
महारसोदधि
भरित तुमसे सम्पूर्ण
मैं जिसमें विलीन
रस द्रव्य सा
तुम भरित मुझमें
मैं मिलित तुझमें
तुम ही तुम
किन्तु मैं भी तो था वहाँ
सदा तुममें अन्तर्लीन
अन्तर्लय बोध बन
सदा तुममें रसलीन
रसास्वादक बन
सदा तुमनें तल्लीन
मधुभोक्ता बन
निजता का द्वैत गया
किन्तु द्वैत बचा प्रेम का
द्वैत बचा
रसाभोग का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदा मिलित

सदा मिलित
सदा युक्त
सदा संयुक्त
परिरम्भाद्वैत
प्रेमाद्वैत
भीतर बाहर
चहुँओर
तुम्हारा एहसास
तुम्हारा चैतन्य
परमोज्ज्वल चैतन्य
तुम्हारी उपस्थिति
प्रेमोष्म
आनन्दोष्म
परम पावन
उपस्थिति
घेरे हर ओर से
सर्वव्याप्त
तुम्हारे अंक में
मैं
सकल ब्रह्माण्ड
सब तुममें
तुम्हारे भीतर
पैठकर अन्दर
तुम भर गये
मेरी चेतना में सम्पूर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचा कहाँ मैं
ले लिया मुझे
भीतर विस्तृत
अपनी चेतना में सम्पूर्ण
अब तुम मेरी चेतना में
मैं तुम्हारी चेतना
तेजरूप चैतन्य का आभिन्न्य
तेजाभिन्न्य
तुम्हारा
सांग स्पर्श
रोम रोम का
मधुर उज्ज्वल रसवंत
चैतन्यदीप्त
सकल ब्रह्माण्ड के केन्द्र तुम
तुम मेरे भीतर
मैं केन्द्रस्थ
के आत्मस्थ
त्वयिस्थ
निमज्जित तुममें
परम जाग्रत
प्रशान्त परम मौन
आनन्द शिखरारूढ़
प्रियकैवल्य तुम्हारा
रसोच्छल प्रेमोज्ज्वल दीप्तिधवल अचंचल
मैं आभोवता
परम जाग्रत प्रेममधुनिमग्न
परमाभिन्न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कितनी घाटियाँ

कितनी घाटियाँ
कितने शिखर
कितने शृंग कितने कटक
भरे हैं मेरे इस भूपृष्ठ पर
तुम्हारी प्रेमरसधारा
जिनका करती है समतलन
काटकर ऊँचाइयों को
पाटकर गहराइयों को
रचने को उर्वर रसगर्भी मैदान–
कितना ढेलेदार
कितना सख्त
कितना ऊबड़ खाबड़ कितना ऊँचा नीचा
है मेरा यह खेत
जिन्हें जोतते हैं तुम्हारे करण हल गहरे
उठाते हैं बिछाते हैं सतह पर मिट्टियां पृथ्वी के गर्भ की
रगड़ते हैं मींसते हैं हेंगाते हैं
भूर भूर मिट्टी को मह डालते हैं मक्खन सा
जिनमें बो सके आकाश अपने बीज
कैसी गाँठदार
कैसी कंकड़ भरी
कैसी झंखाड़भरी कर्कटी है मेरी यह मिट्टी
तुम्हारे स्नेही हाथ
जिन्हें तोड़ते हैं फोड़ते हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पटकते हैं कूटते हैं
छाँटते हैं थूरते हैं मसलते हैं
मींजते हैं सानते हैं मांड़ते हैं
नवनीत सा
सिरजने को कैसे कैसे रूप कैसे कैसे रंग धरती के
रहस्य सा प्रश्न सा
पहेली सा
असीम विस्तृत
अतल गहरा
कैसा है मेरा सागर
मेरे अहं वासुकि की मथानी बना
मंथन किया
तेरी आँखों ने
अपनी अगम्य तेजवान किरणों से
प्रकटाने को
एक ही महरत्न
स्वयं
तुमको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या करेगा यह महाप्रवाह

क्या करेगा यह महाप्रवाह
तुम्हारी ऊर्जा का
आर पार मुझमें–सारे ब्रह्माण्ड में
वैद्युतिक महावेशी हनहनाता हुआ
बनेगा क्या प्रेरणादीप
सबमें प्रेम ऊर्जा की लौ बालता
सिरजता पृथ्वीव्यापी जगमग दीपमाला
कामावस्या की तिमिराच्छन्न दीपावली रात्रि में
पनपेगा क्या प्रकाशांकुर
जन जन में तुम्हारे आवेशावतार का
तुम्हारे लोकावतरण का
जन सत्ता के हाहाकारी उदय काल में
महाभारत की सर्वविनाशक हिंसा ने
हिला दी क्या चक्रधारी उंगली
गोपा ना के सुधि सन्दूक में बन्द वेणु
गूँजेगी क्या
धरा की प्रेमवीथियों में एक बार फिर
करेगी क्या धरा हरित फुल्लकुसुमित शृंगार
द्वापरान्त का मानक वृन्दावन
क्या विकसित पुष्पित होगा सकल पृथ्वी तल पर
रस यमुना के तीर
उतर रहे हो क्या मुरली मनोहर प्रभु
फिर गोलोक से
भूलोक के रास मन्दिर में
प्रेम वृन्दावन में!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्ति नहीं है

मुक्ति नहीं है
मन की मुक्ति
मन की स्वैराचारिता
करना जो मन कहे
तो परतंत्रता है मन की
मन चाहे पराया हो या अपना
परतंत्रता तो परतंत्रता है
क्योंकि पराया मन ही पर नहीं है
पराया ही है अपना मन भी
मन है ही पराया
संसार की तरह
शरीर की तरह
शरीरांगों की तरह
मस्तिष्क की तरह
बुद्धि की तरह
और साँसों की तरह
और अधीनता पर की ही तो दुःख है
और दुःख से मुक्ति ही तो मुक्ति है
इसीलिये मुक्ति नहीं हैं मन की मुक्ति
मुक्ति है मन से मुक्ति
मुक्ति है स्व से मुक्ति
अहंबोध से मुक्ति
क्योंकि अहंबोध ही तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिरजता है खण्ड बोध
परायेपन का मूल
अहंबोध ही तोड़ता है
अखण्ड से
और अखण्ड है श्रीकृष्ण तत्त्व
अखण्ड से जुड़कर ही
मुक्त होना है
विमुक्त होना है
अखण्ड है भूमा
और भूमा है आनन्द
अखण्ड है परम ऊर्जा
अखण्ड है अमृत
अनश्वर शाश्वत
अखण्ड है अनादि अनन्त
अखण्ड है परमबोधि रूप
परम चैतन्य
इसीलिये
अखण्ड है
परमाभयरूप
परम शक्ति
परम सामर्थ्य रूप
परम पूर्ण
परम भरित
परम रस रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊर्जा का महाज्वार

ऊर्जा का महाज्वार
कौन धारे तेरे बिन
हहराता हनहनाता
झनझनाता सनसनाता
मेरे और सारे अन्तरिक्षों की
सारी बाड़ों को तोड़ता
प्रवाह पार्श्वों की गोल दीवारों को
पतराता चीरता
मैं समेत मेरे वजूदकी सारी छालों को
फाड़ता
मथता
मुझे और मेरे ब्रह्माण्ड को
ठेलता रेलता
हदों को हेलता
ऊर्जा का महाज्वार
कौन सम्हारे तेरे बिन
मेरी सारी नसों को चींथती
महामृत्यु की अंतिम चीत्कार
सारे गगनमण्डलों को गुंजाता
तुम्हारी जय का महाटंकार
सारे जीवनों की नींवें तोड़ती
मेरे स्वत्व की हार का हाकाकार
कौन उबारे तेरे बिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुमने जो ऐसे
बाँहों में लपेट लिया
अपने सर्वरूप सर्वातीत
स्व में समेट लिया
रस की महोदधि में
मेरा अहं फेंट लिया
अब मुझ आत्महारा की
तेरी प्रीति की आस को
सेवा की प्यास को
कौन सहारे तेरे बिन
सारी संसार की मटमैली धूल से उठाकर
तेरी आँखों में सजाया
आँखों से पैठ
अन्तर में समाया
हृदय से उठ जो
होठों पर आया
ऐसे तेरे नाम बिना प्रभु
कौन तारे तेरे बिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम तुझे प्रणाम

नाम तुझे प्रणाम
सारी साधना
सारा जीवन और सारे जीवनार्थ
सारी अभीप्सा
स्वयं श्रीकृष्ण और
श्रीराधा भी
सब तेरे नाम
नाम तुझे प्रणाम
सारे कर्म
सारा ज्ञान
सारी उपासना
सारे दुःख–सुख
सब शीत घाम
सब तेरे नाम
नाम तुझे प्रणाम
तुमने ही मनोरथ को
पाँख दी
मनोरथ, मन और मनमोहन
सब देखने को
आँखों की आँख दी
तेरी आँखों की झाँक
तेरी आँखों की राह
तेरे सपनों के माथे
बिन्दी टांक दी
तूने ही मेरे हिरदय में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेरी प्यास के फूल रखे
तेरी आँखों की डगर के दिये
मेने अनुकूल रखे
चले जब तुम, गला जब मैं
तूने ही मुझे सहेज रखा
हर फाँस में हर फिसलन में
परहेज रखा
गाऊँ तुझे ध्याऊँ तुझे
जपूँ तुझे आठों याम
यही वर दो प्रभु
यही वर दो प्रभुनाम
नाम तुझे प्रणाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री प्रेम वृन्दावन : भक्त प्रवर का महत् ग्रन्थ

– प्रो. रामचन्द्र तिवारी

गुरुश्री वेद प्रकाश ने श्री राधा और कृष्ण की भक्ति में अपने को पूर्णतः लीन कर लिया है। लगता है उन्होंने पूरे वैष्णव साहित्य को पूरी तरह पचा लिया है, एक अध्येता के रूप में नहीं, वरन् एक सच्चे भाव-राज्य में रमण करने वाले भक्त के रूप में। वैष्णव भक्तों के अनुसार भगवान् श्याम सुन्दर सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्ण 'रसराज' और रासेश्वरी नित्य निकुञ्जेश्वरी वृषभानु नन्दिनी श्री राधा जी 'महाभाव' हैं। श्री वेद प्रकाश जी ने अपने मनोराज्य में दोनों को बसा लिया है। विशेषता यह है कि मनोराज्य की इस सीमा तक पहुँचाने की सारी मानसिक यात्रा को शब्दबद्ध करते हुए कहीं भी एक क्षण के लिए वे विचलित नहीं हुए हैं। उनकी यह आत्मसजगता सर्वथा श्लाघ्य है। वे कहते हैं –

आज साहस किया मैने डूबने का
और इस महा निमज्जन में
खत्म होते हुए भी
खत्म होने की पीड़ा जरा भी नहीं थी
इस शरीर के मरने पर चेतना के डूबने के
एहसास जैसा ही कुछ था
मगर इसमें मूर्च्छा का लेश भी नहीं था
यह तो महा जागरण का वह अनुभव था
जो अपनी विलक्षणता में अद्वितीय था
और अपनी सारवत्ता में अनुपम

यहाँ इस बात की ओर ध्यान देना होगा कि राधा-भाव को अचिन्त्य माना गया है। जिसने जिस भाव से उन्हें देखा है, उसे उसी के अनुरूप वे दिखाई पड़ी हैं। श्रीकृष्ण की राधा एक हैं, शुकदेव मुनि की राधा एक हैं, भक्तों और प्रेमियों की राधा एक हैं, कवियों की राधा एक है। अपने-अपने भाव से, अपनी-अपनी आँखों से जिन्होंने देखा, जिनको जैसा रुचा, वैसा ही उन लोगों ने कहा और इसके लिए उनका क्षेत्र उनकी सराहना करता है। लेकिन ध्यान रखना होगा कि राधा के स्वरूप में लय होने के लिए अहम् भाव का पूर्ण विसर्जन अनिवार्य है। स्वयं 'कृष्ण' और 'राधा' भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक-दूसरे के प्रेम में तल्लीन होकर आत्म-स्वरूप को भूल जाते थे। कृष्ण राधामय और राधा कृष्णमयी हो जाती थीं। यह मधुरोपासना में ही संभव है।

भक्ति के आचार्य यह मानते हैं कि 'शान्त', 'दास्य', 'सख्य', 'वात्सल्य' सबमें माधुर्य की सत्ता होती है। 'शान्त' में माधुर्य का तत्त्व बहुत कम होता है। इसकी अपेक्षा 'दास्य' में कुछ अधिक होता है। 'दास्य' की अपेक्षा सख्य में और 'सख्य' की अपेक्षा 'वात्सल्य' में अधिक होता है किन्तु इन सबकी अपेक्षा ब्रजाङ्गनाओं के माधुर्य में उत्कृष्टता है। इन ब्रजाङ्गनाओं में भी ह्लादिनी-सार महाभाव रूपा श्रीराधा का प्रेम सर्वश्रेष्ठ है। श्री राधा में सभी प्रकार के प्रेम का पूर्ण प्रकाश है।

श्री वेद प्रकाश जी ने भी भक्ति के आचार्य जीव गोस्वामी का हवाला देकर कहा है -

शान्त रस, दास्य, सख्य, वात्सल्य के उत्तरोत्तर विकास के क्रम में 'रस' का परम विकास तो मधुरोपासना में ही होता है,

शान्त रस, दास्य, वात्सल्य के उत्तरोत्तर विकास के क्रम में 'रस' का परम विकास तो मधुरोपासना में ही होता है,

गोपी भाव में,
ब्रज भाव में,
ब्रज भाव में

मधुरोपासना में सर्व विशेष सांग, शरीर सेवा का ही है शरीर की उपस्थिति ही तो इसे 'मधुर' बनाती है।

मधुराधरम् का निर्माण करती है
ठीक ही कहा आचार्य वल्लभ ने
अधीर, वदन, नयन, हास्य, हृदय
वचन, चरित, वसन
मुड़ना, चलना, टहलना
सब मधुर हैं तुम्हारे
मधुराधिपति तेरा सब मधुर है
वंशी, रेणु, हाथ, चरन
नृत्य और मैत्री और गीत
पीना खाना सोना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारे क्रियाकलाप ही मधुर हैं। जिस कृष्ण का पूरा व्यक्तित्व ही मधु हो ऐसे की उपासना से हृदय के सारे विकारों का नष्ट होना स्वाभाविक है। कहा जाता है कि जिस प्रकार 'रति' स्थायी से श्रृंगार रस की सिद्धि होती है उसी प्रकार 'मधुर' स्थायी से 'उज्ज्वल रस' की सिद्धि होती है। यह उज्ज्वलता मधुरता की ही परिणति है।

जिस मधुर-भाव की भक्ति में वेद प्रकाश जी लीन होना चाहते हैं, वस्तुतः उसका श्रीगणेश तो चैतन्य महाप्रभु ने ही कर दिया था। चैतन्य महाप्रभु के अनुसार, "संसार में उन्हीं मनुष्यों का जीवन धारण करना सार्थक कहा जा सकता है जिनके हृदय-पटल पर हर समय मुरली मनोहर मुकुन्द की मञ्जुल मूर्ति नृत्य करती हो, जिनके कर्ण रन्ध्रों में प्रतिक्षण मनोहर मुरली की मधुर तान सुनाई पड़ती रहती हो, जिसके चक्षु भगवान् की मूर्ति के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु का दर्शन ही न करना चाहते हों, जिनका मन मधुप सदा भक्त भयहारी भगवान् के चरण-कमलों का मधुरातिमधुर मकरन्द पान करता रहता हो, ऐसे शुभ दर्शन भक्त स्वयं तो कृतकृत्य होते ही हैं वे सम्पूर्ण संसार को भी अपनी पद-रज से पावन बना देते हैं। उनकी वाणी में उन्माद होता है, दृष्टि में जीवों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है, उनके सभी कार्य अलौकिक होते हैं, उनके सम्पूर्ण कार्य लोक-वाह्य और संसार के कल्याण करने वाले ही होते हैं। कहना न होगा कि भक्त के हृदय में विद्यमान मुरली मनोहर मुकुन्द की मंजुल मूर्ति आराधक के हृदय में 'मधुर भाव' के अतिरिक्त और किस भाव के अधिष्ठान के रूप में दृष्टिगत होगी ?

श्री वेद प्रकाश जी ने उसे मधुर भाव के आलम्बन के रूप में देखा और अनुभव किया तो वह उन्हें उसी भाव के आलम्बन स्वरूप दिखी। वस्तुतः द्रष्टा का मनोराज्य ही अनुभूति का मूल अधि ठान है। वास्तविकता तो यह है कि भगवान् श्री माधव श्री राधा के साथ और श्री राधा श्री माधव के साथ सुशोभित रहती हैं। मनुष्यों में जो कोई इनमें अन्तर देखता है, वह संसार से मुक्त नहीं होता -

"राधया माधवो देवो माधवेन च राधिका! विभ्राजते योऽनयोर्भेदं पश्यति स मुक्तः स्यान्न संसृतेः।"

यह सोचने की बात है कि आखिर क्या कारण था कि राधा-कृष्ण भक्ति की पावन प्रेमगर्भित धारा भारत की सभी भाषाओं में प्रवाहित है। अन्तर तत्त्व रूप में नहीं, स्थानीय लोक प्रचलित मान्यताओं के कारण आयातित प्रतीत होता है। इस प्रेम धारा को सर्वाधिक लोकप्रियता वंगभूमि में प्राप्त हुई है। यह कहा जा चुका है कि बंगाल में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस धारा के केन्द्रीय महापुरुष चैतन्यदेव (1486-1533 ई.) हैं किन्तु इनसे पूर्व सेनवंशी राजाओं (1095-1245 ई.) के आश्रम में जयदेव अपना 'गीत गोविन्द' लिख चुके थे। इनसे भी पहले श्रीधर दास 'सदुक्तिकर्णामृत' में राधाकृष्ण लीला का वर्णन कर चुके थे। इससे प्रमाणित होता है कि बारहवीं शदी में ही बंगाल में कृष्णभक्ति का उद्भव हो चुका था। यह होने पर भी चैतन्य मत के परवर्ती आचार्यों - सनातन गोस्वामी (1545-1601 ई.) और रूप गोस्वामी (1546-160) ने इसे विशेष महत्व देकर श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृन्दावन में लोकप्रिय बनाया। रूप गोस्वामी ने ही इसे शास्त्रीय मर्यादा प्रदान की। 'हरिभक्ति रसामृत सिंधु' और 'उज्जवल नील मणि'जैसे भक्ति-रस के ख्यातिलब्ध ग्रंथों की रचना रूप गोस्वामी ने ही की। देखा जाय तो चैतन्य मत ने ही राधा-कृष्ण भक्ति के आधार तत्त्वों को प्रतिष्ठित और निरूपित किया। राधा की आह्लादिनी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठा, गोपियों के विविध-भेद एवं उनकी तात्विक व्याख्या, राधा की अष्ट सखियों एवं मंजरियों (सेविकाओं) की कल्पना,परकीया प्रेम का महत्व, रागभक्ति के 'रागात्मिका' और रागनुगा भेद, भक्ति के मूल रस के रूप में उज्ज्वल रस की परिकल्पना तथा भक्ति-साधना को एक व्यवस्थित दार्शनिक आधार प्रदान करना चैतन्य मत की निजी विशेषताएं हैं।

आगे चलकर अनेक धर्म साधनाओं को अपने भीतर पचाते हुए बंगाल में 'वैष्णव सहजिया' मत प्रचलित हुआ। इसके अनुसार राधा कृष्ण की नैसर्गिक शक्ति है। राधा उनमें स्वभावतः निहित हैं। उसके बिना वे रह नहीं सकते। प्रत्येक साधक अपने भीतर राधा-कृष्ण की अनुभूति कर सकता है। साधक का भौतिक अस्तित्व उसका 'रूप' है और उसके तत्त्व रूप में विद्यमान राधा और कृष्ण की सत्ता उसका 'स्वरूप' है। 'रूप' में 'स्वरूप' की आन्तरिक सत्ता ही जीवन का लक्ष्य है। चैतन्य मत पर इस साधना का प्रभाव स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है, क्योंकि चैतन्य मत में भी प्रत्येक मनुष्य के भीतर राधा-कृष्ण को विराजमान माना गया है।

'संस्कृत' के 'गीत गोविन्द' की परम्परा में हिन्दी में 'विद्यापति' हुए उन्होंने राधा और कृष्ण की अद्वैतता का चित्रण करते हुए कहा -

अनुखन माधव-माधव सुमिरत
सुन्दरि (राधा) भेल मधाई।
ओ निज भाव सुभावहि विसरल
अपने गुन लुवुधाई।

विद्यापति के बाद 'अष्ट छाप' के कवियों का नम्बर आता है। वस्तुतः ये कवि नहीं, भक्त थे। इनके सम्बन्ध में डॉ. दीन दयालु गुप्त कहते हैं - "अष्टछाप भक्तों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रचनाओं को देखने से पता चलता है कि उनकी रागानुगा भक्ति प्रेम के विविध सम्बन्धों में प्रकट हुई है, परन्तु इन सम्बन्धों में उनकी मानसिक वृत्ति मधुर प्रेम की भक्ति में अधिक रमी है और मधुर-प्रेम की जितनी अवस्थायें होती हैं, उन सबका व्यक्तीकरण उन्होंने किया है।"

'अष्टछाप' के भक्त-कवियों की मानसिक वृत्ति का मधुर प्रेम में रमना तो स्वाभाविक ही है, आश्चर्य तो तब होता है, जब हम रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों को भी राधा और कृष्ण की तात्त्विक एकता का निदर्शन करते देखते हैं। 'देव' कवि का एक छंद है -

राधिका कान्ह को ध्यान धरै, तब कान्ह है राधिका के गुन गावै।
त्यों अँसुवा बरसैं बरसाने को पाती लिखै लिखि राधे को ध्यावै।
राधे है जाय घरीक में 'देव' सुप्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आपुने आपु ही में उरझै, सुरझै, विरुझै समुझै समुझावै।

'राधा' और 'कृष्ण की' तात्त्विक एकता का यह निदर्शन भक्त-प्रवर श्री वेद प्रकाश जी की मनोभूमि को सामने रखकर देखा और दिखाया गया है, अब दोशब्द उनकी तात्त्विक उपलब्धियों के विषय में कहना आवश्यक है।

श्री वेद प्रकाश जी ने लगभग 300 पृष्ठों के इस महत् ग्रंथ में अपनी मानसिक सत्ता को निरन्तर उच्चतर मूल्यों की ओर अग्रसर करने का प्रयत्न किया है। ये मूल्य नैतिकता के नहीं, भावात्मक अद्वैतता से सम्बद्ध हैं। उन्होंने राधा-माधव की तात्त्विक एकता का भावन किया है। ऐसा माना जाता है कि श्रीकृष्ण के प्रति जो परम उच्च निष्काम 'रति' होती है, उसे 'प्रेम' कहते हैं। यही रति जब बढ़ते-बढ़ते क्रमशः स्नेह, मान, प्रणय, राग और अनुराग के रूप में परिणत होकर 'भाव' रूपा होती है, तब वहबड़ी विलक्षण होती है यही 'भाव' जब 'महाभाव' रूप को प्राप्त होता है, तब उसे प्रेम की अत्युच्च स्थिति कहते हैं। श्री राधिका जी इसी 'महाभाव' का ही मूर्तिमान दिव्य विग्रह हैं। इन 'महभाव' रूपा श्री राधिका जी की जो महाभाग्यवती सखियाँ रसराज श्रीकृष्ण के साथ उनके मिलने की साधना में लगी रहती हैं, वे ही गोपी जन के नाम से प्रख्यात हैं इनका प्रेम ऐसा दिव्य और विलक्षण है कि उसका तनिक-सा स्मरण मात्र भी साधक को इस माया के क्षेत्र से बाहर अति दूर उस दिव्य प्रेम साम्राज्य में ले जाता है, जहाँ का सभी कुछ अनोखा है, जहाँ कभी कोई वस्तु पुरानी होती ही नहीं।

हमारे इस भौतिक जगत् में क्रमशःसब कुछ पुराना पड़ता जाता है। प्रेम के प्रथम प्रकाश में प्रेमास्पद जितना सुन्दर और मधुर प्रतीत होता है, कुछ दिनों के बाद उसके उस सौन्दर्य और माधुर्य की वैसी अनुभूति नहीं होती। साधक का लक्ष्य रसराज श्रीकृष्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और गोपीजन को नित्य लीला-भूमि में प्रवेश पाना है। इसलिए वह भौतिक जगत् की सीमाओ का अतिक्रमण करता जाता है। मैं अनुभव करता हूँ कि श्री वेद प्रकाश जी ने भौतिक जगत् की सीमाओं का अतिक्रमण करके श्रीकृष्ण और राधा की नित्य लीला-भूमि में प्रवेश पा लिया है।

अपनी इस मानसिक यात्रा में उन्होंने बहुत कुछ पढ़ा है। बहुत कुछ सोचा-समझा है। बहुत कुछ पचाया है किन्तु एक क्षण के लिए वे रुके नहीं हैं। और अब उनका मन श्रीकृष्ण और राधा की लीला-भूमि में रम गया है।

O

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन वृन्दावन बसो सांवरे नित राधा के संग

– डॉ. अरुणेश नीरन

'वृन्दावन के नाथ साँवरे' काव्यग्रंथ नहीं है। यह भक्ति का ऐसा चिन्मय प्रवाह है जो सावधि काल का अतिक्रमण करते हुए, कभी नहीं रुकता, भक्त के हृदय में जमुन-जल बनकर निरन्तर बहता रहता है। जल बहता रहता है, तटबंध टूटते रहते हैं, मार्ग भी परिवर्तित होते रहते हैं लेकिन प्रवाह कभी नहीं रुकता, कभी नहीं बदलता। वह ऋत और अमृत की धारा बनकर सत्य की सतत सत्ता के रूप में निरन्तर प्रवाहित होता रहता है। राधा ऋत हैं, श्रीकृष्ण अमृत। व्यास, सूर, रसखान यमुना के घाट हैं जिनसे होकर यह धारा वहती है। वही हनुमान प्रसाद पोद्दार और गुरुश्री वेदप्रकाश के भीतर भी बह रही है – अविकल, अविच्छिन्न, अनाविल। इसका कोई प्रस्थान-विन्दु नहीं होता। यह कहीं से भी प्रारम्भ नहीं होती –

इतना भर होगा कि मेरे दृष्टिपथ में आ जायेगी
शायद अपने में शामिल करने के लिए।

लेकिन इसका सहभागी वही हो सकता है जो मीरा की तरह घायल हो, जिसने मीरा की तरह हृदयमें आग संजोई हो, अपने मन में जौहर की चिता धधकायी हो, पाकर के खोया हो। मिलन का एक ही उपाय है – मैं चन्दन की चिता पर बैठ, प्रिय स्वयं अपने हाथ से आग लगाये मैं जल जल कर जल में विलीन हो जाऊँ। कृष्ण के साथ रहना भी कठिन है और उनसे एकाकार होना भी कठिन है। कृष्ण का जुड़ाव केवल प्रेम से है, प्रेम करने वाले से नहीं। ऐसे निर्मम, ममता को छिन्न-भिन्न करने वाले प्रेमी से जुड़ाव का अर्थ ही है अपने से विछोह और इस विछोह के बाद भी एक आकुल प्रतीक्षा। उस आकुल प्रतीक्षा में भी एक सजल आशा, कि मैने वंशी की धुन सुनी, वह आएँ न आएँ – मैंने वह धुन सुनी – यह अनुभव अपने आपमें विरह-व्यथा की पूर्णतम उपलब्धि है।

श्री वेद प्रकाश जी ने इस व्यथा का अनुभव किया है, अपने आपको जलाकर वंशी का स्वर्गीय संगीत सुना है, अपने को खोकर पाया है। विसर्जन का सृजन है ये कविताएँ। ध्वंस का निर्माण हैं ये। शून्य का संगीत बज रहा है इनमें।

जीवन काल की कला है। काल परम तत्त्व की क्रिया शक्ति है। वह अपने प्रभाव में खींचकर ले जाता है तो सारे सूत्र टूट जाते हैं, सारी क्रियाएं विलीन हो जाती हैं, सारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृतियाँ मिट जाती हैं। वह अपने में सबको समेट लेता है और स्वयं किसी में नहीं सिमटता। ऋषियों ने ऋग्वेद के एक सूत्र में काल-चक्र का वर्णन किया है -

त्रिनामि चक्रमजरमनर्व यत्रेमा विश्वः भुवनानि तस्थुः।

यह सवंत्सर चक्र तीन नाभियों वाला है - शीत, वर्षा और ग्रीष्म। कभी पुराना नहीं होता, यह कभी पीछे नहीं मुड़ता, इसी में सभी विश्व अधिष्ठित हैं। इसी के साथ समस्त विश्व घूमता है। अथर्ववेद में ऋषि कहते हैं - काल रूपी घोड़ा दौड़ रहा है। सूर्य की सतरंगी किरणें इस घोड़े की लगाम बनी हुई है। यह घोड़ा हजारों ओर देखता है, कभी नहीं थकता, बड़ा वीर्यशाली है। जो ज्ञानी हैं वही इस पर सवार हो सकते हैं। यह अश्व जिस रथ से जुड़ा हुआ है उसके पहियों में समस्त लोक समाहित है। इस काल के सात चक्र हैं - बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। ये ऋतुचक्र हैं और इनको समेटने वाला वर्षचक्र। इसकी धुरी अमृत है इसलिए यह कभी घिसती नहीं। यह विश्व को आकृति देता है। प्राणियों में जीवन बनकर संचरित होता है। यह पूर्ण कुंभ है। इसी में समस्त सत्ता आपूरित है। यह सबको व्यक्त करता है और स्वयं अव्यक्त रहता है।

काल भगवान की सहकारिणी शक्ति है। श्रीमद्भागवत में काल को भगवान की अव्यक्त मूर्ति कहा गया है -

विश्वं वै ब्रह्म तन्मात्रं संस्थिनं विष्णुमायाय।
ईश्वरेण परिच्छिन्नं कालेनाव्यक्त मूर्तिना।।

हम मानते हैं कि एक वलय में सब कुछ घूम रहा है, इसीलिए अखण्ड काल के उपासक-जीवन के उपासक 'अस्ति' (है) या 'आसीत्' (था) के चक्कर में नहीं पड़ते। वे देखते हैं 'भवति' (हो रहा है) क्योंकि 'अमूत्' (हुआ) और 'भविष्यति' (होकर रहेगा) होना कभी खण्डित नहीं होगा, स्थिर सत्ता भले ही खण्डित हो जाये। जीवन जानने वाले लोग वृन्दावन और चित्रकूट में राधाकृष्ण और सीताराम के नित्य विचरण की कामना करते हैं। इसीलिए भक्त कवि जब लीला का वर्णन करते हैं तो साक्षीरूप में करते हैं। ऐसा करते हैं जैसे घटना घटी नहीं, उनके सामने घट रही है। खण्डित काल में घटी किसी वस्तु के लिए अब कोई स्थान नहीं -

चलत चितवत दिवस जागत सपन सोवत राति।
हृदय में वह स्याम-मूरति छन न इत-उत जाति।। (सूर)

और क्षण भर के लिए वह मूर्ति भली चली भी जाय, तो -

दरस आस पियास तुलसीदास चाहत मदन। (तुलसी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुश्री वेदप्रकाश भी अपने मन-वृन्दावन में अहर्निश वही छवि देखते हैं जो सूर और मीरा ने देखी थी। वह काल के रथ पर ज्ञानी के रूप में आसीन होकर देखते हैं-

मुझे अचूक पता है
यह सब खेल भर है
न तो यह सच है, न ही जादू
अभी समय के ताप से भाप बन
पानी की तरह सब उड़ जायेगा ......

जीवन एक दिन एक फेरा है और मृत्यु नये फेरे का आरम्भ है। निराला कहते हैं - 'पुनः सवेरा, एक वार फेरा है जी का'। जब तक काल का प्रवाह समरस रूप से बाहर भीतर एक साथ नहीं वहता तब तक काल सर्प बनकर डंसने के लिए तैयार रहता है। जब वह प्राण और चेतना बन जाता है, एक साथ अग्नि और सोम बन जाता है, श्वास और नाद बन जाता है-तभी मन की वीणा बजती है, और काल के सरोवर में जीवन का कमल खिलता है। तब ज्ञान, कर्म, उपासना-सबके सब 'अहमति के मूल' बन जाते हैं। मात्र एक प्रेम है जिसमें अहंकार का प्रवेश नहीं हो पाता। रसखान कहते हैं -

दो मन इक होते सुन्यौ पै वह प्रेम न आहि।
होइ जबै द्वै तनहु एक सोइ प्रेम कहाहि।।

राग, द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, मद, मोह सब श्रीकृष्ण हो जाते हैं, क्योंकि इन सबके आलम्बन कृष्ण बन जाते हैं। श्रीकृष्ण के आलम्बन बनने परकोई दूसरा आलम्बन रह ही नहीं जाता - आश्रय ही आलम्बन बन जाता है। कृष्ण को देखना कृष्ण होना है। श्रीकृष्ण को छूना श्रीकृष्ण होना है। कृष्ण की बाँसुरी को सुनना कृष्ण होना है। जहाँ कहीं भेद भी है तो अपना पैदा किया हुआ नहीं है। वह भी विराट की माया है कि वह अपनी प्रतीति हजार रूपों में कराना चाहता है और प्रत्येक रूप को अपूर्ण दिखाना चाहता है। वेदप्रकाशजी ने अपने भीतर सृष्टि का कोलाहल देखा है और पाया है कि सब उन्हीं की अनुगूँज है -

उर के भीतर बाहर छाये
सौरभ में पवमान तुम्ही हो
साँसों के सुररथ पर बैठे
गति मेरे गतिमान तुम्हीं हो
मेरे हाथ आँख मन मेरे
किया तुम्ही क्रियमान तुम्हीं हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेवक सेव्य विलय मधुरस में
मधुर प्रीति प्रतिमान तुम्ही हो
वृन्दावन प्रभु उर आ बैठे
छवि मेरे छविमान तुम्ही हो
प्रीतम मेरे मान तुम्ही हो
दिन मेरे दिनमान तुम्ही हो।

कृष्ण का अर्थ है अंधकार। अंधकार होगा तभी प्रकाश की कल्पना होगी। वे राधा से जुड़कर पूर्ण होते हैं। वे विस्तार में अनन्त हैं। उनमें घनत्व हो ही नहीं सकता। उनमें फैलाव है। अन्तहीन फैलाव। वे स्वयं कहते हैं कि यह जगत द्वन्द्व का समन्वय है। कभी ऐसा नहीं हुआ कि हिंसा न हो, कभी ऐसा नहीं हुआ कि अहिंसा न हो। सारी अहिंसा हिंसा पर ही खड़ी होती है। सारे प्रकाश का कारण है अंधेरा। सारा शुभ अशुभ की पीठ पर ही जन्मता और जीता है। कृष्ण कहते हैं कि दोनों को स्वीकार करो। वह स्वयं चुनाव रहित हैं इसलिए समग्र हैं, पूर्ण हैं। जो नहीं चुनता वही पूरा हो सकता है। राधा प्रकाश की धारा है। कृष्ण अंधकार हैं इसलिए वे राधा से मिलकर ही पूरे होते हैं। दोनों का वर्तुल बनता है। राधाकृष्ण के रूप में तभी वे पूर्ण होते हैं। रास रस की बुद्धि है। यह व्यष्टि और समष्टि का मिलन है। यह मिलन तब तक व्यर्थ है जब तक इसमें राधा नहीं है।

कृष्ण मथुरा छोड़ द्वारिका चले जाते हैं। गोपियाँ सुनकर कहती हैं – लो, व्रजभूमि भी अब छोड़ दी। राधा, गोकुल, वृन्दावन और बरसाने तो पहले ही छूट गये थे। हमारा प्रेम उनसे संभालता ही नहीं था। कहाँ यमुना का मीठा जल, कहाँ समुद्र का खारा पानी ? सहज प्रेम का माधुर्य उनसे नहीं सँभला, अब ऐश्वर्य का खारापन चख रहे हैं ? सूर्यग्रहण आता है। उसी कुरुक्षेत्र में जहाँ बाद में वे गीता का उपदेश सुनाते है, अपने परिजनों के साथ स्नान करने आते हैं। स्नान के लिए वहीं पूरा व्रज भी उमड़ आता है। सूर्यग्रहण अमावस्या को होता है। अमावस्या का अर्थ है चन्द्रमा में समा जाना, सोमरस का बूँद-बूँद अग्नि में निचुड़ जाना। रुक्मिणी को उत्कंठा होती है कि देखें मेरे पति को विह्‌ल करने वाली बालापन की जोड़ी कैसी है। वे कृष्ण से पूछती हैं –

हरि सों बूझत रुकमिनि इनमें को वृषभानु किसोरी।
बारक हमें दिखावहु अपने बालापन की जोरी।।

कृष्ण के नेत्र भर जाते हैं। दूसरी बार पूछने पर बताते हैं –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनसा सुमिरन रूप-यान उर दृष्टि न इत-उत मोरी।
वह लख युवति-वृन्द में ठाढ़ी, नील बसन तन गोरी।।

वही राधा है जो एकटक मेरी ओर देख रही है। उसके हृदय में मेरा रूप है। नयनों में मेरा रूप है। रुक्मिणी राधा को बुला लाती हैं। अपने शिविर में। वहाँ राधा-कृष्ण का मिलन होता है। राधा राधा नहीं रहती, माधव माधव नहीं रहते। माधव राधा बन जाते हैं, राधा माधव हो जाती हैं। यही भक्ति का मार्ग है।

राधा और कृष्ण पूरा वर्तुल है। कृष्ण मेघ हैं, राधा वर्षा हैं। कृष्ण का सारा व्यक्तित्व खड़ा है राधा के धरातल पर। कृष्ण अगर पुष्प हैं तो राधा गंध हैं। कृष्ण राधा में ही खिलते हैं। वह युगल पूरा है। इसलिए कृष्ण अधूरा नाम है। राधाकृष्ण पूरा नाम है। वेद प्रकाशजी ने राधाकृष्ण स्वरूप के रहस्य को अपनी चेतना के पटल पर देखा और उसका अनुभव किया है। यह अनुभव केवल ज्ञानी ही प्राप्त कर सकता है -

नाम बड़ा पावन राधा है
कान्हा का जीवन राधा है
नैन नेह के बादल छाये
साल.साल सावन राधा है
पीताम्बर का छोर धरे है
पोर पोर क्रन्दन राधा है

राधा कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति हैं, वे नित्य नये यौवन का माधुर्य हैं -

रोम रोम हरसे मधुरस का
नित्य नया यौवन राधा है
प्रीतम के अधरों की मुरली
मुरली का वादन राधा है
छैल छबीले राग रसीले
प्रिय का अपनापन राधा है
बेआपे मोहन की राधा
राधा का मोहन राधा है

कृष्ण के अनुक रूप हैं - योगी, वादक, नर्तक, योद्धा, प्रेमी, राजनीतिज्ञ - वैसे ही राधा के भी अनेक रूप हैं - काम राधा, प्रेम राधा, नित्य राधा। कृष्ण पुरुष है, राधा प्रकृति हैं। चित् शक्ति हैं। आर्या शक्ति है। वे त्रिगुणमयी प्रकृति हैं। ये सारे रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समा जाते हैं। राधाकृष्ण में। चित्तशक्ति राधा और पूर्ण ब्रह्म कृष्ण वैसे ही हैं जैसे जल और हिम शक्ति। वेदप्रकाश जी ने इस वर्तुल को देखा है अपनी चेतना के आकाश में। दृश्य-दृष्टा का भेद मिट गया है -

सांवर तन कजरारी आँखें
कुंद कली कचनारी आँखें
श्याम चन्द्र की खुली-खुली सी
खिली खिली उजियारी आँखें
मदिर परागी कमल सरोवर
या महुआ की बारी आँखें
जागी जागी सोयी सोयी
राग भरी रतनारी आँखें

कृष्ण की आँखें ? जिनमें सृष्टि के समस्त वैभव का बिम्ब उतर रहा है। वे हृदय भी हैं, दर्पण भी। राधा, गोपिकाएँ - सबकी आँखें कृष्ण की आँखों में समा गयी हैं। राधा रस से भर आँखों के अपरूप सौन्दर्य को निहारना भी कठिन है - 'आँख भर देखा कहाँ आँख भर आयी।' वह आँख नहीं, अमृत कलश है जिनमें जीवन-रस-राधा-रस छलक रहा है -

सखियों की अँखियों में छायीं
गहबर वन छतनारी आँखें
अमृत कलश उतारी है या
राधारस मतवारी आँखें

माधव की आँखों में राधा उतर आयी हैं या राधा के नेत्रों में माधव ? जब 'दोउ मिल एक बरन भये' तो निर्णय की संभावना कहाँ है -

राधा आँखों आन चढ़ी या
अपनी आँख उतारी आँखें
बाँके काँधा की राधा या
राधा की बनवारी आँखें
उझक उफन मन ही चढ़ आया
भर आयी बढ़ियारी आँखें

महारास की रचना भक्ति की चाँदनी की वर्षा के बीच यमुना तट की खुली वालुका राशि पर की जाती है। यमुना कृष्ण की करुणा हैं, चाँदनी श्रीराधा का ऐश्वर्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है और बालुका-राशि संसार का रंगमंच। इस रास के लिए कृष्ण की वंशी बजती है तो जो बचा-खुचा स्व है, निजता है- नष्ट हो जाती है। कुद फिर भी बची रहती हैं तो कृष्ण उसे नष्ट करने के लिए अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। यहाँ तक कि राधा को भी कुछ दूर ले जाकर छोड़ आते हैं और उन्हें विरह की पहली दीक्षा देते हैं। विरह इतना दुर्दान्त है कि उसमें काम भी भस्म हो जाता है, केवल प्रेम बचता है। अब श्रीकृष्ण से मिलने की उतनी इच्छा नहीं है जितनी उनके प्यार से जुड़ने की। श्रीकृष्ण को पाना अब गौण हो गया है, मुख्य है कृष्ण को अपने भतर समा कर अनुभव करना कि कृष्ण भीतर समा ही नहीं पा रहे हैं। वियोग के लिए चित्तवृत्ति का निरोध चाहिए, हमारी तो चित्तवृत्ति भी श्याम हो गयी है। श्याम की इस प्रीति का निरोध कैसे हो-

ऊधौ! क्यों विसरत यह नेह।
हमरे हृदय आनि नन्दनन्दन रचि-रचि कीन्हे गेह।।

विरह की अग्नि में जल रही वेदप्रकाश जी की यह काव्यधारा ब्रह्मानन्द का अनुभव करती है। इस अनुभव के होते ही जगत तिरोहित हो जाता है। अब केवल आनन्द है और कुछ भी शेष नहीं। ऐसा है यह रस-तत्त्व, जो इन्द्रिय-बोध से जुड़ा है फिर भी इन्द्रियातीत है। शब्द के माध्यम से प्रकट हो रहा है फिर भी शब्दातीत है। अनुभव के द्वारा बोल रहा है फिर भी अनुभवातीत है। यह सच्चिदानन्द की सीमा पर रुकता है और समाधि में समा जाता है।

वेद प्रकाश जी कवि नहीं है। भक्त कवि होता भी नहीं। उसकी अनुभूति में उतरी भक्तिरस की धारा कविता के माध्यम से प्रकट होती है। कबीर-सूर-तुलसी-मीरा-रैदास-रसखान में भी यह काव्य के रूप में प्रकट हुई थी। वेदप्रकाशजी में भी वह श्रीकृष्ण के चैतन्य और राधा के रस के रूप में व्यक्त हुई है। उस युगल-छवि को सौन्दर्य सागर में डूबने और अभिभूत होने का उन्होंने मुझे जो अवसर दिया है उससे मैं धन्यता का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि काव्य की यह अमृतधारा लोककण्ठ में उतरेगी और उसके रस में सभी सराबोर होंगे। एक लहर भी आपको छू ले तो आप भी धन्य हो जायेंगे।

(हिन्दी के प्रख्यात समालोचक और चिंतक)

○

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्राब्दि विश्व उद्धार रास संकीर्तन महायज्ञ

श्री मुरली मनोहर रास मन्दिर, प्रेम वृन्दावन

सलेमपुर-देवरिया, उ.प्र., भारत

गुरुश्री वेदप्रकाश जी द्वारा विरचित अन्य ग्रन्थरत्न :

- प्रज्ञान संहिता
- भागवत गीत
- श्री राधाकृष्ण स्तोत्र
- पूर्णकामयोग (कामनासिद्धि और ध्यान के रहस्य)
- वृन्दावन के नाथ साँवरे
- श्री प्रेम वृन्दावन
- मधुवन महके
- प्रीति गीत
- ब्रज रस
- श्री श्री भक्ति सूत्रा
- गोविन्द गीत
- रस निर्झर
- यमुना की नाव
- हरि हरिनाम के बस में
- ब्रजभाव का प्रेम
- भगवान श्रीकृष्ण का माधुर्य
- प्रज्ञान संहिता और प्रस्फोटवाद
- प्रेम जीतता है
- सर्वसिद्धि साधना
- मधु राधामाधव
- सबसे बड़ा झूठ है आपका होना
- सबसे सगे भगवान
- कलयुग केवल नाम अधारा
- पर्यावरण और आसन्न महाविनाश
- चाकरी तेरी नाथ भली
- साँवर तन कजरारे नैन
- भगवान कैसे बनें
- प्रेमेश्वर प्रभु
- हरे कृष्ण की हाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।।

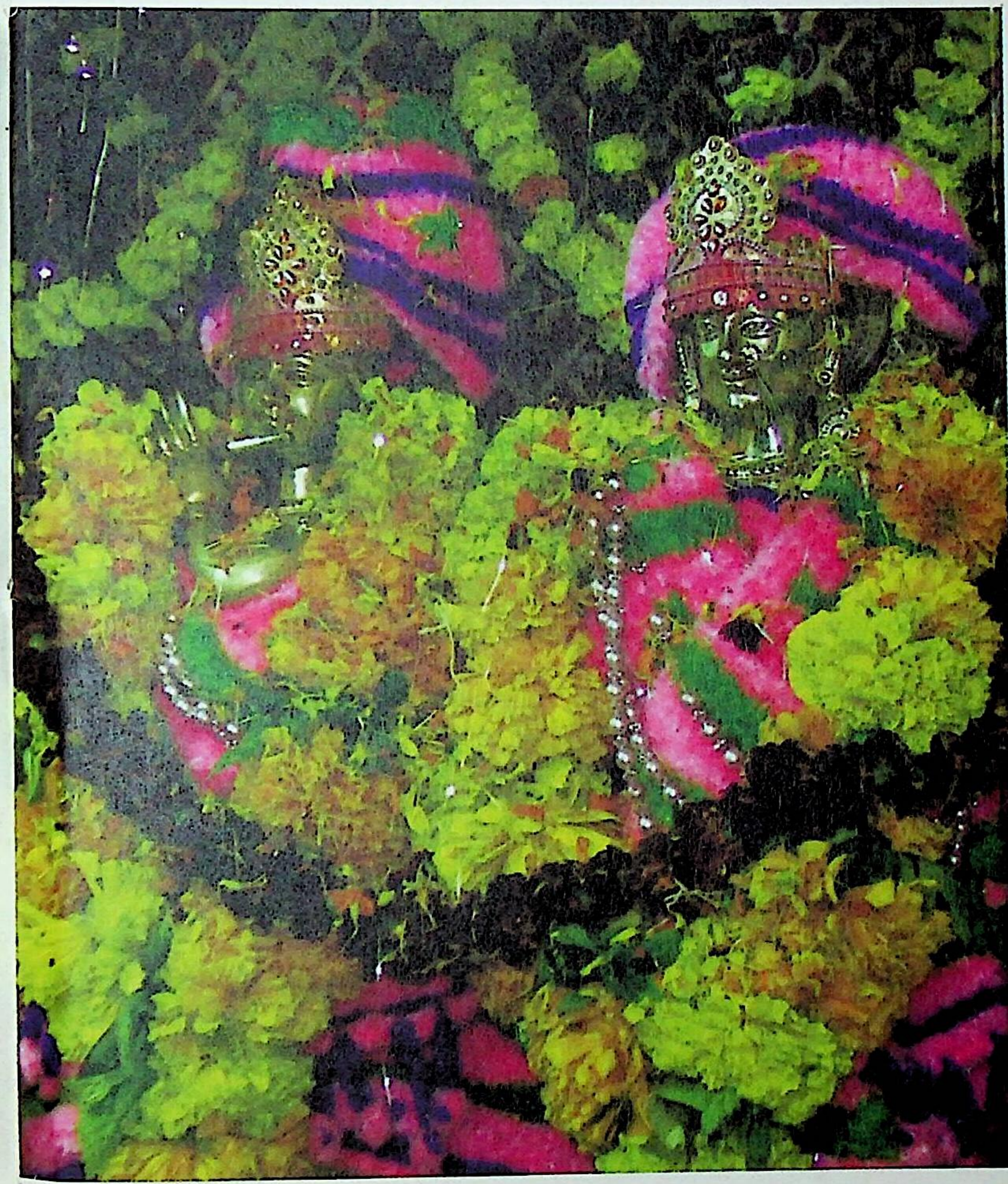

श्री मुरली मनोहर रास मन्दिर

प्रेम वृन्दावन, सलेमपुर, देवरिया,
उ.प्र., भारत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2
Ra(Gun) Math. Shivala. Varanasi Collection. Equipment- Heritage Foundation, Jalgaon.